

रत्नममष्टीवज्रसत्त्वाय ॥ सिनाद्रुमिविधिमाह ॥ ॥ क्रापांथायनायायकं ० ॥ ऊरुं कुरु
 इकलक्षणायाकलक्षणासम्बन्धनागवत्तल्लिरुजपाक १ कला ॥ ॥ मध्वकाथः अकि
 मूलपात्रमात्रा ॥ १ ॥ खड्गकन ॥ नकाथः चलापात्रनकाः नखाः मूनकिं ॥ २ ॥ ऊजः
 कन ॥ जनाः कक्षनाः कसपा
 कसमिद्रुद्रसम्बन्धकिं ॥ ४
 ॥ ॥ थकस्तपनायासां सूर्याद्यदवगुप्तमात्रायादाद्यपूजाफलजप ॥ गुलमधुलपच
 ॥ ॥ धीशिशुक्रयपात्रपूजायायकसालिआदिपूजा ॥ दवपूजा ॥ लपूजा ॥ महानिरयः आ
 दिकाय ॥ गालकायः मधुलथिल ॥ स्नानकान ॥ रुमि ॥ कि ॥ गवलवियक ॥ नदिनमस्तल ॥ नागसा

ला. विष्णुसना नूरु. मधुल. विमर्जन. लखवलि. ॐ नाययुजा कृ य॥ प्रिसमाधि॥ गीत॥ अ
 नील॥ कृष्ण. सद्य. मक. नाय. मकूटयुजा॥ गीत॥ अनूरुन॥ थनयकृ या य॥ गीत॥ प्रि निलायन
 ॥ मामकिपूजा॥ गीत॥ नक वरु॥ देवस्क धूप. साजा वरु॥ गीत॥ नमः ॥ देवता विस्मयनगी
 त॥ थन. आरुकि॥ गीत॥ क
 नमधु॥ ॥ थनवीरु॥ लिखवजानन॥ दिगवलि. मरुवलि. विषय॥ गीत॥ पव
 ननलखस्य रुयक॥ उपाध्याया कृष्णन. चारुयल वा
 स्य. कि कृ १ कस्य. वेरु॥ नन कय॥ थनखान रुषले कस्य॥ रावना॥ ॥ अंखरावधुः
 द्यासर्वधर्मा धीखरावधु दारु॥ अं धूना नाहान वज्रखरावधु नमः ॥ निःखराः
 वंयनम. कलखरा वं. अमक स्यापयमूलं कथं व क्षि नशि. लीनं चि कय क॥ अं धूना नाकन

28
1

स्मरिर्नवाधिविचितात्मकस्वरूपं ज्ञानं नस्मि यद्विर्नविहाय ॥ अ. पा. धू. नी ॥ ला हा मि नः
क्रा ॥ ही ख. य. च. ग. र्वा. न हा य. र्प चा म क. लान. र्प च ग. च. य. च. न त. म. रु. स. क. य. दि स्मि मा रु नि
न. अं ऊ ल ड य क म न ॥ ॥ अ. लान य ट ली व त. वा य नि क कि नै स वा स ला का वे य ना ऊ
न. य था ला क म कि मि ले ॥ ॥ अं च क्र २ स म न च क्र वि ध्व ध न स्वा हा ॥ ॥ थ न झ रू
अ इ आ ल न अ ध य क न य ॥ म न ॥ अं च क्र व न्ध न. मा न य २ रू ॥ ॥ य च सा लि न क ॥
बू द न नो त्रि क वा नि. स मा कि क मा द रु. स म य स न क. सा सि धि ॥ यि व व जा म गा द क ००
रू ॥ ॥ सि धः अ इ आ ल. क म न स य का. य च स य का रु. अ यि न. स्वा न मा ला. दा हा स्वा न हा
अ क पा ल चा स न य ॥ र्प चा क श या ला ला स य क ॥ ॥ क र्त्त हा स न क यि य. न ना यि व क र्वा ॥

मी.सि.

थनपाउ श्री लसंक ॥ अरि खकं महा वज्रं धे धाकु कनमरु कंदं दामि सर्ववृक्षानां क्षिगुक्कल
यसंरु वं ॥ पाउ या थ नानक ॥ मजी कथं पूजा ॥ थन वजा रिषक विय ॥ ॥ अनादिनीध
नसत्त्व वज्र सत्त्व महा वज्र समन रुद्र सर्वासा वज्र ग र्हाय कि वकि ॥ ॥ दध्म रिषक विय
॥ गृही ना सि मया रुग वन मयि सनिदि ना रुव ॥ ॥ गुक्क रिषक चक्र वं व
र्य सत्त्व कंद त्वा ना थ वदस्व भव कंद व नथा कर्त्तु आचार्य पत्रि क्रम च ॥ समय सः
व वृक्षानां समवर्गु क्षमरु म आचार्य सा म्पद ना थ सर्व सत्त्वार्थ का न क्षम ॥ अहा सख मिः
कि पा ० य ॥ ॥ थन हा ना द्रय क ॥ सुला पा कन अधिष्ठान या य ॥ ॥ पूष्य न्या हा ॥
पं लां घं रु ॥ थन ना य अ क क जा दं वज्र न क्षि न स धि सं जा य ॥ ॥ म क ॥ अं अ ल य चाः

२५

२

धुलयः असुन विन स्रं कों कों ॥ १०८ ॥ सहं लय ॥ य धर्मा ॥ ॥ सुनि ॥ मृत् ज न्न ज नाः
न न के स क ना दि रु या न का ४ ॥ ॥ स्रं स्रं स्रं नाथ स्रं स्रं स्रं नाथ ॥ ॥ यं लो द्यं सु न ॥
थ न स्रं ना य अ क क का रं जा य ॥ ॥ स्रं ॥ अं कं स्रं धा न य न न रं ॥ धा न ॥ य रं स्रं स्रं ॥ ॥
अं नं नं नं अ न य अं कों कों कों
स्रं ना क स्रं स्रं क न ॥ थ ॥ ॥ फ रं स्रं स्रं ॥ थ स्रं न स्रं दू स्रं न न क क ॥ ॥ अं अं कः
थ न क जा मा न न क रं ल क न क ॥ अं अं ४ स्रं द न ना अ धि कि स्रं स्रं स्रं ॥ दं ४ द क स्रं स्रं य क ॥
॥ थ न रं च धा ना हा य क या क मा ना रं न कि रं ४ वृ सि क स्रं य क अं क ल न नि य ॥ ना ल स्रं
य क ॥ था न २ स्रं स्रं सि चा रं अं रं ख दि ला या अं कं ० न न कि य नि स्रं न ॥ या गि नी रू प य न्या स्रं ॥

धूपमा माशानि स्यात्तु क्तायः आचार्य न मां सा रुफि दूय ॥ गी क. कला ॥ धून दाडा. कजि
 कथं पात्रलिका या अंशक पूय ॥ कि ग्ववि य ॥ ॥ य न मा प्रा वं हा या रं थ नाडा पात्रः
 जा रु कं आचार्य न आली रुय द का स्य ऽ हिल पि सा च क जा रु डा. ना रु ख लि वा र्क प द य ॥
 मा था ध ॥ ॥ अं न स ४ श्री व रु स ला य ॥ अ न न रु मि ना व कि ह्ना न वं कि रु नाः
 ष ना रु सा ह्व ना हि कि न रु स्ता रु रु ह्वा मि क न प्र रु शा य न नृ रु ह्व न रु रु वा
 रु वा कि वे ना व मि वे रु म हा का म रु ह्व ना वि प्र वा य म हा व ला शा का म दे वा रु नि ह्वे व
 च रु रु र्था रु या रु हा रा पृ थी पा ह्वे व रु व न रु प न रु थ ॥ ध र्म ना जा ह्वे ना रा ह्व
 ग न्ध वा रु न कि न ना शा प्रा य पि हा रु थ द वा अ रु नि रु नि वा सि ना शा म हा ना रु रि ना य न

२५

३

[illegible]

सुधा सुधा

कन॥ अं॥ अ॥ न॥ य॥ न॥ ल॥ य॥ अ॥ स॥ न॥ वि॥ न॥ स॥ जा॥ की॥ रू॥ ॥ हिल॥ ल॥ थ॥ अ॥ शा॥ न॥ क॥ आ॥ लि॥ ट॥ प॥ द॥ का॥ स्य॥ दू॥
य॥ अं॥ वि॥ ना॥ क॥ कि॥ पू॥ न॥ य॥ र॥ मा॥ सा॥ क॥ कि॥ प्र॥ कि॥ क॥ रू॥ रू॥ रू॥ रू॥ रू॥ ॥ गी॥ न॥ स॥ र्व॥ वृ॥ द्वा॥ ॥ ग॥ १॥ र्व॥ क॥
सं॥ २॥ द॥ ॥ व॥ कि॥ क॥ रु॥ स॥ क॥ य॥ गा॥ ३॥ थ॥ ल॥ य॥ ॥ अ॥ रू॥ स॥ ल॥ र्व॥ क॥ रु॥ न॥ स॥ य॥ अं॥ की॥ आ॥ न॥ म॥ न॥ य॥
कि॥ क॥ सा॥ हा॥ ॥ थ॥ न॥ ज॥ म॥ सि॥ आ॥ दिन॥ पू॥ र्व॥ क॥ दू॥ य॥ ॥ ग॥ व॥ य॥ ग॥ ल॥ क॥ क॥ ल॥ न॥ क॥ ॥ वी॥ हि॥ दू॥ य॥ ॥
य॥ क॥ आ॥ लि॥ द॥ क॥ ल॥ स॥ ना॥ पा॥ न॥ क॥ य॥ अ॥ च॥ ना॥ म॥ वि॥ क॥ १॥ य॥ ल॥ द॥ क॥ य॥ स॥ सि॥ वा॥ क॥ न॥ वि॥ ना॥
क॥ कि॥ सा॥ सा॥ क॥ कि॥ दू॥ य॥ स॥ ना॥ पा॥ न॥ य॥ क॥ यो॥ गि॥ नी॥ या॥ वि॥ न॥ स॥ थि॥ य॥ ॥ प॥ लो॥ यं॥ क॥ रु॥ क॥ ॥ स॥ ना॥ क॥ न॥ ॥
थ॥ न॥ आ॥ चा॥ र्य॥ नृ॥ र्व॥ का॥ स्य॥ मा॥ गा॥ व॥ ल॥ या॥ द॥ प॥ थ॥ क॥ आ॥ लि॥ न॥ हि॥ च॥ क॥ क॥ मा॥ वि॥ आ॥ दि॥ न॥ द॥ अ॥ रु॥ मा॥ न॥
का॥ न॥ य॥ ॥ ॥ गी॥ न॥ ना॥ ग॥ अ॥ रु॥ वि॥ ना॥ न॥ म॥ प॥ ना॥ हा॥ अ॥ रु॥ न॥ ल॥ कि॥ या॥ यि॥ न॥ स॥ न॥ न॥ ध॥ न॥ थि॥ क॥

वाकलिनिप्रवक्षांशं सुप्रवाचनं प्रमथियाम्बुधनं सुकटकं हृदि गं वना ॥ ५ ॥ ननन
 भा नू सन्व नना मा स म न स न्य जी भा नू का ना र ह म वि ना हि नी व रु वा ना दी रु द म हि मा
 नू धा ला ॥ ॥ धा लि
 नी ल व र्णः व दि न क ज म
 रा न स म न य यि ध यि ध
 र मि अ न्धा ना ॥ ॥ गा व कि लि ना व रु क लि या ड न स क गु न च न ह आ ना ध र स म र्य
 न द रु लि रा न म धु ल स म न व रु वा ना दी ॥ ॥ ना ग ॥ ह्म क ॥ न रा ॥ च धु ली क न
 ली ल मा नि रु प दा इ ला लि ना वि ध्य रुः वि ध्य रु नि म हा स र्व वि न च र्य ली न स वा धा द र्यः

अम्हा जागु गभापिनि. वृत्तिपदं प्राप्तिधरु यथा. ना गा डा ग. बृह दयं च. सह जान दाय
वदा मरु॥ ॥ ना गा॥ थन दक्षपतिरय क॥ अ ना गी क मा न क॥ चरु भा गि नी य म्नी गुलि
वहिन क॥ धून का अ. नि जं रव का य क न श्रु य॥ आ चार्थ या रव अ स. वि का न स वं का न चा र्थ कि
कूल १ क र्थ. कू मालि था य ना या र्थ. वि धि र्थ पू जा॥ प य र्थ स. ए का क न क॥ वि धि वा
सन या य. म लु ल थिल स्तान क न. ग व च ग्वाल आ दि व्री हि द क॥ द्र या डा. द क क्ष च म्भु न
स्य पू र्ण द्रु कि द्र ये॥ आ क्षि ष वि य. म लु वि स र्ज न. स ग व न क. ज. भा रु नि. का मा नी आ दि द व रु श
क श्रु य. च न पू जा. द क क्ष. नि स ला व धा न कू य क॥ द गु स म च श्रु य. क मा नी पू जा श्रु य. द गु स
म य का य. का मा नी या. सि ध भा रु नि कि य. धा ना स म य का य. वा हि ल हि च क॥ गी क॥ च की क

धुल॥ समया चक्र॥ धनलया दूफि. धना के व. विसर्जन. ना हाय कृ. ना गय वलि रु. श.
 प. कृ. व. न. ध. च. क. ना गय कय क. न. श. य. ध. न. प. च. ध. ७. द. क. ल. सम. रा. ग. या. र. स.
 हा. ल. या. य. गी. क. क. र. य. २. द. व. रु. श. य. म. म्वा. ल. व. लि. क. क. श. य. लि. का. य. म. म्वा. न. कृ. ध. य. क.
 ध. लि. म. धु. ल. पा. ना. ल. अ. कृ. य. ॥ ८. द. कृ. ध. को. र्म. प. ध. कृ. ध. का. य. ध. न. स. क. य. क. ॥
 ध. न. लि. को. ला. स. ग. न. को. य. ॥ ग. ध. च. कृ. व. लि. वि. य. ॥ च. कृ. कृ. य. ना. ल. का. य. ॥ गी. क. ग. क.
 कि. न. आ. दि. मो. ले. क. वि. य. य. धु. धा. मा. न. ॥ क. ल. क. श. य. म. र. व. ध. ध. न. ॥ या. क. सो. स. व. व. लि. वि. य.
 अ. ध. ला. स. ना. व. कृ. य. ॥ गी. क. ॥ ॥ ना. ग. म. धू. म. कृ. ना. ल. दू. र्ज. मा. न. ॥ प्र. भा. दि. ना. दि. द. ध. रु. मी.
 स. य. नी. स. न. म. नू. म. धु. र्म. सि. क. ल. य. ना. रं. द. धा. द. ध. रु. कृ. च. उ. व. न. म. आ. रि. कृ. व. कृ. वा. ना. ही. आ. लि.

२५

६

मो.सं.

नूरुः नाग चर्मा रुनी यः या या कृस म्ब ना वः ४ त्रि रु व न वि रु यी ज कि नी च क व र्णी ॥ • ॥
नाग ॥ अ न्य गी क मा ल क ॥ य मा म धु ल थि ल स्तान क न थ प ॥ ग र्व दू र्वा दि ग मा या अ द व प ॥
वलि प ॥ १ प ॥ ल अ क्रा य कि क न ॥ दि ग य कि नृ ल ॥ गी क ॥ ॥ ना ग र्व उ यि ॥ च क मा ल ॥
द्व मि नी स ना व न वि ना स यि क यि ह ॥ २ ० रु ना अ म धु ल ना या ॥ ध्र ॥ ॥ रु र्ज
का न रु म न रु ग नि वा सि या न ॥ ॥ ह्मा क ॥ स र्व ना थ ग मा ह्मा र्क स र्व ना थ ग मा ल य ॥ स
व ध म्मा गी ना ल्म्य द ह्मा म धु ल म रु म ॥ ॥ अ मि य २ नि न रु न द ह्मा २ स रु रु स द नी नाः
या कि न रु न य यि स ॥ ध्र ॥ ॥ ह्मा कि ध म्मा गी र्म रु र्म ह्मा न र्म वि ह्मा ध र्म ॥ स म रु रु द का या
गु र्म म धु ल म रु म ॥ ॥ च व ड या गि नी च ल म ल म ला २ व रु वा ना ही आ लि ग ह का

१००

१

ल॥ ॥ सर्वलक संयुक्तं सर्वलक एव किं कथा सा मकरुड वा नागुं धावम धुमं मथि
॥ ॥ उधरु नाडी कनक वा निरंजयं रश्मिर्लिंग ए नीला वधू वाक् ॥ ॥ सर्व
सत्व महाचिरं दुष्टप्रकृति निर्मलं समकरुड चिरागं शावम धुल मरु मं ॥ ॥ जा
ग॥ स्नाक ॥ संपूर्ण सर्वं
ल्य भाद कन जी कि नीह
भा कय दं ॥ यस्या कस्य कपोत न ह स म न सा निर्य प्रसं एव दं ॥ ॥ जा ग ललि ॥ स धु
ल विमर्श क्षिप्य या ला ह क जा दं थ नं ॥ य ऊं ग मा ना ला दि ॥ गु नू प्र सा द वि य वा द स प रुः
क य रुं ला सा सा य ना ल लि ला य सि द्ध या मू ख धु दि दी प दान ॥ थ कि नि ना द कि वि धि रु ला ॥ ॥

मा.भ.

१०९

८

१३० नमः श्रीवज्रसत्त्वाय ॥ ॥ अथ किं नक्षत्रविधिमाह ॥ ॥ कार्यापविद्यातिनथापनया
म ॥ ७ चासंगुनमस्तुल्यपक्षगव्यज्ज्यादिपूजाप्रणिपादपूजासहस्रानि साधनज्ज्यादिस्तस्य कान
क्षा यस्तुल्यधिलनदिन
लंखवलिस्तु यस्तुल्यमा
राधूनीला निस्तुल्यचि
लंखनेस्तुल्यसहाय ॥
मि ॥ ॥ रावेना ॥ क का कूं लूं ०० ॥ य न न वज्रसयीरुमिन्निराय ॥ धूप ॥ समस्तोहनकु
सांवृद्धा ॥ अष्टादि कूं सीरु का ०० ॥ हा रुमसूका वजीवरुयिष्यामिस्तुल्य ॥ आयाकसर्वव

कीर्त

द्याद्याऽसिद्धिभनाम्यदास्यथ। अथमसरुलंजं नसरुलंजीविकयम। समयसर्ववृक्षानां
रुविनाहं नहंसयऽअवेव रुविष्यामि वाधिचिरु कचं नसऽकथागतकूलात्यलिर्मसा
द्यस्या नसं हयऽ। अथम
सर्ववृक्षं निमज्जु ह्यरु॥ कं
युजायाय। लाहाकिनम
जाययाय। यं लायं रुक॥
रु नयसं हा नश्च हयिक नकि रुयत्रिग्रुद्विविधऽ॥ ॥ थननिर्विघ्नयाय निमिरि नगुक्ष
मधुल आ कर्ष हयाय थुगु मूडासहि न॥ अं वरु मधु कं रु॥ वरु वरु मूष्टिद्वय नरु रु न्यः

७८

गुह्य जा सर्वमधुला कर्षणी मूढा ॥ अं वरु कै वे अ ॥ वरु चक्र मूढा न अचिष्टानयाय ॥ ॥
 किल नरावना ॥ क काम ध्वनिष्य नं जा न मूर्य सु दू ॥ विष्ट वरु स्मि रू दू का न कि न ॥ द
 ल दू विष नं नि ॥ सं ॥
 ध्व दू ल दू ॥ स दू दू ला
 त्व न या त्म प ना वृ दू दू ला
 न व का लि ना ग्या ली दू च
 सं च य ॥ क व ल य नि व नि खि ल ज ग दि द्य वृ द्या नि नी ल पी क रु नि क मूल स य क न व्या रु व क रु
 यो दं दू दू ट ल ल जि दू ॥ य कि मूर्य स दू रू मी दू टि ल न क व रु ल जि नं ॥ ॥ ॥ दू दू ल ल ल टः

किं न

रूपक कपालमा लावलम्विगल दसुष्ठिच ४६० ही विरुष ४४ ससुष्ठु मखल व्याघ्रवर्मात्तः
नध आनीला नक वलयि भाई कलकपिल कनक लसुका कादि नाग नाऊ कनक ससुष्ठु नावकय
स्थानिक क नायां वरुमः
द्वयमि किं ला कविः
हो वामायां कपाल खडा
प्रसूत अम्भिरि दक्षदिग्धि
आ.या.नी.धू.लो.स्त्रा.प्र.का.दि.रा.गु.न.क.व.द.न.लय.न.या.य.॥ अ.रू.स्त्रा.न.क.सं.पू.का.क.म.दी.पू.ष.न्या
॥ १॥ का.प.द. ३६ ॥ १०८ स.रू.ल.य.व.लि.पं.लां.घं.कु.क.६॥ ॥ क.ना.वा.म.व.रु.मू.ध्या.ना.रु.न.धः

चकछूच्या का नंरुई का रू नृपस का रू स राव की ल कं ध्या ला द क्रि ष क न ष वि षू क व रु
व रु म रु न षा का ट थ रु ॥ ॥ क मा व रु व ल्ध न म धा सा षू ची क रु न्या क षा रु स मूर्धिन्य
सदि कि ॥ ॥ ध कि न ष
ना ग रु न वि ॥ मा ल स प ॥
या न रू न यि अ न रु म
न य रू स र्व दू षू न की ल
य वा क चि रु न ॥ ॥ धी व रु स ल्ध आ ना धि या न अ न रु न सि धि प्र द भा क रु ल द ॥ ॥
पूर्वा दि द्वा न का का न न न रु सी मा रु न यू कि द्या न नू पा र च लु ग री ष ष ष म षा ना न द वा

कीर्ति

धियकि गह की लयनि॥

द्या नय २ सर्व दूर देव डा नय नि वा ना की लय दूर दूर॥

न॥ ॥ ह्रीं का ॥ पूर्व सु

कीं का कतु ह्रीं न मा मा द॥

न॥ ह्रीं म व ह्रीं न नी मन

की लयनि॥ ॥ डरु

द्या नय २ सर्व दूर य का धियकि सप नि वा ना की लय दूर दूर॥

यं रु न॥ ॥ ह्रीं का ॥ डरु नय क ना दूर्य मथ नी ह्रीं म व ह्रीं कां म हा कीं नी मनू पांच

॥ पूर्व का का सां रु ग व नी मा क र्ष य न॥ ॥ शं का का सा य द

न॥ ॥ ह्रीं का का सा दूर दूर॥ ॥ यं लां यं रु

न॥ मथ नीं नी मां ऊ न य कि य रा धा न नू पा प न ह्रीं

॥ श्री व रु स त्व ॥ ॥ डरु न दि ग द्वा न ड लू का न न

य ना २ नो ड ग क न म हा ह्रीं ह्रीं ना न य का धियकि गह

न ड लू का सां रु ग व किं मा क र्ष य न॥ ॥ शं ड लू का सा य द

द्या नय २ सर्व दूर य का धियकि सप नि वा ना की लय दूर दूर॥ ॥ शं ड लू का सा दूर दूर॥ ॥ यं ला

यं रु न॥ ॥ ह्रीं का ॥ डरु नय क ना दूर्य मथ नी ह्रीं म व ह्रीं कां म हा कीं नी मनू पांच

८९

३

उल्लासां न मा म्यहं॥ २ ॥ यच्चि मदि गद्या न ह्वा ना न न न सिद्ध ना न ह्वा न न वि कट नृपा
 शंका लां कूल महा ह्म ह्म ना न रु जं गधि पति ग ह की ल य कि॥ ॥ यच्चि म ह्म ना स्या रु
 गव की मा क र्ष य नृ॥ ॥ ॥ ॥
 लय कूं रु द्वा ॥ ॥ ॥ ॥ ना स्या रु
 ह्म गी ना गधि पति मदि
 दकि षदि गद्या न ह्वा क ना
 महा ह्म ह्म ना न प्र गधि पति ग ह की ल य कि॥ ॥ दकि ष ह्म क ना स्या रु गव की मा क र्ष
 य नृ॥ ॥ ॥ ॥ ना स्या रु क र्ष य नृ॥ ॥ ॥ ॥ ना स्या रु क र्ष य नृ॥ ॥ ॥ ॥ ना स्या रु क र्ष य नृ॥ ॥ ॥ ॥

62

किं

कै० २५०॥ यं ला यं रु रु॥

नादि च न मासि सुक जा न नां॥ ४

सुत्रा २७८६ द्वासे ६५

यमजोर्गुरुवर्तिमाक

वाजा की लय रूँरूट्टा अंय

रत्नो मा नाये ह्यद्वौ ह्यष्टौ पी

ह्रीं ५ वादिनिऊवन

महा धर्म धामना जना कृपा

॥ श्री क॥ दक्षिण रुमवर्धुगी कृमा न दय्य हानि क्षीं रघा नयन

॥ दहनवनकाक्षदेवीयमन्त्राजीनः कृष्णीमारुचः ॥

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

षेयता। ईशमजनीययुद्याकयस्सर्वदूष्टानोशयानि

मज्झिमा निकाय २५ अंश ॥ पंचांग ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कारुविगुहं। दहं नाधिपेकि हृत्तीक्ष्णं यमदा नीनमाभ्य

यमदूती पीनो नृधो नृको धनया रंल श्रीवन इनाशन

की लेयनि॥ ३ ॥ नेम ह्यमदूनीं रुगवर्णिमाक

र्घयक॥ अं यमदूकी यद्यद्या कय २ सर्वदूखने सत्या नृपनि वा कीलय दूँरुद॥ अं यमदूकी य दूँरुद॥ यं लाद्यं रुक॥	॥ ह्मक॥ ने अखपी कने का रं कया दो धिय कि मदि नीं यो ना मा म्मद॥ ३ ॥ वायू वन का ह्मदवी यमदुष्टी नका
दहासवदनां यमदूकी न ह्मम कने कलालवदनी रं कि॥ ४ ॥ वायू वन यमः	धा नाध का न म हा ह्म ह्म ना न वा का धिय कि ग ह की लय दुष्टी रुग व किं मा के र्घय क॥ अं यमदुष्टी यद्यद्या कय २
सर्वदूख वायू नृपनि रुक॥ ॥ ह्मक॥ वायू वन क ह्म मां गी स्व स ना धिय कि मदि नीं सा ना निरु य दीं नी	वा ना की लय दूँरुद॥ अं ये मदुष्टी य दूँरुद॥ यं लाद्यं दीं यमदुष्टी न मा म्मद॥ ५ ॥ ह्म न वन का ह्मदवी यमसथ नी ह्मम क रुष्टी रुवि

कट नूपा शं जो ड किलि किलि लान व मुहा ह्म ह्म नान् रु का धि प रि ग ह की ल य नि ॥
 ध्रु ॥ ॐ ह्म न य म म थ नी रु ग व रि मा क र्ष य न ॥ ॐ य म म थ नी य य य द्या ट य २
 सर्व दू ह्म ह्म न य नि वा नान की ल य द्दें रु ट ॥ ॐ य म म थ नी य द्दें २ रु ट ॥
 पं ला यं रु क ॥ ह्म क ॥ ॐ ह्म न ह्म म क ह्म गी रु क ह द र्प हा नि ही ॥ मो ना
 नि धी य नी द वी य म म थ नी न मा म्म ह्म ॥ ॐ ॥ ॐ धी य च क व रु ट द्दें संधि
 का मा न वि द्दु ह न ह यी क द हा शं व ह्म न वि धा ही य ह ग ह स य न ख च न
 ग ह की ल य नि ॥ ध्रु ॥ ॐ ॐ ॐ धी य च क व रु ट न म हा का ट ना रु मा क र्ष य न ॥ ॐ ॐ धी
 य च क व रु ट न म हा का ट ना रु य य द्या ट य २ सर्व दू ह्म व ह्म दी न य नि वा नान की ल य द्दें २

रुद्र॥ ॐ दुष्पूष च कवर्हि न रूद्र॥ पंलां घं रुद्र॥ ॥ श्लोक ॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥
 रुद्रोऽष्टादिश्वरो नानुमानानिधयसर्गनाथः दुष्पूष च कवर्हि नमाम्यहम् ॥ २ ॥ सुमन्त्रोऽ
 क्रादुष्मिनीलमन्त्रैः
 नागादिरुचनमानराक्ष
 जा माकर्षयेत् ॥ ॐ सुमन्
 कीलयन् रूद्र॥ ॐ आः स
 पृथ्वीनागासुनादृष्टान् रुचनीमानमर्दिनीयथ ह्यसिद्धिदानार्थं सुमन्त्राङ्गनमाम्यहम् ॥
 म ॥ च ॥ दहदिह दारुद्रं कानायुषमामिदक्ष क्रादुष्मन् आसापनिपूजय दानपतिजः

किं

सर्वविघ्ननिवाञ्जना ॥ ध्रु ॥ नृस्येष्टाक ॥ यः सत्त्वार्थयनिर्णयकमिदं विरुणाटापदः
काञ्चनादस्सुविघ्नोपधायाद्यटिकयनयसाधोषसानन्दमर्हि ॥ १ ॥ सा नानाकाञ्चनाय
रुविदन्तनायाञ्जदूखं
ऊनमासि ॥ ॥ ० ॥
अथवसंधानाधिवासन ॥
॥ ॥ खानदुल्लेख
उक्तकाञ्चनायविचित्रा गुल्यालाक्ष्मीकिहंलक्ष्मीनिहंकाञ्चनायविचित्रा
नादल्लिखल्लानसत्त्वनूयपृथिवीदवनायासरुचकीरुचपीत्यावद्यदयापीनासोम्याः

८४

पी मां वृत्रविचित्रा रुन क्षी गृही कृक न क सुप्रद्य ठारु यं वा स रुन क दू यां च क व कुं यः
नस्ति मां विरा वा ॥ ॥ धूप ॥ त्वंद वी सा की रु मासि सर्व वृक्षान् नायि नां च र्या नय विमं
ष ह रु मि पा न मि ना स च यथा मा न व ल रु मं ॥ ॥ अ सि ह न नायि ना क था मा ल
व लं कि त्वा स धु लं लि त्वा या मा हं ॥ ॥ धा ३ ॥ ॥ थ न अ र्घ्यं क्षी र स प कं च त्वा
य अ रु क द द द्वा रु स्त्री क स्यं ॥ ॥ ओं च अ हि म हा द वी पृ थि वी ला क मा क ल सर्व न त्वः
स मा य र्घ्यं दि वा लं का ल रु षि क हा न नो य न नि र्घो ष व रु स त्व प्र पू र्ति क गृ ही त्व
ॐ दं म र्घ्यं स धु ल क र्म स सा ध य की ४ दी दी दी ह्वा हा ॥ ॥ नी लां जन ॥ यं लां घं रु क र्प ॥
सा च व क्रि य ना मि त्वा क्ता क त्वे व ली नं चिं क य न् ॥ थ न व रु वं ध मू डा न अ धि ष्ठा न या य ॥ ॥

व० क

ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ३ ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ० ॥ ॥ थनमस्तुलदथसः
कवधनकं अष्टदलपद्मं वा याजकं कृत्वा कस्यैव न पश्येत् क्रियया कस्यैव न हृत्पुत्रं कस्यैव न
मृत्युं वा धिप्यं वगन्धः
दूवा लक्ष्म्यं कस्यैव न य
ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
मिनः कं दक्षस्यैव न वा
वज्रा मना दक ०० ॐ ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
स्वाहा ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥

८५

७

अमयूखे हानम शुलमा नीयसमयचक्रप्रवृत्तमहा जागनदवीरुयवाधिविरुजयं
यगृतां रुसकनंहीरुर्कंचिकथकचिद्रुसमयदवता हानदवकथांनकीरुतामिरुय
॥ आयाधुनियु ॥ यंलायंरुः क॥ मनुहाकंऊया॥ वलिदाययक॥ ॥
०० कि कलहाधिवसन ॥ विधि॥ ० ॥ पूर्वदलपाकसूपंचसुष्टका॥ अंगोः
कीखंरुंऊआ॥ नवीजा ॥ कननिष्यनंपरवृद्धसुयुयान्विचिरुय॥ ॥ आया
पू॥ अंवजसुष्टमाकि क ॥ मरुं॥ जापधा १०८॥ वलि॥ यंलायंरुः क॥ यंचसुष्टका
धिवसन॥ ० ॥ दकि॥ एवज॥ रूका नजंहीरुपुचसुचिकवजम्विचिरुय॥ आया॥ अंही
वजुरुंरुंनूकत्यादि॥ अंवजसुष्टरू॥ पूर्ववृ॥ वजाधिवसन॥ ॥ उरुनयसुष्टया॥

न वं अ का न जां घ ष्ठा णी क व ष्ठु वि रा वा ॥ आ या पू ॥ अं स्व र्ध व ऊ र्द्व ॥ अं व ऊ र्द्व ० अ अ ४
 स्वा हा ॥ जा य ॥ स यं पूर्व व रु ॥ ॐ कि घ ष्ठा धि वा स न ॥ ० ॥ य ष्ठि म द ल ष्ठी ख र्व का न ऊं ॥
 णी ख ष्ठि क व ष्ठु वि वि र्य ॥
 व रु ॥ णी ख ष्ठा धि वा स न ॥ ॥
 य नि नी ल जं ग सं स्त य ॥
 ना च ना दि स्त नू या न ध्या
 य न स्त न ज लो स रु की रु का म्बि वि र्य ॥ आ या पू ॥ अं र्द व ऊ र्द्व वि रु स म य र्द ॥ नी ल ॥ अं वं
 व ऊ र्द्व वि रु स म य र्द ॥ ष्ठी क ॥ अं आ ४ व ऊ र्द्व वि रु स म य र्द ॥ पी क ॥ अं ऊं ४ व ऊ र्द्व वि रु स म य र्द ॥

न क॥ अं खं वज्र चिरु सम य दं॥ रुजि न॥ सर्व कर्मिक सकृदुप न न जी नि॥ पं लां घं रु॥ ग॥
 वलि दा न य॥ न जी धि वा स न वि धि॥ ॥ क मा आ त्मा नं वज्र स त्व नू पं ड रु न सा ध क च
 सर्व कर्मिक स्व रा वं॥ अं
 न कृ य॥ दी फ दृ षां कृ षो ज ४
 त्मा नो द क्रि षा रु न च कृः
 ॐ अ॥ अ॥ ४ अ॥ अ॥ ४ स्वा हा॥ सृ ण
 न स क र्मा व जि स्वे हा व॥ सृ ण रु ल॥ ध म रु न॥ ॥ अं अ॥ न्या न्या नू ग का सर्व ध र्मा ४ प न स्ये वा
 नू ग का सर्व ध र्मा ४ अ रं गानू प वि स्ता सर्व ध र्मा ४ अं अ॥ ४ दं॥ ध म रु न सृ ण रु न धू न दा व लं

ॐ २ रु ० ॥ अं की १ रु ० ॥ अं ३ सर्व वृद्धा कि नि य व रु व लू नि य व रु वे ना च नि य रु २ रु
० ॥ म ध्व ॥ अं अ कि नि य रु २ रु ॥ प र्व ॥ अं ला भ रु २ रु ॥ उ रू ॥ अं ख रु ना रु २ रु ॥ पा णि ॥
अं नू पि नी य रु २ रु ॥ द क्रि ॥
क ॥ उं क न २ प च रु २ रु ॥
कि य रु २ रु ॥ प ॥ उं जा स
रु ॥ अ ॥ उं रु २ ख र्व नी य
२ रु म रु य रु २ रु ॥ ० ॥ वा क च रु ॥ उं रु २ ने ना व नी य रु ॥ य ॥ उं द रु २ म रु रु न नी य रु
॥ उं ॥ उं प च २ वा य र्व रु ॥ प ॥ उं रु २ व स नू धि ना क मा ना व लं वि न रु ॥ द ॥ उं गृ रु २ स

फ पा ना न ग क सु ऊं ग स फ वा न ऊं य २ व्वा मा द वी य ऊं ॥ अ ॥ उं आ क य २ स रू द ऊं ॥ ने ॥ उं डीं
 २ रु य क रू ऊं ॥ वा ॥ उं हों २ ख ग न य ऊं ॥ ॐ ॥ का य च क ॥ उं म् २ च क व रू ऊं ॥ पू ॥ उं हों २
 ख सु ना द ऊं ॥ उ ॥ उं हीं २
 २ स वी न ऊं ॥ अ ॥ उं मिलि २
 हिलि २ म हा द वी य ऊं ॥ ॐ
 उ ॥ उं व्वा ना व्वा ऊं रू द ॥ य ॥
 म दू गी य ऊं रू द ॥ ने ॥ उं य म ड डी य ऊं रू द ॥ वा ॥ उं य म म थ नी य ऊं रू द ॥ ॐ ॥ व्वा ना न ॥ उं च व्वा
 य हा य स्वा हा ॥ पू ॥ उं ग क ना य स्वा हा ॥ उ ॥ उं काला काला य स्वा हा ॥ य ॥ उं क न क रू न वा य स्वा हा ॥

८८

द ॥ उँ ॥ अ ॥ इ ॥ इ ॥ हा ॥ सा ॥ य ॥ स्वा ॥ हा ॥ व्री ॥ उँ ॥ ल ॥ श्री ॥ व ॥ न ॥ रु ॥ का ॥ ष ॥ ना ॥ य ॥ स्वा ॥ हा ॥ अ ॥ उँ ॥ धा ॥ ना ॥ न्ध ॥ का ॥ ना ॥ य ॥ स्वा ॥ हा ॥
 ने ॥ उँ ॥ कि ॥ लि ॥ कि ॥ ला ॥ न ॥ वा ॥ य ॥ स्वा ॥ हा ॥ वा ॥ ॥ थ ॥ कि ॥ म्ब ॥ च ॥ म्ब ॥ न ॥ ३ ॥ ॥ स्वा ॥ न ॥ रु ॥ सं ॥ रा ॥ व ॥ ना ॥ ॥
 क ॥ रु ॥ स्त ॥ द ॥ दी ॥ ऊ ॥ म ॥ य ॥ स्वा ॥ कः ॥ ॥ च ॥ क ॥ आ ॥ दि ॥ म ॥ सु ॥ ल ॥ द ॥ व ॥ का ॥ य ॥ थ ॥ आ ॥ रा ॥ अ ॥ रु ॥ रु ॥ ष ॥ सूर्य ॥ षः ॥
 उ ॥ य ॥ वि ॥ स्था ॥ ॥ गी ॥ क ॥ छि ॥ च ॥ क ॥ आ ॥ या ॥ धू ॥ गी ॥ क ॥ न ॥ म ॥ दू ॥ ॥ दू ॥ व ॥ ऊ ॥ डि ॥ क ॥ अं ॥ य ॥ म ॥ सः ॥
 न ॥ स्व ॥ कि ॥ स ॥ रा ॥ सा ॥ व ॥ रु ॥ य ॥ क ॥ ॥ हा ॥ ध ॥ य ॥ की ॥ १ ॥ की ॥ १ ॥ ॥ अं ॥ रु ॥ ग ॥ व ॥ न ॥ अ ॥ म ॥ क ॥ स ॥ द ॥ ऊ ॥ वि ॥ श्या ॥ ना ॥ ऊ ॥ न ॥
 मा ॥ रु ॥ क ॥ ॥ ॥ म्ब ॥ मि ॥ लि ॥ रि ॥ मे ॥ ना ॥ थं ॥ म ॥ सु ॥ ल ॥ क ॥ नू ॥ हा ॥ स्म ॥ क ॥ ॥ या ॥ दि ॥ ॥ ॥ छि ॥ धा ॥ छि ॥ व ॥ क ॥ नि ॥ पा ॥ य ॥
 य ॥ ला ॥ र्ध ॥ म्ब ॥ ॥ स्व ॥ स्व ॥ मे ॥ रु ॥ हा ॥ स ॥ फ ॥ वा ॥ ना ॥ आ ॥ य ॥ ॥ व ॥ लि ॥ द ॥ य ॥ ॥ स्वा ॥ न ॥ रु ॥ न ॥ वि ॥ स ॥ ऊ ॥ न ॥ म ॥ सु ॥ ल ॥ धि ॥ या ॥ का ॥ हा ॥
 अ ॥ न ॥ वि ॥ रा ॥ वा ॥ द ॥ व ॥ का ॥ धि ॥ वा ॥ स ॥ न ॥ वि ॥ धि ॥ ॥ ॥ थ ॥ न ॥ लि ॥ स्त ॥ रु ॥ थ ॥ य ॥ ॥ ऊ ॥ व ॥ मि ॥ रा ॥ ना ॥ ख ॥ व ॥ मि ॥ रा ॥ ना ॥ च ॥

द.सूर्यराव नयं थमनं सिध नां थथ स्वय ऊ का न क्ष जा य या रा व न या व ह्ना नां द ला का ख व
 ला हा न न म्भू कि वि सं द्वा द न रू व स म न न ॥ ॥ ऊ ४ ऊ ४ ऊ ४ ॥ थ म नु प न यं सूरु वि य गु नू क्ष ॥
 उ रु न सा भ क स्यं थ म नुः प न य का य ॥ ॥ आ का क्ष स सूरु थ य ॥ म नु थ ॥ अं व ऊः
 सूरु सा नि क म थ द्वा ॥ ५ ऊ ४ आं ला हा ॥ थ म नु क्ष थ थं म धु ल सं थ य ॥ व स सूरु का नः
 सूरु म ल सूरु चा क सूरु म थ कि न न ना स्यं ॥ ० ॥ क्ष न क क्ष ड य कं द्वा थ न लि आ
 चार्य न व ऊं थि स्यं जा यः धा ३ १० द य का द व या म नु क्ष सर्व क र्मि क म नु न न
 व ॥ यं लां यं सु ॥ व लि आ का ना म र ॥ ३ आ ४ द्वा व ऊ म ४ ॥ सूरु वि स र्ज न ॥ आ का क्ष नां थ व न य
 उ क्ष सूरु स ची द न थ ग न लं रा न य ॥ ० ॥ कि सूरु या न क्ष वि धि ॥ ० ॥ ॥ क ना द्वा का न म नु क्ष

८८

५०

[illegible]

गीकनकवर्धन ॥ पूनरावना ॥ धन्यमानकनं सांका नक्षमासकी नकवर्धन ॥ अष्टादः
 क्षुजां खेज वाष्प दूष्णं सच कपा नं कलि धं धुक्ति कथा गदी कथयिष्ठ नवमं नु नयदा
 रुटका धन पाष्प खः खः
 नक नोटका नव योवनसं
 ४ की ४ का नक्ष अमृ कलावः
 सनं की ४ का नवी र्यदु का च
 वसत्व वसक नी चरुदि अमृ क प्रवक्ष्य की ४ स्वाहा ॥ ० ॥ धूनी लोत्ना ॥ पचर गन्धादि म
 रुत्वा न ॥ विधि पूर्वक नय जा ॥ पूः पं लोः यं सु ग ॥ जो प य धर्मा स्त्रा भा द क्रु विसर्जन ॥ ० ॥

८०

१२

ॐ किक भाटक ह्म धन विधिः॥

त्वाः पूर्व दान समीप पांश्चिमान ना निषय ॥ समाधिः क्रियया गवान् प्रथमं कृष्णाधिवा
सन न्यासो कृत्वा ॥ कर्मासा

धनद वपूजा ॥ नरु मधु

विघ्नकी लनदि विधिप

कांयाया याधिना काकिः

प्रसाधिक वाक्क मूडास माय त्या कदरा वरुन मूडास माय त्या समस्त लिङ्ग नरु धनिस
मानी क ह्म न चक्रं पाया धन पून स वस्त्रा न निव द्य मरु ना रा क्ष द्रवी रुय व जा दि र्नेक्षः

॥ अं नमः श्री चक्र सम नाय ॥ कदन्वा चार्थ स्नानादि क

र्व कमी का द के न म धु लं प्रा क ॥ कने च सं ज क्र ॥ ॥

ल स रा व ना ॥ ॥ अटि कि धू न्य कान क नं न श्च चक्रं

चि क रि र्ग रा व वा म धु ल स्व नू यां नि नू य षो उ ह्म दि

सू प्र रां ग न्ध पू र्णा कू ला कृ त्वा क स्या म ध्य रु का म य रु

॥ अटि कि धू न्य कान क नं न श्च चक्रं

निर्गन्धस्य पद्मानन्दवत् च कात्मकं च निरुपधास्य न संसय च कृप विष्टं विचित्रं ॥
धूपनिजाङ्गनपाशादिपूष्पाद्यास्य यक्षपद्माङ्गुलीकावस्तुयुगादिकं कणाङ्गुली
४६ ॥ धूमकुन ॥ स्वाशलाः
स्वाननयिठावजाययाया ॥
भाहानिसाधनं ॥ धनकम्
यनिःसंवत्सरं वंकाङ्गुली
रुग्मा नासृक् विरावा ॥ ४६ ॥ ४६ ॥ ४६ ॥ ४६ ॥ ४६ ॥ ४६ ॥ ४६ ॥ ४६ ॥ ४६ ॥ ४६ ॥
सर्गं ४६ ॥ ४६ ॥ ४६ ॥ ४६ ॥ ४६ ॥ ४६ ॥ ४६ ॥ ४६ ॥ ४६ ॥ ४६ ॥

५९

क मा नी या कृ प्य व क्ष य क्त्वां अ मृ ग अ मृ गं प व क्ष य क्त्वां ॥ ॥ अं कं कं घं घं कं स्वा हा ॥ प चं अं कं
 क्षा धि छा न ॥ यं लां घं मुं क ॥ व लि स रा व ना ॥ स्व द्वा दि स्तु कं का ल न स्ति रि ॥ स का रु न का च क
 ना र्य क र्ज क कृ टा क्षा वा
 नि वा ना न्य नि मि क त्वा म्भा
 व न व लि वि श ॥ अं कं कं क
 ट य अ मृ क स्य क्षा कि कृ नृ कं २
 म टि कि क्ष न्य का न क र्जं स प्र क्षा सा न्य लि कं द व ना मृ रि वि रा व ॥ पा य पं लां घं मुं क ॥ ॥ कृ चं
 रा व ना ॥ क्ष न्य का क नृ क्षा रि च वा धि वि रा धि मा कृ क्षा मि मृ ल य नि षु क्षा व लि कं जा च क क क्ष

६२

ॐ वं का षी च क वर्हि व रु ॐ म म्व लि ॥ २ ॥ ॐ व रु पा ना ल व रु ॐ म म्व लि ॥ १० ॥ ॐ कि स रु हा दी
क य रु ॥ आ च म यं ला द्यं सु रु ॥ रु रु रु रु रु नि न्द्रा दि नां ॥ पा प य ॥ ॐ ख र खा दि र खा दि ॥ आ च यं
लां घं सु रु ॥ ॥ रु मा व हि
त्वा क स्त्रान का द्य व द्य ४ था
दि ग या म रु थ ॥ ॐ सु रु नि र
ॐ रुं आ ४ आ ४ रु रु ॥ ॐ रु व ॥
म रु हा व रु द्या न र्से म रु ल सा चा क्र दा य ॥ म रु ल खा ख दा रा या ॥ ॐ व जा द्या ट स म य प्र व हा य रुं ॥
स्वान श्रु या रा व या य म रु ल सा ॥ ॥ ॐ स म यं प्र वि ष्य ॥ ध रु चू न का व नृ त्वा का य थ व भा उ स स्वानः

सा ला गा य ॥ हूँ किस य नि क न म धु ल सा ध न वि वि ष ॥ ॥ थ म क थ क क ऊ वि वा स नं ॥ ० ॥
 थ कि न ल क क या न च चा क ष ॥ नं दि न म सा न वि ष स ना न रू ॥ अ नि ल ॥ न क व र्ण ॥ न म हूँ ॥ अ व नि नि ॥
 व ज म य रू मि ॥ अ सि व ऊ ॥ उं र व रू ध क ॥ प या दि ॥ रा न्ध म धु ल ॥ नि मा नां व रू ॥ न म हूँ ॥ थि च क ॥ अ व
 नि नि हि क वा म सा न ॥ थ नि ॥ ० ॥ दि का क क ॥ न दि वि ष स न रू ॥ अ नि ल ॥ न क व र्ण ॥ न म हूँ ॥
 द व च चा ॥ प वि स रू न मः हूँ ॥ ॥ स रू ज स ना न रू ॥ वा सा द हि ॥ मू डा ॥ हा ॥ नि य ध न ॥ च कि रू
 क अ न ॥ प्रि रु ज ॥ म क ट सा द ल हा य ॥ सूप मि म थि ॥ नि रू रू व ॥ का यि ल व सा ॥ ० ॥ प रू क क ॥
 न दि वि ष स ना न रू ॥ अ नी ल ॥ थि नी ना य न ॥ न क व र्ण ॥ न म हूँ ॥ द व च र्या ॥ क लि क व रू ॥ का ना
 यि ॥ हा ज रु व ष ॥ आ दि मा न क ॥ च कि क थु ल ॥ ज य रू यं ॥ रा च क रा स न थ म च चा क ष हू री ॥

८३

२३० नमः श्री वज्रसूत्राय ॥

पां कृष्णसूत्रं नमः नारायणाय ॥ वलि रुद्राय चैव पात्रं त्रयं नारायणाय ॥ अर्धो लिङ्गार्धं नमः

सुखं गच्छेत्तु नमः सिद्धिं

माधिका लक्ष्मणाय नमः

दनकं सकृत् ॥ रावना

स नमः अष्टदशैव नमः

अनमः श्री नमः अष्टदशैव नमः

रुद्रं विदध्वानमालं रुद्रं श्रीपादाया रुद्रं वासकं हिरकमष्टनं च कमलं दक्षं रुद्रं पृष्टं

॥ अष्टदशैव नमः अष्टदशैव नमः ॥ अष्टदशैव नमः ॥ अष्टदशैव नमः ॥

यः स तु लथिलं स्नानं कुरु नमः कुरु नमः कुरु नमः कुरु नमः कुरु नमः कुरु नमः कुरु नमः कुरु नमः

कपूजा दवपूजा विधिर्था ॥ अर्धो लिङ्गार्धं नमः सुखं

निनाऊ नमः यक्षगवविषयं लाहृग्नि नमः ॥ अर्धो लिङ्गार्धं

गुकोसकृत् गुलिमष्टलं वाय ॥ ॥ अर्धो लिङ्गार्धं ॥

अनमः श्री नमः अष्टदशैव नमः ॥ अष्टदशैव नमः ॥ अष्टदशैव नमः ॥

रुद्रं विदध्वानमालं रुद्रं श्रीपादाया रुद्रं वासकं हिरकमष्टनं च कमलं दक्षं रुद्रं पृष्टं

रुद्रं विदध्वानमालं रुद्रं श्रीपादाया रुद्रं वासकं हिरकमष्टनं च कमलं दक्षं रुद्रं पृष्टं

कं व दं दं य न मं ध्व नं णि न सा ला का न कं पा म य ॥ २ ॥ रा व ना ॥ अं स रा व षु द्वा स र्व ध
 मां ध्वां ध्व रा व षु द्वा दं षु न्य मां ह्य न व ऊ स रा वा त्म का दं ॥ अं म टि कि स र्व स त्त्व ध न ध र्मा ॥
 कौ का न ध्वा मा य पा षा ला क ध्व न मा त्मा नं रा व य ॥ ॥ ध न अ ग न्वा स ॥ द क्रि द र्मा द र्मा
 आ ॥ का न ध्वा सूर्य मा धु ली ॥ स व ॥ वा म द र्मा अ का न च द्र म धु ली ॥ ॥ अं वं अं किं रं
 दं ॥ स ॥ अं लां मां पां का वं ॥ ला हा र्मा ल क ॥ अं स र्व र्मा ग क व जां क लि स म य
 दं ॥ ॥ अ ग न्वा ध्वा ॥ धी ल अं क या य दं ॥ क थ ॥ अं आ ॥ वि क या य दं ॥ न र्मा ॥ अं दं क
 य वि क वि क या य दं ॥ क र्मा ॥ अं स र्व न द य दं ॥ पा द द य ॥ अं अ र्मा य य द य दं ॥ स र्मा ॥
 धी ल ॥ अं मं धी य दं ॥ च क र ॥ अं की कि ग र्मा दं ॥ क र्मा ॥ अं व क या ल दं ॥ का स ॥ अं रं ग र्मा दं ॥

अनङ्गम् ॥

लू दूयकं च न डाल सं कथं ॥ ओं अभा दया हा म धुल सर्व विद्या नूत्ता नय दूं ॥ खान वा य ॥ ॥
 ओं अभा दया हा ला कृष्ण नाय वरु पृथं प्र कि कृ स्वा हा ॥ द थ ॥ ओं ओं ॥ कि ला क वि रु या य अभा
 दया हा प्र कि रु क ओं ॥ १ ॥ १ ॥ प्र कि कृ स्वा हा ॥ द ॥ ओं अभा दया हा ला कृष्ण नाय वरु
 पृथं प्र कि कृ स्वा हा ॥ द ॥ ओं आर्य अमि ना ला य वरु पृथं प्र कि कृ स्वा हा ॥ थ डान ॥
 ओं आर्य ना नाय वरु पृथं प्र कि कृ स्वा हा ॥ ख डान ॥ ओं आर्य रु कृ यो य वरु पृथं प्रः
 कि कृ स्वा हा ॥ ऊ डान ॥ ओं आर्य अभा दया हा म धुल सर्व विद्या नूत्ता नय दूं ॥ ख डान ॥
 ओं आर्य रु कृ यो य वरु पृथं प्र कि कृ स्वा हा ॥ ख का थ ॥ ओं आर्य सर्व निव न व वि रु रिय वरुः
 पृथं प्र कि कृ स्वा हा ॥ ख थ थ ॥ ओं आर्य रु कृ यो य ना नाय वरु पृथं प्र कि कृ स्वा हा ॥ ऊ थ थ ॥ ओं आर्य

लि

हययीवायवजयूष्यं प्रकि कृत्वा दा॥ क काथ॥ यक्षयचा नयका॥ सुनि॥ लोकधनं धिने
धार्कं अमाद्यगुहसागनं अमिना रुकमो नमा मि अमाद्यया ही की का न स सुव नार्थ
क नू धा तिग्धमा न स अ माद्यया ही नामा ना लोक नार्थ नमा मय दे॥ ० ॥ वू ह
मधुल शिष्ठानां सर्व का थ ग का धार्कं सर्व का थ ग का लयं धि न धर्मा गु ने
जात्मा दे धम मधुल मरु मं॥ २ ॥ आचम॥ अं वू ह मधुल देव ता य अर्घ्य प्र कि कृत्वा दा॥
स्वानुय कं कया अं वू ह मधुल सर्व विद्या न सा न य दे॥ ॥ स्नान वा य॥ अं वू
आच ना य वजयूष्यं प्र कि कृत्वा दा॥ दथ॥ अं अर्घ्य अ क्रो र्वा ये॥ ॥ कृता न॥ अं अर्घ्य न ल स र्वा
य॥ ॥ स्व असा अं अर्घ्य अमिना रु य॥ ॥ थ अ न॥ अं अर्घ्य अमाद्य सिद्धि य॥ ॥ क असा अं अर्घ्य

अर्थ

अ०३

मासके^{गागा} ॥ ख. का. थ. ॥ अं. आ. र्य. ना. न. नी. र्ये. ॥ ख. थ. थ. ॥ अं. आ. र्य. या. धु. ला. र्ये. ॥ ज. अ. थ. थ. ॥ अं.
आ. र्य. ना. ना. र्ये. ॥ अ. का. थ. ॥ प. ल. श. प. चा. य. जा. ॥ सु. कि. ॥ रु. ष. डि. क. म. सि. दि. क. ल्य. धि. न. स. प्र. द.
प. च. व. र. ल. र्. का. म. का. ट.
न. का. ट. न. ध. र्य. वि. ला. न. ग.
॥ व. लि. वि. ॥ अं. न. भा. व. द्वाः.
मा. ग. र. वि. ला. य. धि. धो. रु.
ग. न्ध. न. सा. य. क. म. प. रु. अ. मां. स. र्व. स. त्वा. ना. र्. व. न. रु. ना. यां. स. म्. र्. वा. लो. प्र. कि. ष्ठा. प. ना. र्ये. अं. आ.
॥ स. ल. ग. र. व. ज. रु. ष. हा. र्. फ. ट्. स्वा. हा. ॥ ॥ म. धु. ल. दा. ह. न. य. गा. था. ॥ ॐ. ह्य. मि. सा. रु. ग. वा. न्. इ.

[illegible]

धर्तृदक्षनायादाधःधनि यादीनसःस्थगुलिधर्म जाययागः खनाभावेद्वयागुमस्तुल्य
 शुभशुलःधनाकवृद्धयाकसः॥ यायः॥ वृद्धरुगवानकूयूवगर्धिःधालसाःसहाकनूक्ष
 वरुशयाऽविश्वकर्मसः
 कःसमस्तं सकलाखदाऽ
 विश्वकःनानासमुनेभा
 कायाऽरुमचूजमलिशः
 ॥ अं आर्यप्रहृषो नमिनायेवजपूषीपकि कृत्वादा ॥ दधमः ॥ अं आर्यगह्वरुदायेवज
 ॥ ॥ ॥ अं आर्यदक्षरुमिकाये ॥ खअसः ॥ अं आर्यसमाधिनाजाये ॥ धजने ॥

79

ॐ आर्य लंका वना जाये ॥ ऊडास ॥ ॐ आर्य सधर्म पल्लिका ये ॥ खकाथ ॥ ॐ आर्य क
 था गुरुकुल काये ॥ खथथ ॥ ॐ आर्य ललित विस्तु नाये ॥ ऊथथ ॥ ॐ आर्य सुवर्ण प्रण
 साये ॥ ऊकाथ ॥ पक्ष
 गो नक्षत्र नं प्राप्ति नां य
 नक्षत्र गुरु सधर्म न किय ॥
 म्माय कस्तु ने म ॥ ॥
 नीला नलेयं क ऊपुष्य रुक् ॥ दं वलि गुरु २ य ॥ मृगादि गुं ऊं धिद्यु पि च २ य ॥ स्वावर्द्धनी
 सन २ म धा वर्द्धनी धिनि २ वृद्धि वर्द्धनी य स्वाहा ॥ ॥ म द्यो ग ॥ धर्म मुष्ठा न ग री प्रव

दिर्गं धाम नाडपायिकं पात्रनिर्वाणिकं कस्मै धर्म जलाय ॐ दं पृष्ठा मधुलनिर्वाणिकयामि
 ॥ ख ॥ सा ॥ इहं जवनामा जवदक्षिणा गुर्यं ॐ मदिवसमूपादाय यावदावाधिमधुनिख
 लुना धर्म धाम नक्षत्राः मिविजानामयं ॥ गु ॥ थव २ नाम नक्षत्रं दक्षिणाय
 दाडा थनीयादिनसुथ गुलिधर्म नाय याग गवनाका वाधिसत्त्वा गु मधुलः
 षधुमश्रु नक्षत्रा लधर्म याक सवनयाय धर्म कृयुज गधिदध्व नसा नागद
 षमाया माह आदि काल ताविद्या कथयिष्य प्रह्लापा नमिनाया क धन धाडाना
 ॥ ० ॥ थन ऊडास चोद मधुल शिषिष्ठाना सर्वल क धर्म पूर्य सर्वल क धन किर्ग
 सम करुड वाचायं धाम मधुल सा नथि ॥ ॥ आ वम ॥ अं स धम मधुल दव नाय मर्धः

प्रणिष्ठादा ॥ ॥ स्नान उच्यते कंठय ॥ ओं सं दमस्तु ल सर्व विद्या नत्ता न च द्रं ॥ ॥
 स्नान वा य ॥ ओं आर्य वला किरस्व ना य वज्र य ॥ प्रणिष्ठादा ॥ दथ ॥ ओं आर्य मे गीय ॥
 ॥ हुं आन ॥ ओं आर्य गगः
 ॥ ओं आर्य वज्र पादा य ॥
 वसिष्ठं विष्णुं शिवं
 गच्छेत् ॥ ऊं काथ ॥ य ॥
 सत्त्वा द विद्विषि ॥ चत्वा न ध्वरु लस्ति ना सु मे न गा ॥ नाम हा या गि ॥ ॐ ह्य धी व द य
 कला रु ग व ना य स्मि ग हा वा कृ ना प्र ह्ना धी ल सु मा धि क य व य ध्वा य क स्मे न म ॥ ॥

वलिवि॥ अं नभा ला कना था य द वा स न न न य क ना क सा रि व दि क या द य द्रा य अ ध म
 न न क स त्वा द्वा न धा य वि ह्य त्वा ना य म हा का नू ध्य का य ॐ द न्ति प य स म ना दि स हि
 कं गृ ह्ण २ सर्व स त्वा ना यः
 स त्वा न ध म्म स त्वा न सं द्य
 ॥ म दा ग म ॥ स कि स
 स कि स द्य ४ स दा ग म मिः
 ना ग म मि नि रू ल प्र कि य न्न ग म ४ अ ना ग म मि नि स कि स द्य ४ आ व रु नी यं प्रो व रु नी यं स
 मा क न नी यं अ ऊ लि क न नी यं अ न रु न यू ध्य क रु द कि नी या ला क स क स्म स द्य नः

त्वाय ॐ दंपूष्यमस्तु लनिर्याकया मि॥ ॥ सा इहं जवनामा जवंदक्षिणा लयय ॐ मं
 दिवसमस्यादाय यावदावाधिसस्तु निखस्तु नाज्जवेवरिकं वाधिसत्वसंघ ४ धनर्षः
 गच्छमिगनाक्षमर्ग्यं ॥ ३ ॥ ॥ थन २ नामनं द्विथदावथर्थदक्षनायादाथनिः
 यादिनस्तुथगुलिधर्म
 खस्तुमस्तुलथनामाज्ज
 धानसासमस्तुसत्वपा
 नसंघयाकं धाननडा नं ॥ ३ ॥ ॥ समन्तादुनलुमादक्षदिगलाकधोरुसन्निपकिना
 वृद्धारुगवनावाधिसत्वाध्वश्च नार्थायाध्यायाध्वश्च ॐ भवनामायर्किचिक्कायवाक्

नारिः सर्ववृद्धवाधिसत्वा आगायिको कदन्यासंगम्य ॐ रुद्रनाहिरुवाकप्रसमया
 पायकैकर्मकर्मकात्रिर्गवारुवेरु ॥ गुरुसर्वभक्तियुयित्वा कुलयित्वा सर्ववृद्धवाः
 धिसत्वा नामाचार्यस्याः
 स्मनेष्टपुकिष्टदयामि ॥
 वविष्ठाकैर्पूर्वदक्षिणप
 शिगुदिगर्धविष्ठाकैर्
 गुनूडपाध्माथथिपनिसकृद्वनः कियनिसनथवरनासनगवनपूजिमिसनचिकिधंख
 सयाद्यापायदयूवहानिदवचनं नृगवृद्धनयाद्यापायदयूवहचंसमस्तु कथागरुवाधि

आशा सरकाथि

2651

ASMA ARCHIVES

१ यूप्या कं पूजनाय च॥

शानप्रतिष्ठापनार्थं मि ॥ रुनाथः दृगु नृः कलपालयाकः किमि सनः प्राथनायादाः कनया
लक्षयवर्गाधिं संधालसाः किमि संधाः स कनया लः सर्वसत्त्वः ॐ त्यादिः समस्त संज्ञान हा दानस
मूदया कं नः समूदसं मेग
था हाडा यम रु सं चा दूथ
जसाः वृद्धप्रतिष्ठाया यया
लः वरु नं वाः हा सं वा कनि
धी रु नृ कया गु चरु र्थारिषकः दक्षारिषक ला य या नः महा मधुलः कलपालयनि स्यं कडाधं
दमधुदय काडाः हा मसहि कया दाडाः यूप्यारि त्यादिः कलपालयनि स्यं गुगुमालमालकाः

गुन

किंनर

विधियादं गुनप्रमुखं उपाध्याय चर्चाया कल्याणगुनः कल्याणनर्पनिस्तं किमिगुः कार्यविरु
कसाव च काका नक्षत्रास्तं विद्या कनः कनाथ दे गुनः ॥ ॥ धनद्विषाणावना ॥ ॥ रुदना
रिन्नाष्टः प्रविमलुलसुः कूका नक्षत्रं कूका नाडुर्कः कर्षू विरुक्त नृपं नम
लम्ब रुष सं उर्ध्व कक्षं पि क्षा च वस्थापं नाक्षिका गृह निश्चयः कक्ष कूका नक्ष
दिनीत्वा यनिष्ठा म्य नक्ष मानव ऊ कूका नक्ष मरुका कूका विरुक्त वः वहिनिष्ठा म्य ॥
क्षं घन घन हाथ ॥ अं मूक निमूक कूका २ रुद्र ॥ अं गृह २ कूका २ रुद्र ॥ अं गृहा यय २ कू
२ रुद्र ॥ अं अनाय हा २ रुद्र गव निश्चा ना ऊ कूका अमूक म्य सर्व पापं ना क्षय २ कूका २ रुद्र ॥ ॥ धनः
मलुल विरुक्त नृपं च गव विरुक्त पाथादि नी ना ऊ नृ व ऊ ना चा मरु कूका नाथ ॥ ॥ धनधर्मका

२

पूजा

१५५ नलमधुलयाखकनरसिध्वदकोसया॥

लिङ्गपायाङ्कनलमधुलवायकं॥ पूजागुनमाग्रायाकदाहनयभासाइइकायअकैकलं
रायदाखस्वाकस्यगुनसुअर्थ॥ ॥ अङ्कीष्टवनसुका नाय. अकगुन४चन६॥ पष्टानाय
॥ अं वजा नायायसुकर्म
गुन६. पादप्रका लेखन
स्मि. नवारि नायिकसिद्धि
ना॥ ॥ अं वङ्की लकी
यंचय० लकी लयित्वाकी लनस्मिनि नो दे४ सर्वदेखा निदं सु. चक्षिष्यसंका न६. समनरुड
नूयं विचिष्य. कदिनका र्थसका नङ्मिदं मधुलमयस्वनाइव विष्ववजाधिष्ठिकविचि

स्वो जवायकं

उन्

ए. सि. नि. वि. च. द. सु. दं. जा. न. उ. ध. वि. न. र्क. मा. म. आ. का. न. म. ध. य. च. स. चि. क. न. र्क. वि. रा. व्य. र्क.
 ह्या. न. द. वी. ह. च. द. सु. व. ज. व. न. का. न. र्क. म. रु. मा. भा. ल्य. न. यी. क. स. श्र. व. ज. न. स्ति. सु. न. हो. ४
 पूर्व. क. म. रि. व्या. य. क. व. चि. र्क. ध्या. त्वा. ॥ ॥ उ. द. ल. क्क. हा. लं. ख. वि. य. ॥ गु. न. न. ॥
 जा. य. या. य. म. रु. थ. ॥ ॥ डां. श्री. ४. हां. क. न. हा. कि. क. न. घृ. ट. २. घृ. ट. २. घा. ट. य. २. घृ. ॥
 ट. नि. २. अ. म. र्क. न. रु. २. ह्या. हा. र्क. ॥ डां. ख. लु. ना. ह. र्क. र्क. ॥ ॥ थ. क. म. रु. न. वि. य. प. ॥
 नि. ह्क. ना. य. न. न. य. ॥ ॥ थ. न. म. लु. ल. थि. ल. कि. न. न. हा. ना. क. न. दं. क. ना. पू. जा. ॥ द. गु. ॥
 स. म. य. आ. रु. स. ले. हि. क. स. म. या. च. क. व. लि. श्र. य. ॥ ॥ ॥ ॥ कि. वि. य. स. ग. र्क. वि. धि. ॥ ॥
 र. गी. क. ॥ म. ध. म. नू. ॥ अ. नि. ल. न. क. व. र्क. न. म. ४. र्क. श्री. च. क. ॥ हा. ज. रु. नं. हा. ॥ थ. कि. गु. न. पू. जा. धु. र्क. ॥ ॥

पूजा

अमंवीपहायानाकुमकलीय

इ विना

[illegible]

॥ इत्थं न्यायलि विसर्ज्य तं भगवत्कलक्षय ॥

थन जलमशुल वायकः प्र० द० गुनूया न दीह नय ॥ मरु ॥ चरु न लं खादि० ॥ गुनूपा दार्घ्या चक
 ॥ मीमसः इद्रः नायः अकः लः दा र्हा स्वां कस्य अर्घ्य ॥ ॥ वाक् ॥ अं की ॥ पु व न स्का नायः सक गु न
 यस्तु नायः अं व जा चा र्था य सकर्म व जि नः पा दार्घ्य प्र कि कृ स्वा दा ॥ पाद पं० प्र का द कृ स्वा
 नमस्तल ॥ थन प्र हानं पाद प्र का लं ख न दा स्य स्वा न वि य ॥ ॥ वाक् ॥ ऊ ऊ मा न स्वा
 र्था यः प्र कि अ श्वा सि ना वा रि ना मि रं सि दि र् व गु सा नि ध्वं क नू ॥ ॥ थन थ अ २
 था स र्से चानं लं ख मशुल थि लं स्वां ऊ र्वा य कः दा ऊ लं पं चान वाक् ॥ अं आ १ र्दं श्री म न
 गुनू व न खादि० वि स र्जन ॥ थन गु नू ल द वः प्र मूरं उ पा ध्मा च र्चा पा क ल्या न गु नू क्षि ष्य प्र मूरं ऊ
 सः ख यः र्वा लः ना न ल न यः थ र्थः उ पा ध्मा नं न यः थन कृ मि र व १ र व यः र्वा ल वि यः दा ऊ लं प न य का ॥

गुरु भक्तु नृपति हउय
३ अरु दिवा नाडाव नागाम्यं च पयस्य ३

म सुलस कृष्णं कन ॥ यनि विम्वस मा धर्मा ॥ अक्रा सुदा य ना वि ना अश्रु अ नरि नाया च रुकु
क म स सु रु वं ॥ ॥ म क क न ॥ कथ ना क त्व निर्या का ॥ किरि सु र्य न म सु लं प्र कि वि म्व सु ट मि
या ॥ सर्व प ॥ त्व क त्म प ना ॥ थ न खा क ल हि च क ॥ थ न पि हा अ या अ गुरु मा ज्ञा गुरु म
सु व लियारु १ वि य मि या क ल न क स्य गुरु म सु ल द न क वि स र्ज न ॥ मि या रा व ना ॥
न क १ मि या वे ना च क्ष नू य ना ल वि क स वे क मि क क ल क्ष ज ला रि वि क ॥ क्ष ख ल ख
न हा य ॥ क ल ल मि न सु व ज प म च क सूर्य च आ प नि क षू क का न न क आ १ अ श्रु
का न न मि प्र रा स्व न क्ष नी नं कूं ॥ र्य च र्य ॥ नि ना अ न ला हा मि न का य र्ग र्य वि य ॥ म क ॥
१ शं सर्व कथा ग ना नू रु न वा ध्वा लं का न व म्पु य ज्ञा म घ स मू ड रू न क्ष स म य कूं ॥ अं व ज न क कूं ॥ ॥

गगनअधिष्ठानया कशपाय ॥ नचत्वंयदंसर्वकथागताः यत्रमनहस्यमः मधुलंप्रवि
 द्यायवकव्यं ॥ आडाकृत्कल्पनिर्भनः कथागकयाः गुह्यमधुलसः दाहाजयागुखस्वर्गलायः
 मकडा ॥ नचध्वजा द्यकव्यं धनेद्रव्यः आदिप्यनाडादुनिडाः स्याकंकनम
 दू ॥ मिरूत्का ॥ क यनिर्भनकनसाः धन्ययनमध्वनः कृपनिमल्लयूकि
 अः सकंसाकृपनिवक्राया यडा ॥ ॐ अंखंलुआकृदं ॥ अं अं ४ खंवी नदं ॥ गाकः
 गकाय ॥ मागानसानंदक यनं ॥ अं महासूत्रकसूदृदसूभाष्यससखाभवजसत्वाश
 सिद्धिमां ॥ धनमधुलद्रयक ॥ गीकप्रविसृकृपयपकिंदिकक ॥ कृत्वंनृयकानयन ॥ कृताक
 लिः मधुलस्याः पूर्वधानस ॥ ॥ नागा ॥ रं नवी ॥ यविसृकुरुगवनः महाभाकृपूनेदधियिद

हृदि कृपति कृपि कृपाकात्र लीया
अं वका चल हं हृद ॥ १

मात्रानसि च कृयक स्वस्ति वा कृ ॥ अं वका प्रिष हं ॥ माउसः अद्वा लक ॥ अं च कृ वन्ध वनमानय हं
॥ अधपक नचिक ॥ आयथन ॥ अं ख लु ना हं ॥ हन क ॥ अं अ ४ खं विन हं ॥ ख च जान कं हा जाप कं
दूकयन ॥ दू नगा कृ कस्यं वा न ॥ गु न न न न ॥ ॥ कस्त्रं शासू न क पी य वूमि ॥ कृ कृ य प
निसू रिं गु ल नं अ या रत अ जा ॥ ॥ ह्यि य नं धाय क ॥ क न व क वं ॥ ॥ ह्यु रर ग हं म हा
सू ख मि ॥ म क ल ल स ख नं किय नि अ या ॥ ॥ माउस व कं थिय ॥ अं सर्व थार चि रुः
सू त्या द या मि ॥ थन का ख पा न क समय जा थ नू च क ॥ वूमि या ठ यन ॥ वा धि चि रु सू त्या
द या मि ॥ ॥ व कं नू व उ स थिय ॥ अं सून भा स म य त्वं हा ४ सिद्ध व ऊ य थ सूर खं वूमि ॥ ॥
अ श त्वं सर्व कथा ग ना धि वि भा ष्य मि ॥ हृ ह्यि य प नि अ अ कृ कृ न स क लं थ सूर य न म ह्य न क था

कसुमउदकमकूटासनिःकमलाजिनकूलसमयाज्जाचार्ययदं २ मन्त्राजनदण्डनक्षत्रकर्म, द
 क्षवजमकिपदरासन॥ ॥ दक्षिण॥ अंसर्वकथागकपूजाकिंयकायात्मानंनिर्याकयामि
 सर्वकथागकवज्रनलोक्तिः ॥ विष्णुमां॥ सिसृकथागकपूजायादाशः अरिहोयलाय
 याकः किमिसंक्षीपनंदाहा ॥ लयाजलसम्वनः अरिषकविडाकृपाय॥ ३ ॥
 नमामि २ क्षीचक्रसम्वनगु ॥ नूवायदृष्टधामिनां संसृगु नूचनक्षकमलयसायः अन
 रुवसिद्धिपदभाकरूलदं॥ ॥ पश्चिम॥ अंसर्वकथागकपूजायवरुनायात्मानंनिर्या
 कयामि सर्वकथागकवज्रधर्मप्रवरुयमां॥ सिसृकथागकपूजाकर्मसः किमिसंक्षीपनंदाहा
 लयाजलसम्वनः धर्मकर्मवरुयाकृपाय॥ ४ ॥ अदिवरुमहायाननया रुमदक्षयिक

 पञ्चजक
 नक्षत्रचल ३

नूरु न वाधियदं २ ऊ जा मन हर य व न्न न भा च य प न सा मृ क म य प न म गु नूं ॥ ५ ॥ अदि व
 कू म हा या न म थारु म द हा यि वि ना मृ क या न न क द हा यि कू ह म हा च न गु कू क थ का नूरु न वा
 धियदं ॥ ॥ अं सर्व कथा ग
 व ऊ स त्वां धि ष सां गं स म रु
 रु क था ग कं व ऊ स त्वां अ धि
 या मि स या य क नू २ प र्थ या
 पूर्व ॥ अं सर्व कथा ग कं व ऊ पू जा य ह्म ना या नू न नि र्था क या मि ॥ सर्व कथा ग कं वे ना च ना धि कि षः
 सां गं स म रु व ऊ पू जा या य या अ र्थ न कि मि स हा नी लं दा हा ल पा गं वे ना च न न का या क रु पा य ॥ २ ॥

हं गुर

स्वेताचल २

१ थ डी २

श्री मधुसूदनाय नमः १

जि नं वरु ह्युत्तरि या दा ॥ ३ ॥ येन ह्यननत्वं सर्वकथा गक सिद्धि न पि प्राप्ता किं मनीः
 न्या सिद्धि ॥ गु गुलिं थ ह्यनन कुमिक सकलं कथा गक या सिद्धि नायु भवता सिद्धि कृया ॥ ३ ॥
 न च त्वय दं अदृष्ट मलुलः स्वयं न ता व क वां मा न स म या व्यथि कि ॥ कृ ल ल य निः
 स्यं थ ख द क्राम ला क म या कृ ज न ला य म ग डा थ ख ला क सा जि नं क त्व व था द य क ॥
 थ न य लु था स्यं मा उ स व रु न थि स ग य ॥ ३ ॥ अ य न स म था व रुं मूर्धा नं ह्य ल य
 न्य दित्वं मि दं क स्य वि उ या न् ॥ थ स म य व रु स त्व कु मि षी न स चा न ड ना दि क्राम ला क
 म या क क न सा कु मि च स था ल च ल हा या ड पि हा ड नि ड कु मि स स या रं ला य म इ ॥ ३ ॥
 ह चं व रु नू व उ ठ थि य कं क ॥ अ व रु स त्व १ स यं ट य द यं स म व स्ति क १ नि रि श क ल क्षी या या न्

दं कूत्रं त्वया कर्तुं वा ॥ अथ निनिशं कूपं निवृत्तया विहृतां जिनधया थया ज्ञा कूमिसं ॥
 ॥ ३ ॥ न च त्वया कर्तुं वा ॥ मा न विषना पत्रिहा न न कात्र ॥ क्रियां कृत्वा न न कप न न स्यात् ॥
 रुक्षिष्यपनिजिनधया थ ॥ मया न सांजिनचसंदिकका थं विषनददुलपकां ज्ञा मा
 चयुजं न न कस कूनि निव ॥ श्ली ॥ ॥ ॐ कि वदन् ॥ थं कि स मया दान विधिः ॥ ॥
 थनो षिष्यथि २ मधिकं कथ ॥ ॥ रावना ॥ न क ४ स्मि न चि ला वज्र या ग स दृढ मान व ॥ क द
 नू षिष्यं मटि कि षू न्य कान ॥ न नं आ कान जामि नारु नू यं निष्या श् सर्व क थ ग का थ
 धि कि षु नां वज्र सत्व म ॥ आव षा त्वि कि वा च यित्वा ४ क स्य दृदि नं जा क व जां क च ४ का षा पी क पृ
 थि वी म शु लः सूर्य नी ल दं कान ॥ जिन सिव रु व ॥ शु क्क वरु ल क ल ४ क व नू षा म शु ला प नि च द

क. ग्वपाउकलसा. कृपेनिरुनकाययूडा॥ ॥ धनपः
ना. ध. म्. रु. सु. ध. न. क. क. ॥ ॥ म. रु. ध. ॥ डं. व. जा. म्. ना. द. क.
नि. स. म. या. कि. क. मा. द. रु. रु. ॥ स. म. यं. सं. न. क. बा. लि. डि. ॥ ॥
नि. स्व. नू. प. रु. या. अ. चा. रु. रु. ॥ कृ. रु. न. य. नि. ड. नी. उ. द. रु. न. य.
कृ. म्. रु. रु. रु. यू. डा. ॥ धा. ट. नि. च. क. ॥ पि. था. व. जा. म्. ना. द. क. मि.
॥ अ. श. र्वं. प्र. रु. कि. रु. वा. रु. व. रु. पा. षि. य. द. रु. न. कृ. या. मिः.

शुक्लं रुका न कः ६ यं का न ऊ च लया ना का दयं क ध न्वा रु नी ला निल म शु ल न च न क आः
 का न वि रा वा स्व दृ द्वि ऊ न स्मि रि चि रु का य वा क व जा ना नी य य था कु सं क ल्प रा व षू रुं रु ४
 आ ४ रुं का न ष क वि रा वा
 क नू ण रि का ण रू न लिः
 य म ४ का न न स्मि स मू रुं
 स म रू ण नी नं ध्या या रु ॥
 न न चाल य २ रुं रु ४ आ म ४ ॥ म रु धा १० ८ ॥ ध न लि रु त्व आ लि ट य द या रु न थ म स म न नू प ला
 ल पा उ रु उ ण द न आ व ण या य ॥ उ म नू धू प द रु जा नं गी रु न भा रुं ॥ अं गि रुं म हा का रु व ण

नृगलसकृत्साडरुमसिद्धिः॥ ॥ मध्यमागममध्यमा॥ चसंथि कृत्सा मध्यमसिद्धिः॥ ॥
 अर्धरागत्वधर्मः॥ कुत्सि कृत्सा रुक्मि कृत्सिद्धिः॥ ॥ विम्वस्या किदूज चिलात्तमीय कि
 प्रसिद्धिः॥ चाकनयिनः देव नदून कृत्सा रुक्मि कृत्सिद्धिः॥ ॥ देवानां रुक्मि कृत्सिद्धिः॥
 स्वस्त्यनकाष्टादि विरु दकाष्टा कर्वा॥ देवगण दकाया आसस कृत्सा ग्वस्त्य देवया
 काथास कृत्सा अस्त्य देवया सिद्धिः॥ ॥ दशार्द्धव कथा ३ कृत्सा यदिय कर्त्तु कर्त्तुलं क
 स्वरुव कि॥ नस्त्य देवया अस्त्य कृत्सा नस्त्य देवया सिद्धिः॥ ॥ यक्षलंघा
 वहिः ४ पाकन॥ यक्षलंघा रुया पिन कृत्सा॥ ॥ पून ४ क्रिय दान कृत्सा यावत् ॥ रुक्मि स्वधाल
 कयके अधिक॥ ॥ रुक्मि वहिः पाकन कृत्सा सिद्धिः ॥ ५ उर्ध्व पिन रुक्मि कृत्सा रुक्मि कृत्सिद्धिः॥ ॥

स्वतन्त्रकर्म॥

हृदा ४ आखं वी नरुं प्रकि च्छू कू स मा ऊरि लि ना थ हा ४॥ अं श्री ह नू क व ज पू ष्यं प्रकि च्छू कू फ ट्वा हा
॥ स्वा न म लु ल स य क ॥ ॥ अध य न न क का य क ॥ क का णि ष्य स्य द व द्रु अ धि प रि ल ला
ट न रू न य द य अं द यं स
ट न क ल न ४ ५ ट्या ट यः
य रू १ अ ह न च कू रू अ ४
कः स्वा न न न क ॥ थ न म लु
वा यू ष्यं प क रि द द म हा मू द्रा सि ॥ भा उ स च स या ल स स्वा न क क सा क अ धी म हा मू द्रा सि दि ॥ ॥
आ च नं मू ख वा म कृ सि दि ॥ मि स्वा स स्वा ल स क क सा म कृ सि दि ॥ ॥ उ रु मी ल उ रु म सि दि ॥

थनमिष्यनधायक॥ वज्रमधुलंमहामधुलंप्रविच्छादं॥ रुनाथरुगुनू वज्रमधुलंमहामधुलं
 महामधुलं संजिपनिद्याहायधूना॥ १ ॥ यागमधुलंमहामधुलंदर्भिमार्दं॥ रुजागः
 मधुलंमधुलंमहामधुलंमहामधुलंमहामधुलंमहामधुलंमहामधुलंमहामधुलंमहामधुलंमहामधुलं
 लंदिक्किमार्दं॥ रुगुनू रुना
 हा४ हा४ हा४ ॐ किं पाथयन्॥
 यादर्भजाभा॥ ॥ थन
 वत्समहावज्रकि॥ ॐ किंमालारिषकविधि॥ ० ॥ थनमिष्ययागपानरुगुलिस्वस्तिचाय॥
 आस्मखदिगुनू आदिननाय॥ मिष्यसांनगुनू मधुलदनक॥ ॥ अथधना॥ गु ॥

वा रु व रु ल पा सू वा रु व जा व लि व रि श्व ना सि सि डि ॥ थं पि चा क ल पा सं व जा व लि सं का ला व
 लि सं थं पि न रु क सा सि डि म दू ॥ ॥ म शु लं चा श्च द र्श य क् ॥ म शु ल स्वर्यं म दू ॥ ॥ कि कि त्म
 रु मा रु क र्ण क थ यि त्वा व
 य ॥ ॥ रु नं ख क ने ॥ ॥ रु द क त्म शु लं य द्ध श्च द्वा वं रा न सां प्र कि ॥ त्वं च वू द्ध
 क ल जा का मू डा म रु न धि
 ल वू द्ध क ल म जा क रु ल
 सि डि नां स म या र्ण रु वि ष्य सि ॥ व रु य द्वा गु ल लि क म रु षा ना ध नं क नू ॥ सं य रि स क लं सि
 डि या गु व रु क रु ल प द ला य गु व रु क रु य द्वा न म ना रु ष द चा रु म रु आ ना ध ना या ॥ ० ॥

फेसु था ग के ४ प्रह्लास मा प ने. महा नाग न दु वीरुय. वे ना च न दान ६५ कर्नि वे ६५ व ऊ मार्ग नः
 निर्ग ल. क दु वे द वी प द मू ख न. प्र व सि क णि र्ण. म टि कि सून्य गा क न. रू व ऊ जा क दि रु ऊ ४
 स प्र ह्ला ऋ ल्य स्व रा व. सम
 रिं रि ४ प द्मानि ४ धृ ल्य. ग
 नृ ल्य पु ष्य कं क मा दि. वृ षि
 क ल णि र्ण णि र्ण. प द्मानि ४
 न ॥ अ रि ष क वि य. नि पा ला हा क स रू स्य. मि र्वा पि य ना न ॥ वा ॥ य त्मं ग ल स क ल स ल्. क दि
 स्ति क स्य सर्वा त्म क स्य. व न सर्व कू ला धि प स्य. नि ४ णि स ल्. ऊ न क स्य. महा स रू ख स्य. क त्मं ग ल रू.

न
वाधिवर्जवृद्धानां यथादरुमहासहसमापिज्ञाननाथयखवजायददादिभ॥ रुनाथरुगुन
वाधिवर्जनवृद्धपुत्रपनिस्तु गथञ्जुलिषकविसविज्ञानञ्जुर्थजियनिनक्राकयकयाकख
वजादिदिविद्याथजियनिष्ट
मलायनिचदसूर्यउपवि
ला॥ मि॥ वृद्धानारिषः
ददधमस्यदि॥ रुनाथरु
उद्धायाययाकगुल्लकनञ्जुचार्थगथविद्याविज्ञानञ्जुर्थजियनिस्तुञ्जुलिषकविसविज्ञ
रुने॥ ॥ रावना॥ ककश्चकसालिषिकासदलक
वृक्षिषांसयलीकवृद्धधननूयंविणव॥ आ. पा. नि
कुरु. कगजासायवजिष्ठागुल्लकनायथादरु. रुथा
गुनवृद्धपुत्रपनिस्तु गथञ्जुलिषकविल. थथ. ससाव
॥ धनप्रहृषाययाभाउनापनाचक. क. ली. नसदिचकनय॥ ॥ रावना॥

[illegible]

वरुणः पत्रमारिषकेशलश्रीधनः काचनपर्वतारुः शिलाकनाथः शिमलप्रदिनः वृद्धाविव
 द्वावृक्षपुत्रः सुलगलं रुवकुः धाकनं वाद्यं ॥ कनापदिष्टः प्रवत्तकं यः ख्यातः शिलाः
 कनयदवयूः धर्मः
 शालधर्मयुक्तः धर्मम
 आगन्तुः कलकलं रुवः
 वरुणवृद्धानां यथादरु
 नाथरुगुनः वाधिवरुनः वृद्धपुत्रपुत्रिस्तु गन्धर्वजः अर्थः शिपनिवकाशयकं या नः खवजादि
 वियाथः शिपनिस्तु स्वकारुदन्त्यरिः शङ्कागुञ्जः रिषविह्वलः ॥ साज्ञानः पद्मराजः नः

द्विपृष्ठचयथा कर्म॥ मिसाशकास्तु सिंधुय॥ ॥ मनु॥ अंगवर्तिः आविष्टाश्रुत्या दृढ
 यद्वं फट्॥ धनमकूटनयूयक॥ ॥ वृंदकस्तु सर्ववृद्धा नां॥ धेधु कनमस्तु कं॥ शप्ता कं पूजना
 धीयमकूटयंच कनाह्वी॥ हृमिष्यपनि॥ धमकूटसमस्तु॥ कथा गननं॥ त्रिभुवननैः
 नमस्तु नया दकयागु॥ आ॥ अक्षिस्तु नयनियूजा या चकयाग॥ धमकूटनया वयचक
 लसजाकशले॥ हिलक॥ अंवजधामकं धी अरिषिचरुं॥ मध्या॥ अंसत्ववजी अरि
 मिचरुं॥ पू॥ अंसत्ववजी अरिषिचरुं॥ द॥ अंधर्मवजि अरिषिचरुं॥ य॥
 अंकर्मवजी अरिषिचरुं॥ उ॥ अंसर्ववृद्धचूजमलि॥ महाहानमकूटं प्रकिं कृदा॥ ॥
 धी॥ लेखनहाय॥ अं॥ अ॥ वज्रमकूटारिषिचरुं॥ आ॥ नकस्तु मर्दा॥ अंवजकुषा दा॥ गु॥ सर्वराः

आदर्शनज्ञानं अविद्यामयकालः अकार्यः स्वरावं नया गवना धनयः ॥ ठानी नारिषकः ॥
अध्वना ॥ भि ॥ वाधिवर्जनवृक्षानां यथादरुमहा मरुः समापिज्ञाननाथा यः खवजादिंद
दाहिभगः रुनाथरुगुनः वा धिवर्जनवृक्षयुपनिस्तु गथविल अर्थः क्षिपनिवकाः
क्षयकया न खवजादिं विद्या र्थः क्षिपनिस्तु सकुटारिषक विद्वन् ॥ ॥ रावना ॥
क्षिप्यः आनलसंरुवपुपिनं हानसत्त्वेनेकी रूगं नरुस्तु ॥ कथागनदवीरि ॥ कं रेचरि
विद्यामानं नूपवजादिरि ॥ नूपनियमानं मंगलगीकि कं रावयन वजाधिपकि ना
महाकषयवृक्षः कनकवस्तुदियटिर्न नलसंरुवजं कत्स्वरावं हानसत्त्वनूपपचकथाः
गर्गः मध्यस्तिरुः क्षिप्यचक्रवर्ति नमवध्यात्वा ॥ सकुटं कस्य भिनसा मध्यः ललाटपा र्थः ददयम्

सञ्जिघानरूयूडगुबलसहानजायजिडागुञ्जभाषककाडाकृपनिरु॥ ॥ लावना॥
 मटिगिडीकात्रकृपयपनिहर्कः अमिफारुनृपः हानसत्वारिन्नं हत्वा षष्ठं चासिनालात्तर्कविचिंख
 ॥ अरिषकं महावर्जं लादि॥ कजायं खञ्ज अरिषकं लाहादिमयं खञ्जः कस्यादक्रिहृत्तदत्वा
 पूर्ववदरिषिचक्र॥ रुढि व्यपनि अभाखञ्जश्रुगथिं गुधनसा नखनूपशयावचागु
 यनमठवजनः ऊडा लाहानं जानाडाविष्ककगुः गथपूर्वकानसञ्जिघकविनः जिन्नं कृप
 निरुखञ्ज अरिषकविद्या॥ खञ्जविय॥ मञ्ज॥ अं हन २ सा वय २ सर्वे हा पुन हान खञ्ज कं
 पद॥ वूनिखञ्ज अरिषक॥ ॥ श्री हानु कर्णा अरिषक॥ लाव हान॥ विष्णं च गुमहा नाव हा मूडयाः
 प्रविहानकात्रलचक्रमालंवा॥ ॥ लाहादि कर्त्तिकागु कस्यादक्रिहृत्तदत्वा गुहा रुढि व्यपनि

वात्स माहृत्याः प्रकाश वाऽक नस्ति कः अक न ह्यन स रूकं ना कु दान च ॥ ४॥ ध्वनः ॥ समस्त रा
 वरं चादः कुरु रा न अक न व चादः अक न ह्यन नंद त्यरि शया अ चादः चक व कं म मू अ वि ना सं म
 मू ॥ ॐ नि म कू टा रि ष क ॥ ० ॥ सम गा ह्यनं न त्व स र व स्व रा व क था ग क मू ड ह स स्का ना
 जाना था धी म नि ष्य रि सि
 ॥ थ न म कू ट स या क का स क
 अ चल म थ कू ल सा ख ज
 ख ज या ख क न ॥ य च ह्य न स्व रा वा खं द हि ख ज व क न म म अ वि द्या थ न नि र्दि श ह्य नू प्रा षा रु वा
 म्य हं ॥ ह नि ष्य य नि अ मा ख ज श य ग र्थि गु धा न सा द का ह्यन नंद त्यरि शया अ चा गु गु व ल

मनु॥ अंगक २ क २ सर्वमनुपादनवन्ध २ मरुतुय न धर्मनस्वाहा॥ ॐ निपाहारिषक॥ ॥
 श्रीनां तु कपालारिषक॥ वामरुक् नृकपानंदवीदि कृतिं वा दशानु॥ पाणविय॥ अंबक कपालस
 र्वहा कृष्णार्क धात्रय २
 कलावना॥ षोडशं वलुमः
 श्रीरुगवन्कृष्णचलसि
 कृष्णदिरुदनपंचाचलाः
 थाप्रविष्म कदाका नक्षत्रमार्गं वा॥ अं रु श्रीद्वयवजीसिद्धि कृंफट्॥ अवं कृष्णवर्णदियागिनीना
 नामारिषिचरु॥ ॐ निनामारिषक॥ ॥ थमञ्जलया मथरुलादुरं॥ ॐ ॥ ॥

असकलिं शयुः। गथिं गु धनसा नमन्य शया वागु दकासा नग दहल य जिअ गु डरुम श
याअ वागु थथिं गु कलिं कारिषक जि न कप निरु विया॥ कलिं विया॥ ॥ मरु॥ अं कलिं कस
वमा ना क्षां मां सं कल य २
क व क॥ ख ॥ वा धि व ऊ न ॥
पा क्षा यक्ष मा द्य सिद्धि पति
पा क्षा कस्य क र्ज नी सै य न ॥
शयुः गथिं गु धनसा सि जल या मय शयुः क र्ज नी अ सै श क श या न वां गु ख डाला रु क न जी ना
अवि श्र क गु पूर्वा का न स ग थ विल अ थं कप निरु थ पा क्षा रिष क विया॥ पू न ष या क पा क्ष विया॥

थियकं वरुविय ॥ श्रीखलं खनहाया ॥ अं वजा रिषिः सून कल्ल मरुं ॥ ॥ सर्वसंज्ञा च कवधु
 ॥ आका न कू न सं रवा ॥ महाक न पद प्रापं न संज्ञा न च संज्ञिनः ॥ रुषिः पतिः समस्तं सियः कृपाः
 वरुं आका न कू लउत्यरि
 लिधक था हा म दू र ला ॥ इडागु मडा धं अक न पद ना मा आडा किं डी स स ड लि थ
 नां य था द रु म हा म हा म मा ॥ ॥ अथ पत्ता ॥ वाधि वरुं व वृक्षाः
 वरु न वरु पृ पृ प निरु ग पिजा हा ना र्था य ख वजा दिंद द हि म ॥ रुगु न रु ना थ वाधि
 थं विरु न जि प निरु घ ष्ठा रि ष कः ॥ ॥ अथ वना ॥ मिथं खं का न जा ख ज्ञा त्य न अ मा य सि
 दि विरा वा ॥ हा न स त्वा रि न द्य ष्ठा च मा य सि दि विरा वा ॥ श्रीखलं खं हा या ॥ अरि ष क णा दि ॥

थनसमनकषुवजयविविय॥ ॥अध्वषण॥वाधिवजसवृद्धानांयथादरुमहासहाममापि
ज्ञाननाथयखवजादिदद्याहिम॥हनाथरुगुनूवाधिवजसवृद्धपूजयनिस्तुगथविलज्जुअथकि
यनिवकाशयकयाकखव जादिवियाथवजारिकविसविज्ञरूत॥ ॥शवना॥
ककलुथार्यिकवंकल्लिषा॥ मठिकिडीकानवजयअपचिनकज्जुमिगारुनूर्यरुनस
ल्लारिन्नकलावजंनमिः गारुलकविचिख्याअरिषकमहावजल्लादि॥ ॥
वजविय॥अद्यादिरिषिः कल्लमसिवृद्धवजनामारिषककथवृद्धकल्लसर्ववृद्धल
गृहवजससिद्धय॥हृक्षिषपनिध्वअरिषकविद्याकसुयिकथागककयलाथथिगुवजारिषः
कथसमलवृद्धयागुगवसवानयाकज्जुमवजकाज्जुगुसिद्धियार्क॥ ॥कथकयानूगड॥

आय. ख व जा शं द दारि म ॥ ह ना थ रु गु नू वा धि व रु हं वृ द्ध ये पे प नि स्र ग थ वि न अ र्थ डि प नि
 न क्रा रु य क या रु ख व रु चा र्थ वि या र्थ वि रु न ऊ प नि स्र ना मा रि ष क ॥ ॥ रा व ना ॥ न द
 नू अं का न च क रं रू रं व ना
 न सि व रु य ष्ठ भृ त्वा ॥
 अ रि ष कं म हा व रुं य धा
 थ न व रु जा रं ना म रु यः
 त्वा म रि षि य मि व रु ना मा रि ष क न ४ रु षी अ म् क व रु ना म रु थ ग रु त्वं रु रू व रु ॥ ॥
 य व रू रू रू रू ख न उ गु लि न ना म रु य म रु क न रु रू ख रु गु लि रु ला ॥ रु मि ना मा रि ष क ॥

यद्यपि विद्यायां वक्तव्यं किं तन्महर्षिः कश्चिन्मिच्छति वक्तुं स मयि सत्त्वं ह्येव वक्तुं यद्यपि अहं अहं गृही
 तासि मया रुग्णवन्मयि सन्निहिता रुग्णवत् ॥ कथं कथा न गच्छति यत्किं विद्या ॥ ह्रीं लं ख न हा य ॥ अं व ऊ
 यद्यपि किं विद्या सत्त्वं महर्षिः ॥ ॥ अन्त्य नैष धर्मस्य सत्त्वं न हि धर्मो न वृद्धिं न च वृद्धत्वं न
 सत्त्वं न वक्तुं वक्तव्यं ॥ हृदि ध
 वृद्धस्वरावमस्य सत्त्वं मय
 दया धिया धर्मो दया बाध
 न कार्यं मज्जिडा ह्यनन्द दय रुडा ना जा धर्म धर्म धर्म रुडा धर्मो दया धर्म धुन्य रुयाडा चो गु
 र्किं धर्मो धर्मो ॥ ॥ अन्त्य धर्मा वाधिवक्तुं वृद्धानां यथा दहमहमहमसापि जाहना

१ अमनारुया ॥ अउ ॥

१ नागवज ॥

१ अरुवालाकिर ॥

१ धर्मवज ॥

१ यर्मवज ॥

१ वज्रकूलव ॥

१ यर्माकूलव ॥

१ सुनतीकूल ॥

१ कनूलाकूल ॥

१ यनयवज ॥

१ सुनगानद ॥

१ अमिनवज ॥

१ वाक्वज ॥

१ अमनारुया ॥

॥ १ अभाद्यसिद्धिया ॥ वाउ ॥

१ अभाद्यवज ॥

१ यनमासवज ॥

१ समयवज ॥

१ पावमिगावज ॥

१ कर्म वज ॥

१ अनि नवज ॥

१ यनसवज ॥

१ ॐ ह्यनवज ॥

१

१

१ धन अभाद्यसिद्धिया ॥

१ वज्रसत्त्वयासी ॥ खिउ ॥

१ वज्रवग ॥

१ वज्रवीनासिनी ॥

१ वज्रमदा ॥

१ वज्रकाकना ॥

१ वज्रपटाका ॥

१ वज्रमाला ॥

१ वज्रादका ॥

१ धन वज्रसत्त्वयासी ॥

१ अक्राययासी ॥ हाकू

१ वज्रनेनाला ॥

१ वज्रदुसा ॥

१ वज्रवलि ॥

१ वज्रकलि ॥

१ वज्रमामकी ॥

१ दधनकि ॥

१ धन अक्राययासीया ॥

खिउ
१ वज्रसूत्रया ॥ खिउ ॥
१ पञ्चमादिवज्र ॥
१ अन्नपन्नवज्र ॥
१ सूत्रवज्र ॥
१ समवसवज्र ॥
१ विजयवज्र ॥
१ अन्नवज्र ॥
१ सूत्रवज्र ॥
१ महासूत्रवज्र ॥
१ अन्नवज्र ॥
१ सूत्रवज्र ॥
१ अन्नवज्रसूत्रनाम ॥

खिउ	नीव
१ वज्रसूत्रया ॥ खिउ ॥	॥ १ अक्रोश्याया ॥ हाकू ॥
१ पञ्चमादिवज्र ॥	१ हासवज्र ॥
१ अन्नपन्नवज्र ॥	१ विनासवज्र ॥
१ सूत्रवज्र ॥	१ चक्रवज्र ॥
१ समवसवज्र ॥	१ लोलावज्र ॥
१ विजयवज्र ॥	१ ललि वज्र ॥
१ अन्नवज्र ॥	१ स्वर्य वज्र ॥
१ सखवज्र ॥	१ वषट्कवज्र ॥
१ महासूत्रवज्र ॥	१ रुद्रकवज्र ॥
१ अन्नकवज्र ॥	१ कर्णवज्र ॥
१ हानवज्र ॥	१ चिरुवज्र ॥
१ सहजवज्र ॥	१ कंकानवज्र ॥
१ धर्मवज्रसूत्रनाम ॥	१ धर्मअक्रोश्याया ॥

स्वर्ग	पीठ
१ वेनाचनया॥ मायू॥	१ जलसूया॥ म्नासू॥
१ ओंका नवज॥	१ जलवज॥
१ ध्माध्वनवज॥	१ चिन्तामणि वज॥
१ कथागवज॥	१ खवज॥
१ मायावज॥	१ गगलवज॥
१ वृद्धवज॥	१ नजीवज॥
१ मृगवज॥	१ मारुतुवज॥
१ कायवज॥	१ शास्त्रवज॥
१ धर्मवेनाचनया॥	१ मानवज॥
	१ धर्मनलसंकवया॥

खर

१ वे वाचनया म्नी ॥ कायू
१ वज्रजकिनी ॥
१ वज्रगोली ॥
१ वज्रलासा ॥
१ वज्रलोचना ॥
१ भाववर्गि ॥
१ धर्मवेवावनम्या ॥

धर्मनामकूर्य ॥ २ ॥

धीन

१ वत्संरुवया म्नी पीन ॥
१ वज्रहासा ॥
१ वज्रह्मासा ॥
१ वज्रहाला ॥
१ वज्रमाला ॥
१ वज्रकाष्ठा ॥
१ आकाशवर्गि ॥
१ धर्मजलसंरुया म्नी ॥

वक्र

१ अमृता रुया म्नी ॥ अ
१ वज्रनागा ॥ उ
१ वज्रजहासुता ॥
१ वज्रवेगोली ॥
१ वज्रवर्गि ॥
१ वज्रहासा ॥
१ वज्रमाला ॥
१ वागवर्गि ॥
१ धर्मजलसंरुया म्नी ॥

स्यम

१ अमाद्यसिद्धिया म्नी ॥ वा दू
१ वज्रगन्धा ॥
१ वज्रवदना ॥
१ वज्रमाया ॥
१ वज्रगाना ॥
१ वज्रनरुह्वनी ॥
१ समयवजा ॥
१ वज्रवर्गि ॥
१ धर्मजलसंरुया म्नी ॥

१ धर्मजलसंरुया म्नी ॥ १ धर्मजलसंरुया म्नी ॥
१ धर्मजलसंरुया म्नी ॥ १ धर्मजलसंरुया म्नी ॥
१ धर्मजलसंरुया म्नी ॥ १ धर्मजलसंरुया म्नी ॥

वज्रं वज्रं सत्त्वं नृपं ध्यात्वा ॥ वज्रं विय ॥ ॥ अनादिनिधनसत्त्वा वज्रं सत्त्वं महानकशासमक
रुद्रः सर्वात्मा वज्रं गर्गापटि ४ पटि ॥ रुद्रिष्यपनि धाहा मद्रुधनार्थं सत्त्वा वज्रं सत्त्वा हाचिं न
सं कया गुणसमक रुद्रयाः ॥ आत्मा र्थं वज्रं गर्गा नाजा र्थं धधिगु वज्र ॥ वजाहिषका
ॐ न प्ररुकि विष्णु द्युग
त्तराव वज्र धा न निरयमनी ॥ न द न आ ४ न ऊ द्य ६ ॥ ॥ ॐ यं सा सर्व वृद्धा ना द्यः
६ ॥ धा धा नृग स्रगा ४ त्वः ॥ यायि हि सदा धार्था वाधि न र्गम कि न र्म गा ॥ रुद्रिष्यपनी
धद्य ६ स क ल्यं कथा ग र्ग द्य ६ ॥ धा दा धा द न मन हर्ष मान रुद्रा ॥ धधिगु द्य ६ ॥ रुद्र न र्म न सदा
धन न यि ३ कथा ग र्ग या म क रुद्रा ३ ना द्य ३ ॥ ॥ नृग न र्म कि ध र्म र्म र्म स रुद्रा द र्म नादि

अथ वक्ष्यामि वक्ता चार्थरिषकं शमयं दहि कृपानिधौ स्वप नार्थसमर्थस्यां यना हंत त्वत्पसा दकथा
हनाथ हं गु नू वक्ता चार्थरिषकं जियनिरु विरु न कृ ल पा ल द या व क न । थ श क म व या क स म र्थ
या क न ग थ जियनिरु वाः कृ न कृ ल पा ल यो प्रे षा द न ला य रु ला ॥ ॥ रा व ना ॥
हिथ व क स त्व नू पं वि राः वा हिथ स र्वा लं का व रु षि र्क ड कि र्क कृ ष थ क वि ना न यः
टा का लं कृ क पूर्व द्वा न सिं हा स न रु वि चि त्रा कृ द ल क स ला य नि व क स त्व नू य षा व लं थ
॥ ॥ ॥ ही ख लं ख न हा य ॥ ॥ अं आ ॥ सर्व क था ग क अ रि ष क षा म धि य र्क ॥ ॥ न मा अ का र य मी
लि न वि चि त्रा य न क था ग क द वी रु थ व ह्ना न स त्व नू य न य वि ष ॥ ॥ ॥ मि म कृ षा धि षा य ॥ ॥ क स
पू षा दि कं द या क ॥ ॥ म कृ ट या य क ॥ ॥ स प मि षि क व क स्वा हा ॥ ॥ व क न मि व क ॥ ॥ ॥ क द नू र्क का न

तु कथाग, ध्याता लयध मूडा ॥ ॐ कि हान मूडा मधि छा य सर्व भौ पे ला ग क ॥ ॐ कि द्वि स म य रा
 धन द्य ल स म य ॥ ॥ धन द्य ल स म य वि य ॥ ॥ ॥ क र्क प न मा य म क ॥ व र्क क ल न स ग
 क, द्य ल ध र्म न वा य क ॥ स म य न म ह मू डा, अ धि छा य द द क य दि कि ॥ व र्क का यान
 क ल, द्य ल धा न ध र्म स द, अ लिंग ध मू डा न स म यान द र्क न, अ धि छा न या डः
 नू ग ल न धा न न पि ड ॥ ॥ रा व ना ॥ क द न अ चार्य ४ स्वरु द्वा क वि नि र्ग क द व ना व
 द ना का धा ल, न रि धि चः मानं वि त्रि ल ॥ ॥ ॥ ख ल ख न दाय ॥ ॥ अ रि श्व क म ह
 व र्क, अ धा क र्क न म स्क र्क, द द मि स र्व व द्या नां, पि ग द्या ल य स र्क व ॥ ॥ रु मि य य नि अ रि ष क र्क
 धन म ह व र्क धा ल व, पि रु व न न, आ पा ग क या गु, स म स्क धा ग क या ल क र्क द न जा य ल य गु

द्वि

दानं तथा गतानि धिशा जनाय ॥ वृत्तिश्च लोहितक ॥ ॥ धनमिषां यत्तथा चक ॥ मन्त्र ॥
स्वरावधुक्का हिरुव ॥ स्वरावे विरु वी कन ॥ स्वरावधुक्के ॥ सत्सत्वे ॥ कीयकपनमा रुव ॥ य
स्वरावधुक्के रुयकया न ॥ थडा लावमदूगु दयकया क ॥ थडा स्वरावधुक्के या य ॥ रिंक
गुप्थर्थन सत्सया यं ॥ रुयकया क ॥ ॥ आलिगधमूदाया चक ॥ कदनमूदा
हि ससय ॥ प्राकामना मूः ॥ रिदृढत्वक ॥ सर्वमूर्तिदृढाय न ॥ कनमूदाप्रकीरिता ॥
जुमा मूदाया ससयधक ॥ क ॥ मननधनलया ॥ मूर्तिधधध ॥ काकु कनयानसर्वमूः
रि ॥ थकनमूदाधक ॥ धाया ॥ कल्पनाया क ॥ ॥ प्रक्षयाय सयं ॥ कि ॥ महासूखात्मसंवृद्धि ॥ स्वरा
वदृढया ग ॥ धा ॥ नायमूदाससय ॥ ॥ कि ॥ विवमय ॥ महासूख ॥ नीजवृद्ध ॥ थडा स्वरावहि न ॥ का

न. स्व नूय मिदं कृदांश नमि कि. म सुलस्य कत्व विष्णु द्वि ४॥ गु ॥ य च सुलस्य ४॥ मा स न. य च वृद्ध
 यु कल्पि ता. ॐ स्य वे व स्या रिष का. य न मा चार्या रिष क ॥ य च ग न्ध ॥ का ला न. य च वृद्ध कल्प ना
 या या थ क दू य म दू अ रि
 कत्व विष्णु द्वि ४ य न मा र्थः
 कत्व विष्णु द्वि ४ स य नि क न
 ॐ कि आ चार्या रिष क विधी ॥
 गु वृ न य द य ॥ द ला सि म या रु ग व न् अ स्मि न्नि हि मा रु व ४॥
 का सि म या रु ग व न् म यि स न्नि हि मा रु व ४॥ रु स्य न. म रु क न ॥

य क. ड रु म आ चार्य या रिष क ॥ ॥ ॐ स्या दि नां द वृ ना नां
 सु म सु ला दि नां. क म द य पि न १ स्य रा वा लि क. क थ के वः
 म सु ल लि ख ना दि का चार्य य नि क र्म च क थ म रु ॥ ॥
 थ न जा य द्वा य ॥ रु स्य जा य या रु न क्षि ष्य त्वं वि ये ॥ ॥
 ॥ क्षि ष्य न भ्रा य क ॥ गृ ही
 ॥ क्षि ष्य न. ज य या च क ॥ ॥

अरिषक जि न वि य कृ प नि स्तु ॥ ॥ अं आ १ सर्व क भा ग क अरि ष क स म थि य दं स्वा हा ॥ ॐ न्रिय
० न्रि षि त्वा कृ ॥ क मा २ क्रा स्य भो लि नं वि चिं त्वा अ य न क था ग क दे वी रु द्रे व ह्म न स त्वा नू प न य व
॥ थ न मि षा त्वे च न न क च क ॥ अं स प्र मि षि क व कृ स्वा हा ॥ रु स्यं पृ ष्ठा दि पू जा ॥ ॥
ख क न ॥ क था चा कृ पा लि त्या रु स मा लि ग प्र ह्म वे षा उ षा दि कां ॥ य ष्ठ व कृ स म या
जा गा दा चार्य स च नं म क मि कि ॥ रु मि षा ना हा क न यां आ लिं ग क्ष रा व कि म षू द र
सु ख रा वा य ष्ठ व कृ अ था ग या क न आ चार्य या व च न म क ॥ ७ ॥ म धु ल य म मिः
त्य कं म ना म धु ल मू र्ख मं कू टां गा न मि कि ह्म नं चि रु कू ट स म कुर्यं ॥ म धु ल य म धा नं नू ग उः
न म धु ल उ रू सा कृ प नि स्तु न थ थ सि य थ अ म न कू टा गा न कृ नं ॥ ॥ क क १ स कृ प भा वे ना चः

रावना॥ अंज्ज ४ का नई, क्षिप्यं दर्शयित्वा॥ क्षिप्यं कर्त्तुं कन॥ ॥ यकि विस्वस माधर्मा, अस्मात् सदा
 क्क नाविला॥ अया अय नरि लाया ध्व, रुकु कर्म समूह वी॥ रुक्षि षाप नि, कर्त्तुं धर्म द का च वस
 रि न, वल स श अ, कार्य मः ॥ जिअ, ज्ञानं स जिअ, धर्म ड त्य हि श य व ॥ ॥
 द र्प एव द क स ल, स रुकु
 कि व द न॥ द र्प ए रि ष क ॥ ॥ राव ना॥ क का हा ४ का नई ध न, हा नि कि य ० न द या न॥ ध न
 वि य ॥ अं सर्व क था ग ना न ॥ ना ग य ल ॥ क्षिप्यं धाय क ॥ अं सर्व क था ग ना न ना ग या मि ॥
 थ न क्षि षाप नि स न, व ला इ य का अ रु वा क दू य क, ऊ अ क थं मि ऊ, ख अ क थं मि सा, थ सा च क, क सा च
 कं छा च क ॥ ॥ य ह ध न स मा ख्या ना, ड या य गु ष ना स मा, हा न ४ स रु कु नू य स्था नू, वि ध वि क ल्य

ॐ किमकुसुमसर्प एविधिः॥ ३३६ ॥थनलं याथल यल कलि भाह निजा या अस लाकानः अऊर
 नारिष करिष्य॥ ॥रावना॥ ककठिष्य सचक्रुः पंका न ध्यात्वा ह्यं वरुन गाय ह न पट
 लं की॥थनक्षिष्य यामिखा सकुल न डलं॥ ॥अह न पटल वत्स अयं नी क डि
 नैरु वग हा ला का वेश ना ऊन ऊ था ला क स के मि वं॥ दक्षिष्य य नि अह न न मिखा
 स यिलि न पृथ्वी चक्रुः अ क मि स क था ग न न भा च क ल॥ ग थ हा मु न वेश य निः
 स निखा ष क ग था ला क न मि खान र व न थर्थ क प नि स न ॐ ह्य न या ध र्म र व न॥ ॥
 अह न पट ला य न य दि व च क्रु न रि ष का ल्य रु य॥ क प नि स न अह न मि खान र व न क मि सः
 दि व च क्रु दृष्टि श ना थर्थि गु अऊर रि ष क थ॥ ॐ कि ऊं ऊ नारि ष क ॥ ॥थन क र्क विय॥

मसुखप्रदां। मया कामसुखार्थं कृत्वा नाथ कृपां कुरु ॥ ॥ रावना ॥ कथा गुन च कथा हं क
 नवानकया प्राकृतं श्रीनृपसूनुना कर्तुं निष्ठादिव ४ दवीनृपाया वरुधर्मसंस्तेन पूर्वकं
 समायेहि कुरु नभः सर्व
 स्मानी कृत्वा च नादिसमा
 हा ना ग्वनदवी लुय अ व
 नोमिका र्या वरु स हि य पी
 लारि न स धि म च वा ग्व नृ प हि षा स्य द हं ना कृ पा अ य सा द हं क या व द्वा न्ध य ट ल्वं न क रु प्र व
 हानी य ४ का नृ पा कृ स पू षा ऊ र लि ॥ थ न हि षा ऊ अ प ल्ति च या र व अ थ का या हा थ ऊ क ल य क र्ण

नाहानं॥ रुक्षिष्यपनिक्ला रुकया दू. प्रह्ममिसा. धनू धाय उपायमिजन. लिं गवनथथसिय॥ वः
 लासंया गस्वराव. सहजान द. स्वरा वन. ह्मना न. समरु मा न ना स श ने॥ ॥ चरु मा न विज
 या. त्सू क धर्म धां रुल कः प्रकि द ध. वी जा ना य ना य. धन क य धा॥ ॥ किं धन क य विधि
 ॥ ॥ किं द धा रिष क विधि ॥ ॥ थन पा रु क गु म्म रिष क विद्य विद्या रु का. यं ह्या य. गन धा
 य॥ थन प नूष रु का गु नू म शुल द न क. ऊ ध य न न च च क. रु जा ल य क य क॥ ॥
 यूषा त्या द प्र धा द न प्रा क मञ्जु नू रु न क्रिया। क ह्मा गु म्म रिष क न. कू न ना थञ्जु नू ग रु
 ॥ रु ना थ रु गु नू. हल धा ल या. पा द प्र सा या क न कि मि स न ला य धू ना. मा रु ल्य म दू गु ऊ रि. धा य॥
 थ रु का न धा स. गु म्म रिष क या रु न. गु नू या ऊ नू य रु न॥ ॥ ॥ मा नि यी कि मा रु ल्य. सर्व का

वाधिविरुचलपयाग॥ घटपक॥ थनरुस्यंभूनमनुयदपं॥ क्षकिनखअजगुलीमधुघृतविम्वनक
 ॥ यानज॥ ॥ गीत॥ नाग॥ नाट॥ सरुज॥ नाजूरुदूवनायाशंशुशुवननाथदहिविना
 ॥ ॥ ध्रु॥ शुद्धयिमहान
 सगुस्कारिषकद्रैकमलकूलिर्षाङ्गसम्वा॥ नक॥
 हानक्षननूयिनीदवीविः
 ध्ववायिनीशंकिदकिहाननामहासुखदागा॥ नक॥
 उद्धाशयनादिनूधियाप्र
 वक्षशंयाहविन्दूनसमहासुखदागा॥ नक॥ गुनूपक्ष
 दअनूरुनक्रियाशंदहिम
 मागासंसाजसमूदा॥ न ॥ ० ॥ उपायनधानक॥
 अहामहासुखमिनि॥ आचार्यमहासुखस्वनिथयिगुसव॥ ॐ किप्रह्मापायथाहसंवृत्वाधि
 चिरास्यागुस्कार्यागुस्कारिषकनवाग्वर्जविष्णधयकु॥ ॐ किगुस्कारिषकविधि॥ ॥

× नज ३

गुन्याकअधमना॥ नि ॥रुगवमहाक्षकवजयालोककल्पनामूद्राप्रसादकारणयवज
यागसमूहव॥रुगुनरुनाथकअधमक्षकमनःअरुघसंरुक्तयादाजवाकचरुनमूद्रायाप्रक्ष
दअरुगुनसवजयागन
नूकडगीससा नयंकसंघा
रुनधर्थसमाधियास्यविः
सइकाजवाकधर्थकलपा
॥ नि ॥वृक्षपूजायथाकीकसिकावजधनादिरिसिंचासित्वाकथावत्सवाधिनिरुनचानूक्ष
॥वृक्षपूजयनिरुक्तपाशयापिसंगथलघविनवजधनआदि॥लघवियथथरुमिषयनी

[illegible]

गुनस्त्वर्थवत् ॥ ॥ कथायुक्ता दयसादन्यासगुणमनुरूपं । प्रह्लादाचारिषकन
 कृष्णार्थानुगुहं ॥ रुनाथरुगुनकृष्णालनसंस्तुत्या दयसादया कनलादा गुणरिषक
 कथाधनख ॥ रुगुनरुनाथ ॥ प्रह्लादाचारिषकविक्रान्तियुक्तिरुनग्रुनया ॥ ॥ थ
 नअधयननकाककाय ॥ ॥ ॐ यनं धानही नम्या स्या वक्ष्ये कल्पिना । चक्रक्रमप्रः
 यालनसमास्तु दयसस्तु ॥ ॥ रुनाथ ॥ धनधनलपशिं ॥ धनधनधि
 इनकल्पनायादकयागु ॥ ॥ चक्रयाकथं स्या नकाडा रिगुसुखनं स्या दययकमानं
 ॥ ॥ सायिकं कृमचदनविलपिनं ॥ अगिगुगभसंगभिः कुरुसमा ला ॥ ॥ रिगुनिर्नवजस्व वा
 निरुहं मयकषु मयदक्षि ॥ ॐ दं वया ॥ ॥ ॥ श्रीनधायक ॥ किं त्वमरुहं सवत्स विट्म

अंसर्वकथागगान्नागनवजस्ररावात्मकारु॥ मनुमावरुयन् नकिमानरु॥ ॥ वज्रयश
 प्रकिंसाया वाधिविरुनवात्सज्जु॥ कारुयित्वा नवात्मानं चिरुमत्याश वाधयत् ॥ रुक्षिष्यपनि
 वज्रयशसंस्त्रयनायाय
 त्यरुिश्य ॥ ॥ याव
 किं न किं मर्या नंदरुस
 लायुत्र चरुमवस्य सुख
 सिद्धिनिधानक मूर्द्धि कस्तुविहान कूटशिक्षि ननिन्दिता ॥ वाधिविरुयकनश्यया
 क समरुसिद्धिया थल मूर्द्धि गुलिविहानस गलयासिद्धि कूल ॥ प्रहसं पकं कणी मान् नत्वं

इत्यनेन

पलविधिर्ध्यायान् वदन्तान् ॥ ॥ कन्ययश्च यथा कार्यं सर्वज्ञानाधनादिकं स्वयं महासू
 खनाम्नाः पूज्यं वदन्ति सदा स्मिन् ॥ या आयश्च स कार्यं वदन् आनाधनादिभ्यः मथ्यथ मनं सूखया नोर्ज
 धनसदां च ॥ रुक्मभाक् ॥ ॥ रावना ॥
 स्वयंदवनाः श्रीसम्भवं म
 नारिगुम्भाजान् पादयथा
 ॥ ॥ धनपदपात्रप्रहयात्वा हातन
 याः किंजल्कमोहिः ॥ ॥ अंजुनिकः ॥ वज्रकृषिकरुक्का नं विराच ॥ वा मा र्या गता नादि मयस्क
 नक्रीः ॥ का न या स्मिन् ॥ रुक्मभाक् ॥ का या च या वरुणी ॥ का न पूर्वकं स चाल्य ॥ अंजी ३ रु ४ स्वाहा ॥

अरिषकस्य कारिन् सस्र न कुरु सप्र का क्ष लं आचार्य शुभप्रह्लाद न चरुथा रिषक कयः यः
 माह्वार्क ॥ ॥ य न मान न्य हर्व प्रा कः निर्वा न च वि ना ग क १ मध्य मान न्य मा शु रु स रु जा म
 विधिय क ॥ क १ धं आ न द र ग धा ल् निर्वा रा ड न सिय व न स ना रा दि मा ल क ॥ मध्य
 मान न्य मा शु रि स रु जा न न्य ध क धा न ॥ ॥ अ ना दि नि ध नं धा नं रा वा रा वा ल
 का वि रु १ १ न्य का क नू धा रि न् वा धि वि रु मि कि स्म र्क ॥ आ दि अ क म दू ध न थै स य
 म दू दू थ म दू थ ॥ आ का न म दू क नू धा म य वा धि वि रु धा य थ धि दू ध क स य ॥ ॥
 ज य कि स्र ख ना ज न व का न ध हि क १ स दा दि का ज ग र्क ॥ क स रु नि ग द न स म य व च न द नि डा वः
 ह व स र्व रु १ ॥ ज य क ल स्र ख ना जा थ हि क स रा व गु श्वा रि ष क ड ल्प हि रु डा थ री सा न स म नः

संनमनकयक॥ वज्रपर्यंकचिरुसन्तनकर्मिकयक॥ वृत्तिप्रहारीषकविधि॥ ॥
धनमलुलविष्कर्जनः शक्रदूलविह्वलायनिः थअरथार्थक॥ ॥ ख॥ नारिषिकाहिया
यागीयागित्वं अरिवादि
हखमलाकननः थयागः
हानिनः सुमिका लाभाद
निमिरुहयकगर्भः वा
थसः लखदधकसिय॥ गवः सुदुआ चोदथसः निमिरुदधकसयः वाधिसत्वया वृद्धिमर्कथथ
॥ ॥ अरिषकविधिधरिन्ः अस्मिन्कयप्रकाशिक॥ अचार्यगुप्तप्रहचः चरुर्थकत्यनकथा॥

कृमिसनिमृष्टः पूनूषयां कथाशकसाक्रियादा ॥ ॥ ज्ञानायायनवृद्धत्वं दुर्द्धवदंजनकय
 ॥ कल्पाद्विद्याशमनसा साकाचित्वं कदाचन ॥ प्रहयायेय नानैसंमदः दुर्द्धविरुवनसं ॥ थस्य
 क्षयनाकदाऽऽप्तिपूनूषः वायममंजः क्रिसाक्रियनिगा वनसं वायमद ॥ ॥
 वृद्धकल्लववृद्धनीविशा वृकमनूरु नं ॥ अक्रिकामक्रियामृष्टः सिद्धि कस्य न चौरः
 सा ॥ थक्षयसमस्त कथा शकयां विद्यावृक मडाधर ॥ अहानिम्नन कृकनमदयक
 वायुऽथ मया कसिद्धिम दयित ॥ वृकिवदं च विद्यावृकं दशाक ॥ विद्यावृकं न विधि
 ॥ ॥ रावना ॥ कदनूषीषी वज्रसत्त्व नृपं विरावा ॥ ॥ वृद्धकल्लववृद्धनी वज्रसत्त्व
 वल्लिकं ॥ त्वयापिरि कथाधारा वज्रयाहि दृढवृक ॥ रुषिष्यनि थ वज्रसमस्त वृद्धयागुणव

यथार्थं ॥ असकलसमयवचनरुक्तामदृष्टाकर्मनिर्वाण्य ॥ ॥ नरुं वादिगुनकहि नरुवसाः
 रूहीहासदुजावस्तुअवसुकासकहिअयिकीहाशगसागुसंम्यक्तगुनमा नाधसकिष्ण ॥
 ॥ गुनरुमलाकथननिन विषयमथथमनीसयासदुजानवसुथं सुखयदवुध
 वयामय ॥ ॥ अशमस रुलजन्मसदुलजीविनचमेअशवद्वकलजाभावद्व
 पूजास्मिन्साधुनं ॥ ॥ वृत्तिच कुर्थाविधिविधि ॥ ॥ गुनरुमलाया नाहाककास्यपूनुष
 यालाहाकसवियगुनरुः यद्वजाठनखडीलाहाकनजाद्विषयपनिमजडा लाह
 कनवजजाठननिमसांभाउनायनाकनस्यवजनाथिस्यसाक्रिथायसिहं लय ॥ ॥
 साक्रिनाययमकुसमर्थिगुरुसमयकिरुथागकनृसाक्रिकुरु ॥ ॥ विषयपनि साक्रिकुरु

पंविचित्रा। कस्मा कस्मिं वा श्रवी ऊ। मयूषे नानिर्ग ह्यनय व तां प्रवक्ष्या॥ आ. पा. नि॥ ॥
 मूडास. स्वा न क स्या. रा व ना॥ गी क हा जारु न क्ष॥ ॥ च की क क्षु ल क ष्ठि नू च क म ख ला. रु
 स्मा क्रा र्य. अमि ना रु. न ल
 चित्रा। क कु ह्यन स ल्व क था
 दि मू डा ४ अ क्रा र्या दि. स्व
 ध ना णि य ल्व ड था न ॥ म
 रु रु. नू नू क. रु रु. फ र्ज कि नी जाल स म नं स्वा हा॥ छि ऊ र्फ ॥ रु स्म ड पा य ॥ प्र ह्य. सिं धू न ॥ ॥
 व्या प्र च म ॥ अं ३ स र्व वृ ष ज कि नी य. व ऊ व रू. नी य. व ऊ व रू. ना च नी य रुं रुं रुं फ र् ३ स्वा हा॥ छि ऊ र्फ ॥

सुखीकृतं॥

वज्रसूत्रया ला कृत्वा ननु॥ किं लयनिश्चयवलयीजः वज्रया हिंका रुक जाना कया वज्र॥
वज्रवियगं सर्वं कथा गन् सिद्धि वज्रसमयं न खदा धा नयामि वज्रसूत्र की १ हि हि हि हि हि ॥ दृढ
सा नमसो वीर्यं मय्युद्युत
पथं न गृहीयात् ॥ वज्रवृत्त
न क॥ गी क वा माद हि न॥
सूद लय मया या अ म्द्रा क
रावना ॥ क मा भिष्यं सन् न नृपं वज्र वा ना हि नृपं विरा वा ॥ स्व कृ द्दी ज मयू रे जा नी क ह्य ने द वः
की प्र व द्ध ॥ या रु या मि तां वज्र वा ना ही नृपां पू ष्य पा ना नृपा द वी नृपं वा पू नृपं रु धी सन् न नृ

वीन नूचकं ॥ ध्वनात्मकं ॥ धीवजसत्त्वस्य मूडयं वहिर्न ध्यात्मसंस्क्रिता ॥ ४ ॥ भखला ॥ अं ईं कीं
 प्रसाधकं कं फट् स्वाहा ॥ अं वं हां थों कीं मां कं कीं कं फट् स्वाहा ॥ त्रिजपं ॥ गृह्ण दलमनावीन भखला
 प्रमासिद्धि नूयिर्न धीवज सत्त्वस्य मूडयं वहिर्न ध्यात्मसंस्क्रिता ॥ ५ ॥ नोपनूचक
 मूड हा ना व लो मूडुमाला दिस्सस्स न ॥ अं धीवज हं नूचकं फट् जाकिनी जानस
 म्वर्न स्वाहा ॥ मज्जपात्र ॥ अंकन प्रचक्षु कं फट् ॥ ॥ खद्योग उमनूपात्रं न मारुग
 वरुवीन वीन ध्वनाय त्यादि ॥ त्रिजपं ॥ गृह्ण दलमनावीन खद्योग उमनूपात्रकं धीवजसत्त्वस्य
 मूडयं वहिर्न ध्यात्मसंस्क्रिता ॥ ॥ उमनूखद्योग पात्र आरु न ह स्तान्नाय थ व न स चकम
 ख सिन्दूरी वागा कक्षुप्रकाक काखागादि न स्तय कृण न चादखाल वलिविय ॥ लावना ॥ थ न

मिनसिचक्रि॥ अंधनरधानय२मर्द्ध२वजधृकं फट्॥ धा३॥ ॥ गृहदलामनावीनचक्राज
क्रास्यात्मकं श्रीवजसत्वस्य मूडयं वहि न ध्यात्मसंस्क्रिता॥ १ ॥ कृष्णलक्ष्यं॥ अंधनधर्मसम
यद्धं॥ नू२आनालिकं
वीन॥ कृष्णलक्ष्यमिनाराक
कल्लि॥ अंधनसूर्यकभावि
किनीयत्यादि॥ प्रिऊफं॥
त्वस्य मूडयं वहि न ध्यात्मसंस्क्रिता॥ २ ॥ गृह
धमय॥ समयत्वं॥ नलाधृकं फट् स्वाहा॥ अं३ सर्ववृद्धज
॥ गृहदलामनावीन॥ कल्लिका॥ नत्वसंरुवात्मकं श्रीवजस
त्वस्य मूडयं वहि न ध्यात्मसंस्क्रिता॥ ३ ॥ नूचक॥ दयं॥ अं४ ध्वनयनम॥ ध्वन॥ प्रध्वहि॥ किनः
कि॥ कं॥ फट् स्वाहा॥ अं५ नम॥ हिस्वाहा॥ कं॥ वाघट॥ कं॥ कं॥ हा॥ फट् स्वाहा॥ प्रिऊफं॥ गृहदलामना

वाक्कुलिका लेया किदकिह नूव अर्क रू व रु ल न स स र ग ॥ ॥ स रु ऊ र्म ह रि ने या ग व कि
 क र्ण या षी ह नू व च न हा प्र ष्ठा द रं प्र हा आ लि ग हा किदकिह नू व वि ना स रि षू न्य क नू षा ॥
 ॥ ॐ ॥ ध न ध व र थ स स
 य क र्वा ऊ या न ल हि च क ॥
 ऊ न ॥ मू डा क क ॥ गी क ॥ मी
 य क र्वा न न न क वि स र्जन
 क क ४ च र्वा न क मा च र्वा ॥ ध न लि आ च र्वा द वा व न न नू य न चान नी व न क सा ग न द या ड ग व
 क र्वा ला हा न न जा र्वा ऊ ड ला हा क न अरु य मू डा या य ॥ ॥ उ षा र्वा क न मि त्वा व रु

नमो भगवते वासुदेवाय

लिखानमा लाजा रंख हं गं विनम्र थि स्यं मूल मनु जाप या यस्नानमा ला थ शि नमं दिन ॥ यं ला
यं रु क ॥ समय खाऊ द व रु क य ॥ विषय लं न क ॥ थ न म धु ल दू य क दि ग व व लि वि य ॥
गोक ॥ नाग ॥ गव उ गी ॥ च
न मा ला रं वि नं च कि च की
य ल स यो ख न दू य धू वा स
या रु ग्य ना थ श्री स म्ब न ना
॥ ॥ व रु क ना ठ क हा थ ध नि या क लु कि या उ ख हं क रं स पू रं या गि नी क म ल वि हा रि
ग ल म हा सू ख म नि प्र ण द ॥ ॥ व रु वा ना रि आ लिं ग ह स म्ब न ना च यि व रु वि रु न रं ग र

पंच

नाच धर्मही ख स नरु न॥ थ नि नि स्यः कृप नि प्र रु कि स क ल्यः स हि न वि रु उ त्प रि कृ ड मा रु
 ल धर्म च कृप व रु ना या ड ॥ प रू या य या रु स क रु न धर्म ही ष ड रु ल्य म दू ॥ ॥ रा व ना ॥
 च वं सा मा न्या न रू द त्वा ॥ ॥ थ नं क थ ग रु चि ॥ ॥ थ धि का न रू द द दि रु य थ क म सि र्थ वं ना च ना दि नू यं
 ध्मा त्वा ॥ थ नं क थ ग रु चि ॥ ॥ क वि य ॥ ख ॥ ॥ सर्व स त्व दि ना र्थ यः सर्व ला क षू सर्व ग
 य थ वि न य र्थ वि र्व धः ॥ ॥ र्म च कृप व रु य रु ॥ ॥ रु षि य प नि स क ल्य प्र नि हि क या य
 या रु स क ल ला क र्म स क ॥ ॥ रि न ग थ वि न र्थ सर्व र्म सा न र्म धर्म न प्र कि पा न या रु अ
 र्थ धर्म च कृप व रु ना या ड ॥ ॥ ॥ प्र रू पा य स नू पा त्मा वि ना म हि नि वा न्य के ष अ क्रि ता
 वि ग ना र्ग ग रू ल्प र्थ क नू र्ग प्र र्ग ॥ ॥ चि ना म वि रु क्थ प्र रू पा य स नू प आ त्मा रि क ड रु य म

सत्त्वकथागकशरुवदूर्गकिनाकुसुमः अरुवदूर्गकिनाकुसुमः ॥ हृषिष्यपनिःस्थमृजिनवनप्रक्षदवि
यवजसत्त्वकथागकशरुवदूर्गकिनाकुसुमः अरुवदूर्गकिनाकुसुमः ॥ हृषिष्यपनिःस्थमृजिनवनप्रक्षदवि
कनक्षविधिः ॥ ॥ यन
रुंधर्मचक्रं अं वज्ररुंधर्म
ददामि आदि ह्वनयूरुं ॥
नाथागात्सर्वयसमनाः
अडर्थां चोदुलकक्षमदूर्गभावमुक ॥ आकाशवसमयोगयाकं समरुयाकानं समरु
नप्रकाश ॥ ॥ अथ प्ररुगिरुचिरात्मादमाश्रयधर्मचक्रप्रवरुय ॥ आपूर्यहिः समः

गीतवचनकनसर्न॥ ॥ ध्यावकया नमसि करि कार्यं रमाथ च निवेने अथ कत्व च निचनी॥
 ॥ वृद्ध च निचन वृद्ध गुह्य संशं कनिना दूरि क स्वयं रु॥ ॥ वृद्ध रुय न ऊदापविभ
 क्रिक कन वृद्धं वृद्ध विरा व न या विय नी क सि द स क ल ॥ ॥ क ना रूं रूं क ना रूं रूं
 रूं क ना रूं रूं रूं ॥ ॥ ० ॥ म क स गु गु व रूं ख न ड गु सि कि न थ रूं क या ख क ठ वि
 य ॥ ॥ म ध्या ॥ रूं क ॥ वे ना च न ध्या ला च रूं रूं रूं ग म ह न रूं वे ना च न स्य गिरु व
 चा नि ॥ १ ॥ स म नान मा हि का न भा हि का नां पा च ना य वे ना च न स्य स्व रूं च रूं ॥ रूं ॥
 क्रिकु व न या द व पृ प नि रु आत्मा न का या रूं चा रूं पा य स क ल रूं क का ड स म स स त्व ड द्याः
 न या हा व चा रूं थ थि गु च क रूं धी वे ना च न रूं प नि रु न का या क रूं पा य क्षा ॥ ॥ प रूं स ॥ ॥

सूयकिमलिक

मानवमुक्तः आशु धर्माः प्राप्तिर्यार्थयाशु ॥

॥ धनमिष्टानधायक ॥ जवंकनिष्ठाभिय

आह्वययकिप्रभु ॥ हृगुनूहनाथः कुलपालस्यं गथ आह्वयकः धर्माः कियनिश्चनयायक ॥

थनकुरुंकायक ॥ नदन

वंभावनादिनूयनवलन्वितायः षिष्टायः अनूहदशक

॥ ॥ लं चकनकिचक ॥

हृष्टीः अमूकवज्रनामः गथागकसिद्धिः समस्तैः कुरुवः ॥

॥ धनमिष्टानधायक ॥ मष्टुलदूय

क ॥ गुनूयाखनदूय ॥ गीकः सूयकिमलिक ॥ दिगमः गथाग

कचिकविद्य ॥

॥ नाग ॥ काठि ॥

सूयकिमलिकः मष्टुलचक्रं शंडकिं कुरुयताकविकानं

॥ ॥ सूयकिनादिकः कुर्यमनकं शंकरदन्वगीकवनेलमनारु ॥

॥ यः खूयात्मक

सर्वविर्जः शयं रयः कः नाटकचिरकदिवा ॥

॥ याः प्रादिः कुमरासूखनामाः २ नृस्यं

कुरुं कुरुं

सहा धर्म ए जागि क्षीं महा जा गरु मां ममि कारुण्य न कय दं ॥ ख ॥ छिरुवनया दवयूय
 यनिरु वल विद्या अ चा रु गु धर्म व न स मरु ना ग द व का म का रु मा या भा रु रु क का वि
 अ क म् जा हा जा य म दू गु थ थि गु य म् श्री अ मि नारुं रु य निरु न का या क रु पा य ॥
 ४ ॥ ड रु व ॥ अं अ भा य सि धिं ध्वा त्वा वि ध्व व र्जं व जा य म दू नं अ भा य सि धि न
 स्ये व् छिरु व चा नि निरु स्य क्क षा क या र्थ अ भा य सि धि न पि वि ध्व व र्जं ॥ ख ॥
 छिरुवनया दवयूय यनिरु ग थ्थ न का या क या य म क लं दू रु क मा क ग कि क्क या अ रु
 च रु दि ग यां रु य ना षा रु अं गु थ थि गु वि ध्व व र्जं श्री अ भा य सि धिं रु य निरु न का य क रु
 पा य ॥ ५ ॥ गी क्क ॥ क्क ॥ क्क ॥ ग न मि द न रु छिरु व न न प्रा नि ना श मि रु ना च क्क ध्व न सि न्

ॐ अकारं ध्यात्वा वरुं गगनगच्छ हाना कारस्य अश्वे वधिरुव चा निधी कस्य अश्वय कारं प्रा
प्त्यर्थं अकारस्य कलिं ॥ ख ॥ तिरुवनया द वयं य निरु अकारा अश्वे न र्गु कलिं व
रुं ना कालाय मद्गु वरुं सखा या य मद्गु वरुं श्री अकारस्य न कृप निरु न कारा क
रुपाय ॥ २ ॥ दक्षिण ॥ ॐ न त्र स र्क वं ध्यात्वा न त्र विमल हर्न न त्र स र्क र व श्वे व
तिरुव चा नि न कस्य दृष्टव ना धन स र्क र्थ न त्र स र्क स्य न त्र ॥ ख ॥ तिरुवनया द
वयं य निरु गथ स र्क र व न क जा क ली मा न वी र्गु न त्र विरु ग स क ल्य रू न का थ स
म र्क स र्क स य रि ना क गु थ थि गु न त्र श्री न त्र स र्क व न कृप नि न कारा क रुपाय ॥ ३ ॥ पश्चिम
॥ ॐ अमि नारं ध्यात्वा न कृप र्म सिं ह वि की ठि क हर्न अमि नार स्ये व तिरुव चा नि धा नी ना व र्ग

अ सर्वकथा आशुलयाः आचार्यशुभाः सकुरुधर्मलयाः वृद्धयागुवाधिसत्वया देवताया
 गुं सकरिर्न विधियाय ॥ ॥ सत्वा नाम नृकथार्थ विधिना मधुलं त्वया ॥ लिखित वीप्रयत्न न
 कुरुयाश्च साधकाः सम
 निष्ठाः चोयगु यत्न न कुरु
 रुशारुमम धुलं सर्वयाय
 दानं द्रविर्गम अधि न हस्य
 कंचान ॥ ॥ नरुयाश्च वनकस्त्रि नाना दस्मात्त हा मखागु निर्वृर्गुरु वदृखा नः अत्य करुव
 धुद्धय ॥ पूनरुर्गम माथा धमा हा या नया कं मूकिस चानिज ॥ मूकितान संसा नया दृखदूत

मानूखो विषया ना कानि न आदयः नूपा शान च धर्म कात्मकं मा सुलया ॐ म विष्णु मः
 सुल चक्र नायक नयक नरु कि मूद्रा मयि ॥ ॥ थन लि जा चार्थ आस मस रु कु क नि न
 क व ये ना या या ॥ पू न धर्म ॥ द रु न व रु न त्र प द क म ॥ द प्र क या क पं च धा या थे न न
 रु न ॥ द द या क ॥ स र्व दि त्वा व द रु ॥ थ न क रु न क का च का आ गु नू या क ल ङा क्ता य ॥ ॐ
 कि अ नू रु न वि धि ॥ ॥ थ न थ ॥ २ थ स र्ग य ॥ र व क न ॥ ॥ अ र्थ नि व दि क ॥ ६ धि य
 क रु धा नी रु वि षा कि ॥ म सु लं ष व म स र्थ ॥ धि य स द द र्थ ग म व द रु ॥ थ वि य धू न द न
 रु धि य य नि आ अ क रु ध न न य आ ग रु ना ॥ म सु ल या ॐ ष व न ना य क रु ना अ र्थ ॥ धि य या
 द द य स द मा ॥ ॥ अ धू ना म सु ला चार्थ म रु क रु ध ना रु व ॥ वृ द्धा नी वा धि स त्वा म्भ द व का

कसशाप्रलिया जीव कायस्यायंमकशः स्त्रीअनायवायंमकशः रुष्टिष्यपनिः ज्ञाताकृमिसनगुन
 उपाध्याचर्यापाकयांगुन निदनायायमकशः कृजमदयकं निदनायाकसाः कृयनिरुधर्मन
 कायायिअप्रायनायूरुना ॥ ॥ नास्ति किंचिदकरुवी प्रह्लापायननकसाः सारुषीनास्ति
 कयायंरुथागभावनायथा ॥ चिकुधरखरुं कृनें स्त्रीयूरुखवमनं वायराजयमकशः कि
 नधायार्थयाकसाः गायम
 मनःप्रह्लादवर्जः स्वसनय ॥ सालरुथागकयागुवचनगथार्थ ॥ ॥ ॐ किंकुनक
 मठमठवर्गागकासदारुवन ॥ धकयाअनूगनर्मिअः शिष्यथअसमयः सुखवस्तुकरुजलपिअ ॥
 संसानयाः प्रलियाः माडकः सुखदयकः वज्रसर्पः कयादार्थः ममाकसदाथथायायव ॥ ॥

अथ नन संसा नया सिद्धि कृता ॥

कमलानां श्री स्वामि त्वं ह्नि निमि रं ॥

कसल नमः ॥ कश्चि वन

विना गे स दृ क्षी पा यं स न्य ना

॥ कम चा य धि पा य ग नं म दू

कान कि व ॥

॥ सर्व का

न्य ॥ सम या य ना ॥ सम स वां क उ य हा ग

या य क त्वं ॥

॥ नहि प्राप्ति व धं कार्य ॥ न त्वं न य नि र्ण क ॥ आ चार्य रु न रं स ॥ स न्य ना द न कि

॥ अथारि कि क आ य आ न् सर्व वृ द्धे न व र्जि नी ॥ धे धा य

या ना जानं स्वामि या रा व य थं स य नि द्य य नं ॥

क्रि प्रि धा रु क ॥ क ल्मा क्मा स वि ना धि त्वं न का र्य रु व ना य न ॥

क्रि रु व न रं थ क न का म ना ग पा य म दू का र्य रं सा न स स द्याः

भा य हा र्ण क ॥ न म ना म क त्व रु व य थं सा सा म रं रु क न का

न्य ॥ सम या य ना ॥ सम स वां क उ य हा ग

या य क त्वं ॥

॥ नहि प्राप्ति व धं कार्य ॥ न त्वं न य नि र्ण क ॥ आ चार्य रु न रं स ॥ स न्य ना द न कि

(श्लोक॥ मोलीकृष्णलविष्वक्क कलिर्गर्भं पिङ्गमर्धकं नैनेनात्मा पवित्रं माह मृदिहं विरुणल श्रीपुत्र
मृत्पुत्रं नमो नमो देव नमो नमो काका कावुर्मात्रका ४ मृत्पुत्रं चक्रनायक महो हवक नमो नमो माह ॥

मलकृलिषवज्ररिदं ॥

नागगात्र

कर्मि

मृत्पुत्र

कर्मि

॥ यद्यभनिद्यानि चो लि वं गानि रं लयन चड समरु नू वधाना

॥

॥ श्लोक॥ मोलीकृष्णलविष्वक्क कलिर्गर्भं पिङ्गमर्धकं नैनेनात्मा पवित्रं माह मृदिहं विरुणल श्रीपुत्र

मृदिर्गर्भं विरुणल श्रीपुत्र

मृत्पुत्रं चक्रनायक महो

श्रवनिनिहिक जानू सव्य

विदयनश्री चक्षु नूक

थर्गधूनका अथ अरथा श्रुतया अथा यक ॥ अथ मरु लं जर्मी सरु लं जी विर्ग च मरु अथ वः

कृत्तुल जाग वृद्धपूजा स्मि सायक ॥ हुनाथ रुगु नू आ अजियनि जन्म काया या सा रु ल्य शनाः

मृत्पुत्रं चक्रनायक महो हवक नमो नमो माह ॥

हवक नमो नमो माह ॥

॥ अचलया क ॥ श्लोक ॥

हम च रयज्जु कदिक न क न मृत्पुत्रं चक्रनायक महो

चक्षु नूक समय रु व विद्यु विद्यु रु ना च लायं ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

अपि च धर्म कर्मा व. यद्यथा विध्यरिषि कः प्रीययूत वल्य क्षने क्षम नास्ति कल्याण येव सर्व वृद्ध वा
 धिसत्वे क्षम सन्ना क्रियम ॥ ० किं आ व्या स न विधिः ॥ ॥ धन क्षिप्य यनिस कल्य गु नूया लि
 अर का य अरु क हा स म सु ल दू य गु न नृ रा या सी अ न गी क नि ऊं तु व ॥ ॥ ना ग
 माल च नि ऊं तु व अ उ धू व ह नू व ना या रं श्री रु क ग स न था गि नी य यि स ॥ ॥ ध्र ॥
 आ न द्या दि वा कू लि आ न द्या दि द वा रं य नि नो च कि रु नू व म न सा र्प र्श ॥ ॥
 यू ष सि क हि रु नू नी ऊं क ल रु नू व रं स र्व यि अ न हा पि व यि स ना क ॥ ॥ श्री
 अ दि या न आ ल यि च द्या लि रं गी क अ न हा कि न य कि वा ऊं क ॥ ॥ आ लि का लि दू यि पा
 द ध न क रं च च ड या गि नी म कू ल गी क ॥ ॥ य यि स यि द वि नि अ द य रं या ला रं कौ द कि क

२ चक्र मंग २

४ वज्र कर्तनी १

स्वादायां सारु लोह नाज्जाजियनि बूद्ध कूल स ऊन कायाया बूद्धया का भावा जियनि रु ला ॥
॥ ॥ थन दहाय कि नय क ॥ द क्र क्षा या ख क ने ॥ ॥ क रुः गु नू व द या नू ॥ क था ग ना कू द क्रि
क्षी नाना लं का नू व सु दि नू स्व ध नी न वि क्षि ष क द व का ना थि क रु व म सु ल स य क ॥
यून ना श्रु मि क न रु यू न म प न द सि दा र्श क था रु रु व ध न धा नू का क न न थ व रु
च म रु क था ॥ स मां ग म दि षि गृ हा दि क व नू ना आ दि स रु स नू आ ला न रु नि व
द य रु दि प न वि ष रु द य गु ना ॥ ॥ थ न लि दू हा अ ना अ म सु ल थि ल रु कि क मा य नू आ
वि ष स रु चि क यू जा जाल द क्र क्षा द गु स म य आ लि गु रु क्ष स म या च कू स रु न यं लो यं रु रु ॥
थ न वि ष स ल अ न ॥ गी क का थि न व क्षा ॥ गु नू नि स का र्श म सु ल रु दू ल दा र्श अ न ॥ ॥

ध्याय ॥ ॐ ॥ सिद्धा का काय कुरु सिद्धा य लला काय सिद्ध न न कि च क व न स धर्म य नि य कि
 दं २ द क धा का सं गु न मा ज्ञान सिद्धा पा न य ला का य ॥ ॥ कं ध क ना ट क वा कि न का पा धा य
 च चा हा न म मा न स न न क ल्या न गु व पिं क य ॥ ॐ ॥ सिद्धा इ वि य च चा क ॥
 अरु क न स धु न न गी क ॥ हा ज र न धा म डा र व न धु न न गी क ॥ ध न २ ॥
 ऊ म नि का स ॥ न दि न मः स्का न ॥ ना ग मा ला ॥ वि श्व स ना न र ॥ ह न सि न ॥ म ला चा
 र्य नृ र ॥ न म दि म धु ल ॥ म ल नृ र ॥ पि नु व न क लि क ॥ आ व धा ॥ न म ४ रं ॥ धि य न वा ना दि द ग ॥
 म ध्य म नृ ॥ स मा धि ॥ अ नो ल ॥ मा म कि पू जा ॥ न क व र् ॥ ध य ॥ न म ४ रं ॥ दु व पू जा ॥ नि र्मा ना नि ॥ स
 य पू जा ॥ क अ न ॥ स क न ज ॥ पि रं ज ॥ सिद्धा क कि ॥ गु ल म धु ल ॥ म ध्य म नृ ॥ पि नो ला य न ॥ क लि व रं
 न व ॥ का ना यि ॥ स र्व व ॥ हा ज र न धा नि रं मा न का ॥ इ वि नि ॥ म डा ॥ या स नृ ॥ शो द धा हा य ॥ हा ध नृ ग ल ॥

कृष्णधिवारं अमि स्वर्यं सामकि पूजा दवयूजा क्रमनं ॥ विषयनि स्नान गाय जाय याय दवका द
कि ॥ मधुल पूजा दवका दकि ॥ आदकि वि य वलि वि य ॥ मां सा दकि पूर्य क लंदय सा लि ग्रहन ॥
कृमात्रि पूजा ॥ विषा धि वा स न मधु थिल मु कि ॥ पूर्य दकि वि ना क न क मा य न वि स र्ज
सर्वं क य वि रु पू जा द क द्वा वा धी नि स ना द गु स म य कृ मा त्रि पू जा श्रु य वा दि स म य स
खा दकि वि ना क न वि ध र्ज न क ल ठ ल अ ला य ॥ ॥ ग न व क धू मां ग लि मा क सि
छि र्ना श्रु रं ॥ ॥ ॥ न क म धु ल क न सां य कि रु नां उ म धु ल क न सां पू र्य क
कृ कृ ष न अ ला य ध र्म प ल न कृ ष न का सं कृ ष का य स कि दं २ द क द्वा वि य गे न क न खा ज वि
य मा जा क न कृ स या द अ न य म रा ज न द कृ सं वि य य नि स न का कृ सं अ रि ष क य म य उ थं

ॐ नमो श्री गुरुभ्यो नमः ॥ दिक्रा कर्म या पूजा विधि ॥ ॥ कतिद्र कलषाया गव १ गल कलषायाः
 गव ४० नामया गव ३ वलि रुडाया ५ कया सलाया २ दारुडा गव २ विहिसलाया ५४ निसलाया ४०
 नदधना गव २ सानया जा २ वयनि गव २ गुल्लया गव २ ययि गव २ थपा गव २ दसुपा ग ५ लादडा
 पू ३ रुं चा गव १२० म सुल्लया ना ३२ धूपदरु गव ३२ कथुपा पू ३२ सनिदा ३००० कजमि
 ला गव १२० चा गवदा १२॥ कया सुल्लया ग २ चपा २ ककि रु लयि चा गव ४ रु गव जाल २
 पू ३ रुं जाल २ क विज्रु कया ५४ सासिका ५४ शिकरू २ रु गव १४ षनिपा २ सर्व १४ षनिपा २ रुडा सः
 पा २ रि रुला रि कि ना रि क रु रि ली क र्य क रु गाल चं श्री खलु न क च न न स्वा खया हा वि
 थ २ नं का गव १ गव य गव १२० गव वं १० पूजा सिक्र गा १२ च सिक्र गा १२ य गव लि गा १ यूप २ धू

पाचमा १ धू १२ धू चतु गलिका २ पंचय कामधिका २ हा गा न ना ३ ना ज ना ३ मूलं पा १ वं का
चया ३ चक चपा ३ का खा गा य ३ २ हा कू. झ उ प ३ २ गवय का चय १ २० पंच मू का गवज ३ कू क का
क ३ ३ सि कू का गवज ३ दु कि १ ज ज का थ १ २ झ उ प १ १ हा कू प १ १ अ दू ज पा ३ २ झ उ पा १ १
हा कू पा १ १ ०० गा थ १ २ हा कू चा कू ॥ म लु ल गा कू १ २ आ री ख दि कू ४० प च द हा प्र ना य
४ झ सः प ३ झ उः प ४ हा कू पू ज ना यः प १ १ ३ ॥ प च प्र ना का प ३०० क र्ण प ना का ज्ञान
३ २ ४ व ग कू प १ १ प र्ण कू प ४ ना ग कू प ३ कि लं कू प १ ० ध मू कू ॥ क सा गा य १ द य पू जालं १
मा हू ज खा सिं. मि सि गव च ॥ क सि य १ सा ख य १ सा घ ल य २ सा इ इ कू १ सा ध उ. गव मू. गव मय. ०० का प्र का
पू जा कि रू १ आ कू कि कू २ रू स्यं ना य रू १ पा ना स कू १ आ रं कू २ च य प चा गव ५४ वि य कू ३ २ ॥ ॥

पथ ३ नलया ७ लं अरुपलं ३ अदिमि ३ १० धर्मादया लं मं ७ लया अंगुया ३ अर्घ लं मं ३ अ
रुखा ला गव १ सला काय २ थो मू गव ७ ४ पूजा अंगुया ७ ४ लुचि कन ७ ४ ॥ अर्घ पात्र गव ३ अर्घा गव
१ मय पू १ सख गव १ कर्क पा १ सला यिया १ या खा सि गव १ सि क सला पा १ क सख ला गव १ सि क स
ला गव १ सि क काय नाया १ क स पात्र गव १ ॥ ॥ कर्क दय क ॥ मूल पात्र १ व काय पा
१ व काय पा १ ॥ स न चू पा १ आ स खदि कन २ का खा गप २ हा क काय कन २ स काय
पू ७ क सा गप १ क कला क थि गु नू पा ७ १ पात्र गव १ उ व नू गव १ था य रू पा १ लुचि पूजा अ
गुजा २ अरु हा हा लो हा ४ २ न अ हा २ अ इ आ प ४ न अ पा २ गव य गव ७ गव व ल २ द क ला माः
ह २ कि रू व जि रू व मा ह ४ दौ कि रू बा धा कि रू १ नि सला व जि रू १ थ क म कि रू १ ॥

१ गाल जा न कविधि ॥ का थ ग व ल ४ थ कि रू ५० व कि रू २०० था पं कि रू ३२ स धि कि रू १२ स्या
 व कि रू २० चि क रू ५ वि रू २ मा य म्वा न रू ३ हा क रू ३ मा स रू २ क स रू २ प न मा स रू २ रू नि
 रू २ क य गु रू १ ख ज ग व न २०० चा क म धि ना १३२ स्र ज न पा १३२ ध उ ग व न १५ इ इ रू ३ का ग ध उ
 रू ५ घ उ दा रू २ च ला लाः
 प्र १ जा मूल न का २० सि क २३
 १ का पां श्री शं क गु नू गु नू मां उ पा ध्या च ची पा क ल्या न गु नू थू मि न हि का न चि य स म धा न या य
 दी न का ल अ न श्री ३ म द्रा द व रू ग व च दा म न य ॥ १ ॥ श्री गु नू पू जा या न क य ना रू नि या य
 गु नू रु जं श क ल्या न गु नू ध न म रू व क ॥ पू जा क स पू जा आ दि जं क वा दि क मि स लं पू जा रु न रु १

२

१

समयाचक्रगणचक्र॥ २ ॥ पूनश्च न न जानयात् यथ सा लिप्या आदि अ न वा हि सम
याचक्रगणचक्रघृणुपमात्र॥ ३ ॥ अस्मिद न या न न सिधने कालाहलिमानकलस
पजाकृपिन इ न गल कलक्षपंचक्षलिप्या आदि अ न वा हि कालक्षयपात्र १ समया
चक्रगणचक्र॥ धर्मधनः पात्रं या न क क श भा ४ ॥ इविया न य च क्ष आदि अ
न वा हि आगं वा ५ काला य पात्र ३ अ न दि विय घ क्ष समय स कु क रू त्रि मू व
जा न समयाचक्रगणचक्रधउसर्घखलसर्घ॥ ६ ॥ इविय क ग्य स पंचसा आदि अ न
वा हि स सा न ग हि ना क न १२० काला य पा २ क म रू जा समयाचक्रगणचक्रधउसर्घखल
सर्घ॥ ७ ॥ शिक्का इविय या न सि क प्या पंचसा आदि अ न वा हि पात्र ३ आगं वा ५ इ न या न

सुरुजं रुनि मचू जानं नाकाय पा ३ सय पजा द्यष्टा समय अरुदि ला थ नान क ऊ ग थ जानं प
 च सा आदि अ न वाहि क मरु जा समया चक्र गल चक्र गवन स र्घ ॥ १ ॥ सिद्धा का काय पंच सा
 आदि अ न वाहि समया चक्र गल चक्र विवा पिं शाऊ न क मचू जानं ॥ २ ॥ सिद्धा माल कय न
 सिद्ध पजा आदि अ न वाहि समया चक्र गल चक्र शेष वलि ॥ ९ ॥ चरुधि क स प
 जा वाहि समया चक्र गल चक्र ॥ व ना वि य शाऊ मचू जानं ॥ १० ॥ गु न स य पंच धा आ
 दि अ न वाहि जानं २ सा य गु समया चक्र गल चक्र वा १२० जानं हिं ना पं ना ना रु स धि क म न
 थ ना ३ धा सा ना ट ॥ ११ ॥ न य पू जा पाल २ सिद्ध पजा आदि अ न वाहि समया चक्र गल चक्र ॥
 द द स सि ला रु कि ऊ ग थ पंच सा आ अ वा स सा हि न ग ला क १२० ना का पा २ क मरु जा समय गल
 चक्र ॥ ॥ चरुधि दं डा स य गु न या क ध उ स र्घ ग स र्घ ना थ नान क धून का डा अरु धि क वि या क य ॥

३

३

ॐ नमः सिद्धि गुण आह ॥ गु गुलि जाई मया बल धन या या ॥ मनु ॥ ॥ ॐ नमः ध्यान प्रहृष्टानामिका च
ले वाग वा नदं ॥ ॐ आ ४ वं मय ले रु य २ न न २ वा न य २ दं ह आ मं ४ स न्य ना क न आ का न जा मि का रु न्य
निष्ठा य सर्व क था गी सा धि धि क न क स ए म आ वं म रु आ ब्रु हि व जा दं २ आ मं म र्हि ॥ धा ल १ ॥ न
ग्व उ स धू यं क य ॥ घा द्य ल सं धू य क य ॥ खा न क य क ॥ ध न स य जा उ पा स न मा ल रु ला ॥ ॥
आ ब्रु हि व जा दं २ आ मं म र्हि ॥ ॐ च धु म हा भा ष ना य ४ उ च न २ अ म क व स मा न य दं फ र्द न म
४ स्वा हा ॥ धा ल ३ ॥ क ग्व ल क यं नू ग ल धि य का डी कू च क ॥ खा क दि क क य क म नु थ ॥ ॥ ॐ गु न
आ हा ॥ ॐ न मी जा गि नी ध्व नी जां जां दं सर्व न क २ की न म ४ स्वा हा ॥ धा ल ५ ॥ हा ५ दा हा स्वा न रु मि
या गु क य या दं कू च क ॥ य न कि र्णा ना म ॥ क व च ॥ ॥ ॐ गु न आ द म पा लि ल क पा लि कू क का य

[illegible]

सत्त्वया कं खस या दा दयू व रु नं मा स व व या क या दा ख स द य म व न या दा ख स द य स
ग या दा ख स द य रु नं थ गु लि रु न स या दा रु नं रु थ रु न स या दा कि मि स थ थ पा प या दा
ख स द य व रु क म या दा पा य म व न या क का पा प थ थिं २ गु पा प स क ल्यं रु गु निः
या दा व ग व ल म दा व ड रि ग व न का व स म स क थ ग क वा धि स त्व या रु ड न गु न या
नि रु क स रु व न थ थि गु व स या रु व न य व न या दं वि श्र क द क्ष ना या दं वि श्र क थ
स थ थिं रु ल पा न स रु व न कि मि स न थ म पा प या दा गु लि स या श रु ल पा न य
नि रु रु म न या व स म स पा यं का न क रु ला रु ॥ ॥ स म न्वा रु नं रु द न रु श्वा र्था रु ना या
व रु व पा व्वा कि पा कं प्र कि वि न ना नि रु रु द रु नि रु रु रु रु ल कि ना द या व ना स र्व स

५५५

निहस्तुष्टाः ४ लङ्कि नादयावन्नाः सर्वसत्त्वेषु प्राप्तिरुक्तं यः अन्तर्हृदयं पिपीलिकास्य
दायाः अन्तर्वंशवार्दपथमनाः कृष्णमाया महताः क्षिप्यामन्तर्हृदयं अन्तर्विधिः अन्तर्कथानिः
॥ क्षि ॥ हृदयं नृणां
यथा कृष्णमाया निया
निमग्न्या मायाक्षिप्यायः
स्वप्नः सत्त्वानि पात्रावर्ध
समस्तसत्त्वप्राप्तिया कः कुरु न जाय न म्रियते आदि धूलिन जाय न म्रियते मिमिलं रूपादिः
अथि सत्त्वप्राप्तियनिस्तुः अगुलि धर्मनं पति पात्रया यथा कृष्णालं कुरु लाः क्षिप्यनिस्तनः अथ

अंतिमिसन दृयाथ क्षलीलं गथ वृद्धपूयनि सं किंथ गथसन गथविधिया कथथं किः
 मिसनया यरुलाह ॥ ॥ यूननयनं समन्याह नं रुदक यथा कः आर्याह नायावकि
 वः अदलादानं अवेक्षन यः मुखानादं सनामथून मथय मादरुनं नृणगीकः
 वादिर्मा लागधविल यन वरुकरुष क्षधाजर्ष उचक्षयनं महाक्षयनं अ
 काजराऊनयकिविनगा ॥ ॥ दुक्षिष्यिं रुनंददा रुमिसन कमनया सं गुननध
 या गथ वृद्धपूयनि सं किं वनवदुनयनां भवनमविशकं भवयाक सत्यकं दा
 नं सकाव वेलमखयकं अवनसं मनव वक्ष चर्यमषु गुलिं मनव ॥ असख रं मलाक नृपः
 गकि वरुलाह आदिं कायन व वरु कं मनव थं मगाह याखनं मद्रु व मीमदा न वाशं मथाक

१६

वर्क

त्वाकस्वाननमस्कृक नस्वाक यं वगश्चन लयनमयाक नानावस्कु कि सा नमकि व हिं दाल पा
ना य नै कि सं स चो द ना जा डा ना सा ७ व आदिं थि सं स चो द व ल स म ख य कं अ व ल स म न व
थ क व सु क स न स म श व
॥ न व स वा दः
या न अ अ द रु दानं अ व
गी कं वा दि क मा ला ग च वि
का न शा ऊ न प हा य अ का न शा ऊ ना न्यु कि वि न सा मि ॥ अ न ना दं प्र थ म ना ऊ हा कं वां मा या
भा म रु ना धि का म नू शि क अ नू वि धि अ नू क ना मि ॥ मि ॥ रु गु नू द ना थ रु ल पा ल स्य

आह्लादयकार्थं ऊपनिषन्थवरनामनः थगुलिवनासः थगुलिधर्मजाययाकृत्वाः
 भाः थनियानात्रिवदावः ग्वनाभासूर्यददयमकृन्थनाभाः असुरखलायमषकाः सव
 नमवियकं सवयाकं स
 किं वज्रशानादिं काय
 वाद्यथायः त्याकस्वानं क
 सानकियः श्रदा लः खाका
 कं ऊवलसं नयं मेष्काः थार्थं २ वस्तु कसं ऊपनिषन्थमकृन्थनाभाः थगुनिकिन्थि मिमनः
 च्याकाक्षविदं नः समस्तु तथा गं क्षिप्यपनिस्तु गथकिं थं सनः किं थं गथविधियाकाः आः

१ सदानं

डाकिमिसनः कलया लया आ ग्यार्थः धगुलिधर्मनायया कंधन नयक लाहनाथ रुगुन
॥ ० ॥ अद्य या च कवा क ॥ ॐ स नर सि नि र क न र प च र रु न र हा र ही र रू र डं का न व
मवधधन शधि नि र धः नू र क न र म न र व ल र न धि ध क स रु सु प नि म धि क
कल र क प र रु ग व न सा मा दि ल्य य म व नू ध क व न व ध नु अ पि द व ना र्था र्थ
क न न धा य अ र्द्य म्यु नि रु व ल दा य स्वा दा ॥ धी म य रु ॥ ॥ व रु का क य क
॥ ॐ स न र रु नू र रु ग व नू ध न र स म य म नू स न रू रू रु रू रू ॥ धा न र १ ॥
॥ ॥ नि य रु रु दा रु ल स्वा वा य क ॥ ॐ न मा न ल रु या य ॥ ॐ न म धी आ र्था व ला कि
क ध्व ना य ना धि स ल्वा य म हा स ल्वा य म हा का नू धि का य ॥ क य धा ॥ ॐ अ मा य धी लू धुः

महाशील

हसत्वा रुन २ ससु न २ पय विरुषि ना म्बु ड धन सम ना व लाकि क हव ना य ओं आ ४ दूः
 स्वाहा ॥ धन २१ ॥ ॥ वलिवि य ॥ ओं अ मा द्य पा हा की ४ सर्व दू स म य म्बु दा प्र रु ऊ क
 धर्म र्मा वि स म्बु द्का नां ॥ न कि य र्मि क न दू र्व सि स्वा हा ॥ पंचाय ना न पूजा ॥
 चाक पूजा म्बु ल थिल ॥ स्मरु हा ना क न क मा य न आ धिष ॥ ॥ क्षी ल च न्द
 नलि का क्षी ध्वा न य न व ॥ ए वृ ना वा ध्वा क स मा की र्ण वि रु न र्ध य था सूर्य ॥
 ओं क मा व सर्व स त्वा र्थ सि ॥ दि द त्वा य था न ग ग रु र्ध व द्ध वि ष य य ना ग म ना य
 न ओं आ ४ दू व ड म्बु ल म्बु ॥ वि स र्ज न ॥ द्वा र्हा स्वां का का य व र्ग को न द्वा य ॥ चित् पूजा द कः
 हा कि रु नि स ना ॥ ॐ कि अ मा द्य पा हा वृ सी व रु स मा फ ॥ ध न म्बु नि पा न ल या क ल श्र य ॥

मिथुनभयनाः यः कर्तुं पंचदशप्रकारं यो गच्छतिः पि कर्तुं यः यावत् यावत् वा यः कर्तुं सच-मन-कर्म-पंचमय-रत्न-दत्तवालि-प्र-भ-भ-वालि-वत्त-य-०० नर-
गथागगावि-धन-वल-हस-गवा-गव-पुन-चन-स्योः का-के-लि-के-म-दि-ग-हा-लि-पा-उ-आः अं-वा-हे ॥ मा-ग-ल-व-लि-उ-ध-वा-लि-म-ग-स-प-म-ग-वा-कि-त-धु-गि-था-प ॥

घ

हउनाउ

आचार्यपनिनीकमनिदूथापनायाया ॥ ॥ अं नभा वरुगुनव ॥ नभा अधिवासनवि
धिमाह ॥ ॥ लि वा स्य गु न म धु ल य च ग व सि धु न य आदि स म य पू जा प्र कि पा द य
जा ॥ मरु नि सा ध न आ दि का स म य ॥ ना ल को य ॥ म धु ल धि ल सु कि ष ना क न ॥
न कि न म ला न गी क वि ध्व स ना नू र ॥ म धु ल वि स र्ज ना ड पा ध्वा न कि न ध यः
जा या दा श कि न ध ना स्य पू जा या य ॥ वि स मा धि स र्व क ल ष ग न क ल ष आ
दि पं क म नं पू जा द व यः जा रा व ना ॥ आ पा ध नि ला स्ना क म नं पू जा ॥ मः
धु ल पू जा ॥ ध म ष न वा लि पू जा प चा प चा ल पू जा ॥ ध नो ल म धु ले दू स पि हो ज या व
॥ च के दू वा न म धु ल चा य गु न म धु ल द क च क वा न म धु ल पू जा या दा श ना क य सं क य ॥

द न का कृष्ण दू का मधुल स कय ॥ धन लि षि ष्य प नि गु नू म धु ल द न का ज ड ड प लि वः
या ड ख ड प लि थ का सं स्वा न वा ष ल ड ड क य क ॥ ॥ क क षि ष्य म कं क्षो व दू लो क
क म धु ला नू प य ष ड ड लि न दू ला क न वा र्य द यार्थ ना यि य व ला क र्य द यार्थ
कि नु क थ ग क का य क य सं प्र द यार्थ म धु ल प व ष ४ का र्य र्थ क थ म र्य र्य
द य य र्थ म र्य की कि षा व यि त्वा ॥ गु ॥ ध न षि ष्य दू म न क ड नि म न क ड य क
न क ड द य क म धु ल स स्वा न का ष्म ना रु डि य चि ना य ना क कं हा ड ड व चान ॥ ०० दू ला
क यार्थ म र्य थ गु ड न म प न्य दू ष ल गाय या क य व ला क यार्थ म र्य कि नु दू या क थ न सा क थ ग
क यार्थि को धा स्व ना रु द ना य र्थ ष म धु ल स दू हा य या क ॥ ॥ रा व ना ॥ ०० षी नी र्थ म र्य व न

अं० कृष्ण

पविष्मन् वजां निर्गच्छ प्रह्लाद यन्मन्त्रं तस्मिन् दृष्ट्वा कीदृशं तस्माद् दृष्ट्वा मन्त्रं तस्मिन् विष्ट्वा मन्त्रं प्रह्लाद यन्मन्त्रं तस्मिन्
 दृष्ट्वा कीदृशं तस्माद् दृष्ट्वा मन्त्रं तस्मिन् विष्ट्वा मन्त्रं प्रह्लाद यन्मन्त्रं तस्मिन् दृष्ट्वा कीदृशं तस्माद् दृष्ट्वा मन्त्रं तस्मिन् विष्ट्वा मन्त्रं प्रह्लाद यन्मन्त्रं तस्मिन्
 ॥ मन्त्रं लक्ष्मणं पूर्ववत् दत्तं पवि
 यान् कान् रत्नं च नमस्कृत्य
 लख्मणं कुर्यात् रुयमन्त्रं लक्ष्म
 णो ल ॥ ॥ ॐ नमो भगवते
 कर्दहम ॥ ॥ ॐ नमो भगवते
 विद्वन् ॥ ॥ ॐ नमो भगवते

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ स्व ॥ मृत्पुत्रं जन्तुं लानं कृत्वा दिव्यं
 कृतं मे मया मया नमः ॥ ॐ ॥ क्षिययां वृथायां क्षयथा
 प्राप्तिनिर्वाणं सानं समुद्रं धकाडा किमिस्तु नृणां सानं कृतं
 सानाथं महावाचि नयद्वं दहिमं समयं कृतं वाचिचिरं
 सानाथं सानं सानं सानं सानं सानं सानं सानं सानं सानं सानं
 दहिमं सानं सानं सानं सानं सानं सानं सानं सानं सानं सानं

नै॥ हि ॥ वृद्ध धर्मसंघः यागुस न विदुः किं यनिद्रु वा दाया यद्रु न रुगु न रुनाय मअध रुः
 महा मा क पू न स ॥ ॥ गु न व धाय ॥ ॥ वि व ल स महा या न स रु च र्या न र्या विधि द ह यि य मि न स
 मय क र्ण क न त्वं महा न य ॥ ॥ ॥ रु हि य य नि अ य ॥ स रु च र्या या य गु विधि कि नै रु य नि
 महा या न या थ ल रु नी रु य ॥ ॥ नि रु रि न क क न ॥ ॥ वृ द्वा स्त्रि य न्ध सं रु ना का य वा रु
 वि रु वर्कि न ४ सी पा फ रु न ॥ ॥ स रु लं व रु स रु प्र रु व नै ॥ ॥ ॥ रु था ग रु या रु य ध र्म
 ड ल्य रि रु न स नू य वि रु ॥ ॥ न कि का य या यार्प मा ल रु वा क रु न ज रु ल्यं व रु ड डः
 थं स रु या प्र रु व ॥ ॥ स रु य या ग स रु लं य न रु न स रु व लं मा न ह न स रु धा नं ॥ ॥ रु रि
 हा दि रि व लै ॥ ॥ ॥ थ स रु या ग मा रु ल्य स दू ग थ रु न या रु स रु व ल व रु य नि स न मा न रु

न्यरुयंकन, थपनिष्ठासिंह आदिं सकृयावलं, कयलयलं॥ ॥ लाकानृदयसागमच
कुवर्णसुनिर्वृता, कस्मात्सकिमिसावत्स, कृत्तसर्वकृपाफयत्॥ १॥ लाकयाअनृदरुहिया
कअयो, धर्मचक्रप्रवर्णना याक, थथथगुलिचर्याकालदाअ, रुहिष्यकृयनिः
सनयाअनिष्ठयनं कथा गकयागुयदलायुज॥ ॥ हि ॥ हिष्यनंधायक॥ कः
मानत्रययं सहाजसः, सः वप्रकिदिष्ठासयं, अनूमायं जगकयनं, वृद्धनालो
दधमन॥ ॥ हिषाथयत्॥ ३॥ रुनाथरुगुन, वृद्धधर्मसंघयाक, कियनिसनहाज
न, सकलंयायं मानकज्ञा, अनूमादनायादा, ससाजयायनं, नसगाया, कियनिसहाकथा
गकयागुय, नायगुमनज्ञा॥ ॥ चक्रंवेवर्णसत्सकंदला, नाथवदत्वमं, चक्रदवक

यास्तु त्वं आचार्यपति कर्मच॥ हि ॥ थगुचक्रयाष्टविद्याश्रुतं दनं दगुनं हनाथ दव
 दवीयास्तु त्वं हनं आचार्ययास्तु त्वं कियनित्तु आह्लादं विद्या दनं ॥ ॥ समयसर्ववृद्धा
 नां सन्वनं गुह्यं सुरुमं आः
 चिह्नं ल्या दनं ॥ हि ॥ हः
 लिहं नं आचार्यया दगुलि
 मगुलि ॥ ॥ समन्वाहनं
 मृपादाय यावदावाधिमस्तुलनिखं उना ॥ हि ॥ किमिस्तं के मनया दास्तु कलं वृद्धवाधि
 सत्वया कियनित्तु नामनं थनिया वलास्तु धर्मनायया कस्तु नानाधास्तु वाधिमस्तुलख

[illegible]

ॐ वा

दिनदिन महान्त कूल योग समय समानम ॥ ॐ ॥ गणधन वरु कूल स य मा दान
विय पूगारु दया य किर्थं २ गणधन जल कूल योग सं कल स मय रि द ॥ ॥ स धर्म प्र
कि गृह्णामि वा य गु श्रुति
किं गु धर्म का य पि न्य द न्य
स गणधनं हान महान्त
हानि सर्व क पूजा कर्म यथा
शुभ का य स क ल्य पूजा या नाश यथा स कि र्थं गणधन कर्म कूल ॥ ॥ ॐ ॥
सं वा धि वि रु स म ह वं गृहि त्वा स म्ब नं क स नं सर्व स त्वा र्थ का न क्ष म् अ कि र्ण ना न यि ष्या मि ॥

॥ ॐ ॥ म न ड त्य रि कृ नं ग ड धं ह्य न चि हं का य ल य का य ध र्म स क ल्यं प्रा नि य नि स क लं ड
 द्वा न या य या र्कं पा नं ग म ड ड द्वा न या क म ड ड धा न या य पा नं ग ड न क या क ॥
 अ म का भा च या म्म हं अ ना
 षि ॥ पा यं म मा ल रु गु मा
 या क स क ल्यं प्रा नि य नि मा
 न का वि य ॥ ॐ र व लु ना हं
 लु सि ना षि व रु य म च का य नि सूर्य सूर्य च द्रु स्म नि सूर्य च द्रु च द्रु स्म नि वा क र्ष न क डु कानि
 हं अ ॥ ॐ अ क ना नि चि क थि त्वा ॥ अ पा नि ॥ ॐ र व लं र व न हा य त्वा नं क च क ॥ ॐ अ ॥ ॐ ॥ थ न

अ० वा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

यं वगन्धनं कथं कथान्नं नमस्तस्मिन् च कर्धं मरु कर्त॥ ॥ यत्तन्निधाय निधायि कृत्वा नृचकार कृत्वा न
यत्तस्मिन् कस्य हि यत्तस्मिन् मिखायियकं दत्तं काष्ठं ॥ ६ ॥ चक ॥ मन्त्र ॥ ॐ वज्रं हासदं ॥ ॐ ॥ लख
नना वायक ॥ मन्त्र ॥ ॐ ॐ ॥ १
नयदं ॥ यत्तन्त्र कदा नमस्तस्मिन्
कथयक ॥ ॐ ॥ दूक हि यथा ॥
ननका विय ॥ ॐ ॥ वृद्धं मे ॥ न
खकन ॥ ॥ ॐ नमो कल्याणकारिणि ॥ १ ॥ यत्तु कं यापकं यत्तु नमस्तस्मिन् हि कथं यापि ॥ ६ ॥ मन्त्र ॥ लसी
दृष्टी ॥ उत्तमादृगं निरुपां सर्वदृष्टं स्वस्मिन् वा ॥ १ ॥ ॐ नमो कल्याणकारिणि ॥ १ ॥ नमो कल्याणकारिणि ॥

गुणप

माह

भायाययादां थ्रिवायंरू कः आडाथगुलिमधुस्वयांनं कियनि नन कसडा नमसा ना ॥ ७ ॥
यथाययवजस्मि मकिअनूनिर्मलो अशयूमाहि नगु जा लखला रामहामहि ॥ रुक्षिषानि
आडा क्यपनिस्तु गुनूयाया दप्रभादः नः समस्तदूरवदू मा गववजसु थचयधन लेयन वूद्धि
लाविनंरिद वूद्धिवकशः जा आडा क्लिस्तु नयनि सकलं गां तु ल्यमदू गुपदना मा
आडामहामडा धेयूरखरु जा ॥ ७ ॥ यनयूरयंकि नं ४ सर्व सयुं निरुसा सनेस
वयनिगृहिता ध्वजायमा नामहात्महि ननयूरयं महायानसु जा माहि रुविषाथ ॥
॥ गुलिचिं क्लिस्तु लयनि तथा गनया पूरुश ना थधिं गु आगमस क्यपनिगृह जाकि
मखन क्यपनिस्वादाया सुजाकिश ना ॥ ७ ॥ अवं सार्ग वनछी मान् माहायान महादय यन

श्रु० वा

सूर्यं गमिष्यन् रुविष्यथ न धागक ॥ ॥ धमार्गं ह्युहं गुरुं न डत्यहि कडा गुरुं न क
डाधदगुगुलिं कृपयनिडानिडा धानसा डगुलिलनं कृपयनि कथा गक इयडा इना ॥ ^{सि० ० ल० य०}
थनमलो चार्थदका कृषा ^{वज्रं धि} दिविष्य ॥ ३० धी स्वाहा ॥ ३० वज्र की कर्व ॥ खलु वा हाम नुकन
॥ सि० ल० य० वज्र न का ॥ ३० धि
मलुलपर्व ॥ ३० धी धादिपूजा
क्षिर्वीद दगुलिसमय आकृ
अधिवासनं द विषय नं क नसा आगं वापू जामाल अधिवासन अलिद नं क का इ नसा ममाल शलो
॥ ॥ ॥ ॥ अधिवासन अकृमिबुन विधिसमाफ ॥ ० ॥

॥ ॥ ॥ ॥

१४० नमः श्रीवज्र वाजाय ॥ अथ सिंधु नारिक विधि माहर्षि नि क स धी था प न या य ॥ गु न म
 धु ल य च र ग वा सि दू न म धु ल था य नि र्मा ण च क चा य वि धि थं पू जा कृ प पू जा ष ट या गि नी
 पू जा अ पू ष्म ष्म न पू जा ॥ य द्म रा ऊ न क नि र्मा णा दि व धु लि य न र्प नि र्मा ण च क द
 क य प्र कि पा द पू जा भा रु नि सा ध न आ दि स म य म धु ल
 मा र्ग के सा ध द व पू जा वि धि थं म धु ल थि ले स्त न क नः
 मु कि षा ना के मा र्ग द गु लि स म य स रु रा ऊ न क लं क धू न दा ण ॥ मा रा र्ग सि द्ध या य ॥
 श्री स न्न न या म रु न आ च र्य षि न स द वी या म रु न मा रा या षि न स स्त नं दू य ॥ ॥ रा व ना
 ॥ यां गु या धि नां व ज्र वा जा ही नू पां स्त यं स न्न न नू पं वि चि त् ॥ क स्मा रु स्मि चा द्म वी ऊ म यू खे ना

पूजापात्रान्नूपान्द्वयोः

सिद्धा

नीलां ह्यनदवगाप्रवक्ष्यामि ॥ आयानी ॥ गीतहोजरुनं ॥ ॥ यनमूद्राणवना ॥ चकीकृष्टु
लकृष्टीनचकमखला रुसयथाकर्म ॥ अक्रास्यामि नानत्तसम्भवनाचनाभाद्यसिद्धि
पासटिकिविचिन्त्यकृष्ट
कादिमूद्राअक्रास्यादिस
लि ॥ ॥ अथरूपधरा
लसन्तनंखाहा ॥ अक्रिऊफं ॥ रुस ॥
हकिप्रिऊफं ॥ व्याद्युचर्म ॥ ॥ अं धनरधनय २ मर्द २ वज्रधुकर्द २ रुद्र २ स्त्राहा ॥ अक्रिऊफं ॥ धि
नसि ॥ गृह्णदरुसनावीनचकीअक्रास्यात्मकं धीवज्रसत्त्वमूद्रयं वहि न ध्यात्मसंस्ति ॥ १ ॥

[illegible]

सिद्धा

त्यादि॥ ५ ॥ ॥ ओं श्री वक्रद्वन्द्वकल्यादि॥ प्रिक्रम॥ नृप नृ वक्रद्वन्द्वकल्यादि॥ ॥
 ओं कन २५ च लुङ् २ रुद्र॥ पाठ॥ ॥ ओं नमो रुद्र नवी नवी नल्यादि॥ ॥ ख द्वा की उमे नृ॥ गृद्ध
 रुम नावी न ख द्वा की उमे
 वमु चक मूख विय॥ ॥
 जाय या दं थ अ धि न सो दि
 न रुद्र या थं रु ना॥ थं लि
 ॥ ॥ नादि॥ ॥ ॥ ओं नमः श्री पद्म नृ ख द्वन्द्व नाय॥ २॥ ॥ ओं नमः श्री वक्रद्वन्द्व नाय॥ ३
 स्य वक्रद्वन्द्व रुद्र नृ ख द्वन्द्व नाय॥ २॥ ॥ ओं नमः श्री वक्रद्वन्द्व नाय॥ ३

कृ का का क्ष ल क्षी म कृ कृ लो ल ड वृ चारु व क्ष लि ल स नि त्ता ग न का क्षु वं वा रु स्मा कृ कृ य पा क
न व कृ रु ग व कृ ४ प द न नृ ल ह्व न स्या ॥ अ पि च ॥ या सा स सा न च कृ वि न च य कि म न स्त नि था ग
त्स रु का ४ सा धी र्य स्य प्र सा
व र्श स मू द य कि स्र खं क
यं स रु न स र्व का ले ॥ अं न
य ॥ ॥ गी त वि ह्व स
कं प द म नृ ल्या त्स वं ४ प्र कृ न म धू पा न न प द न या ल्क्ष क्षी रि डि डि यं वा मि न्श्च न न वा
य वा ध न कं न कि न स्य वि ह्व नि व ४ प्र कृ न म नि रि ४ स पा रु रु ग व कृ ४ क्षी य द न नृ ल ह्व न

जन्मसंस्काराणि

श्रुं वरुं स्तु भ्रमां व जादि वा गुपाक्षिः प नि ग क क्षि ख नं क्षि ख मा ल द भो ली । वा ना द्वा क्षि क्षि
क ६४ घन मि व रु न रू ना ग च भो रु नी य ४ पा या क्षे स म्च ना व ४ क्षि रु वे न वि ड भी । अ कि नी च
क व रू ॥ ॥ थ न लि
क्षि यं वे ना च न रू य क्षा वे
पू रू न क आ ४ क्षु क्ते ङां का
क ग वा ला रु मि न का ॥
वि य ॥ ङां वे जा पू य रू ॥ क्षि ना व रु ॥ ङां च कू व न्ध न मा न य रू ॥ अ ध प ठ क य ॥ ॥ य द्वा रू ङां
न स ग्ग च ग्ग २ क स क्षि न स दि च क रू ॥ ङां य थ दा डा हि ल क ॥ ङां ख रू ॥ ना रू रू रू ॥ ङां आ ४ ख वी

सिद्धा

नरुं॥ ॥थनलियमनि कायन॥ गुननदन॥ कत्तं शासनकपिय नूकि॥ क्षिप्यनंधायक
॥सुरुगम हंस हासुख नूकि॥ ॥गु॥ रुक्क लपिं सुख गवसुख रिंगु नसनडा या ख वलानः
सपीयशुअ ना॥ मि॥ ऊप
थिय॥ अंसर्वथा गचिरु
अंसनकसमयत्तं हासि
अथत्वं वज्र वा ना अक्षिपि
मधुलपेविष्टाय वक्यं न च ध्या कयं॥ ॥गु॥ आव रुक्क नसकलं वज्र वाहिन अक्षिः
छानया कशपाय रुक्क नसं थ वज्र वा नाहिया गु कशपा अचा गु नरुस मधुल स इहा अः

यागुखस्वयाद्यशदंक्तायमकवमवनधनआदिपठाअदनिअध्वखकनमदू॥ ॥
अंखस्वनाहंरुदंरुदं॥ अंआ४खंवीनदं॥ ध्वनिपनपाअयमनिका नदूकयन॥ ॥ अंमहा
सूत्रकसूदृदसूमाधोसूः
॥ ॥ धनलिचरुदल
गकवज्जकपूजापस्त
समा॥ ॥ वज्जक
कवज्जकंअधिज्ञानयाकशयाय॥ मध्वा॥ ॥ अं सर्वकथागकवद्वज्जकपूजापस्त
नायात्मानंनिर्याकयामि सर्वकथागकवद्वज्जकाधिष्ठमां॥ ॥ वद्वज्जकपूजायाय

सिद्धा

र्थनसुनिनदादानयासमस्तवृद्धजककथागरुः अग्निष्टानयाकुरुपायः ॥ पूर्व ॥
ॐ सर्वकथागरुनलजकपूजापल्लनात्माननिर्याकयासिः सर्वकथागरुनलजकाधिः
सुमां ॥ ॥ नलजक
नपाऊपनिर्यां ॥ समस्त
ॐ सर्वकथागरुपद्मजः
पद्मजकाधि सुमां ॥ ॥
लयासमस्तपद्मजकनधर्मकर्मपरुनययाकुरुपायः ॥ पश्चिम ॥ ॥ ॐ सर्वकथागरु
विद्वजकपूजापल्लनात्माननिर्याकयासिः सर्वकथागरुविद्वजकवज्जकर्मकनूयमां

३८

५

॥ विष्णुज क पूजा कर्म या य या क किमि स थ अ स निल दा ह न या ॥ स म स विष्णु ज
क क्ष कर्म या क न का या क र पा या ॥ उ रु न ॥ ॥ अं गु न च न क्ष प स्तु ना या त्मा न नि र्ग म
या मि सर्व स त्व प नि ज्ञा क्ष
या य या क कि मि स न थ अ
मि स न गु न या च न क्ष स
दि कू ल प्र वि ष्ट रु द रु क
सि धि न पि प्रा ष्य सि कि म ना न्या सि धि ॥ न च त्व य द म दृ ष्ट म शु ल स्य पू न मा व क्त्वा मा क स
म या या थ कि ॥ ॥ अ अ क्त न पि स क लं व रु वा ना दि या गु क न सं दा हा अ ना ॥ अ न थ न

सिद्धा

वज्रहानडत्यरि या हा गु गुलिं थ गुलि हान नं कृप निरु स क लं वज्र वा ना ही या गु सिद्धि
जायू व भव ना सिद्धि द्वा य कृप निरु ॥ कृत्क नय निभ न थ ख द क्राम ना क म्म या दृष्टान हान
य म कं डा ॥ थ ख हान क सा
थिय ॥ अ य न स म या व
आ अ कृत्क ल प नि च स
ख कृ मि स स या कं क्रा म
ख ग व व स क्रा य म द ॥ ॥ न ग ल स वज्र न थिय ॥ अं वज्र स त्व १ स्व य न श द द य स म व
ह्रि क ४ नि हं श कृ कृ हं या या यदि वृ या दि म न र्य ॥ ॥ आ अ वज्र स त्व कृत्क ल यान



गलसुथमनं चाद विष्ठा रु. आउ रुमि स थ ख सु या रं झा सा. रु मि नू ग ल च ल हा सी यि
हा विष्ठा यी व. ग व न स थ ख झा य म इ ॥ ॥ थ न का ष या न मू रु सु रु थ क ॥ ०० द नैः

नानिंवा निसं स्यात्किं
कं ॥ १७ भा वसुक्त

कं॥ ॥ अमो वसुक्त
यया दं वा नडा न॥ शुक्लं
अमवजा मृक्त॥ ॥

यह कि कवा र्द्वैव ऊघा क्षिर्य दह न ब्रूयादि संकू नू क त्व या क र्त्तु न च त्व या ह स व स न
या मा क विष सा य निहान न क्ष काल कि या र्त्तु न च क प क न १ स्या क्त्वा ॥ अथ नि

मा द द न । स म य स न क षा सि द्वि ४ यि व व ज्ञा मृ का द
न न क यो अग्नि स्त्र न य ऋ त्क न या षा नि उ स द ह न
क न सा अ मृ क इ यू ड न का या अ सि द्वि द यू ड का द
यू ट द्वि च का । अ व ज्ञा मृ का द क ० ० ० ॥ ॥ अ य

॥७३॥

सिद्धा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

निर्मलं यत्पुनर्विजया हि कृत्वा कृत्वा न ध्यायथा यथा कृत्वा पुनर्विजया न। कृत्वा न ध्यायथा मया कृत्वा कृत्वा नम
दयक नमः। कृत्वा न ध्यायथा दाय विषय द ह नया व म ल्य यो य न न क सं का किं द अ नि कृत्वा
कृत्वा न ध्यायथा द क दान विविध ॥ ॥ थ न आ व द ह रा व ना ॥ कृत्वा न ध्यायथा कृत्वा न ध्यायथा कृत्वा न ध्यायथा
लं वा। कृत्वा न ध्यायथा स टि
सर्व क था ग मा ह्या धि कि
वैरु व ह्यु क्त व र्ण ल क ल
यं का न क च ल य मा का द या क ध चारु नी ला नि ल स ह्यु ल च र्ण न क आ ॥ कृत्वा न ध्यायथा
स ह्यु क्त कृत्वा न ध्यायथा कृत्वा न ध्यायथा कृत्वा न ध्यायथा कृत्वा न ध्यायथा कृत्वा न ध्यायथा कृत्वा न ध्यायथा

क

सुनरुं यथा ददु या न धसा दायुम सुला दीयि क नं प नि ह न नं का नू ह क्रि का हः
सू न लि न धा न ल म सु ल सु न नं मे १ का न धा क्रि य मा नं नि ष्यं मे १ का न न धि स मू रू १
या द ह्यु पि न प वि षे १ क
य न ॥ ॥ का न द्वा
य न न न न चाल य २ कू कू १
थ मि र्णा दि कू कू १ आ मे १
थ न नि ष्य रू म सु ल डा स म ख या दं म क क द्वा डा क न का य द्वा सु द्वा ड् हा कू डा च क थ नं ॥ १ ॥
कि यू रि व ध्य अ रि वा न सि दि सि य ॥ च व म रुं वृ द् य स व रु द कि ह क न ध गृ ही त्वा दी यं

कद नूद च नृ हि ष्या धि य किं ल ला ट न रं न रु द य स का ल अं द यं वि रा व ॥ ॥
 व ऊ स त्व स्त र्यं क ३ य च कू न द्या ट न क त्य न ४ ड द्या ट य कि स र्वी का व ऊ च कू न न रु जं ॥
 अं ह्रा न च कू रं अ ४ स्वा हा ॥
 र्य त्वा दे व ना ना स क थ
 यं चा प चा न य ऊ या दं
 णि न स्य षी ष वा य ष्यं य
 उ रु मा र्गं उ रु मा सि दि ४ म ध्य मां रा म ध्य मा सि दि ४ अ र्ध रा रा त्व ध मा सि दि ४ वि न्व स्या
 कि दू न चि ना त्स्मी य कि य सि दि ४ दे व ना ना लु स्त की यं स्त न का द्या दि विं क द का ह्य न र्वा ॥

शिक्षा

विलखास

द्वयाद्वयकथा न नयदि पृथं पक कि कदा यस्यास नपृथं क चूलं क सारुव कि ॥
समलं रुरुय विधिसिद्धि ४ पच नखा वहि ४ पा क पून ४ क्रि प द्वा न क यं या व क क वः
दि यो क क दु सिद्धि ४ वा
दि ४ म ह्यु लं वा स न दः
स प्र व ह नी य ४ सा न्ध य
श क सा म हा म डा सिद्धि
स श क सा उ ल म सिद्धि
स्व रु य न स श क सा गु गु प न रु न स श क डा म द व का या सिद्धि ॥ न म द व या अ न न स श क

श्रव रु न नखा स वा श्र व जा वलि वहि ह्य ने न सिः
हं य क ॥ म नु जा या दि रु वा का मा या य प्र सा वा न न
टं न गृ द ॥ ॥ का पा णी व रु द वी या णि न स स्तान
ला य डा मिखा स क रु स श क सा म नु सिद्धि ॥ वा हा न
रु कि स श क सा रु कि रु क सिद्धि ॥
न म द व या अ न न स श क

सा नीम द व का या सिद्धि ॥ प गु स्वस्तिक सं क र सा गु गु नि स क र सा द व या सिद्धि ॥ थं पि
न चा क ल खा स व जा व लि स का ला वे लि स थं पि न क र सा सिद्धि म द म लु ल स र य म द र सा
॥ म रु मा रु क स पा क स क दा व पि कि दा अ क्का य ॥ स्व पा ल क य का न ड थं पि न
क र सा प्र ध प क न म रु सं पि कि दा अ क्का य मा न ॥ ॥ थ न म लु ल या खं क न
॥ ॥ ॐ द न म लु ल य द्ध व ल न सा पि कि त्वं व व द्ध क ल जा का म द्रा
म रु न पि पि क र सा स म्प दा स र्व सि नां स म या अ रु वि षा सि व रु प सा य ल लि न
म रु धा ध नं क न ॥ ॥ थ पिं गु व रु द वी या गु म लु ल सा य या क य था अ द क र सा क
या अ स य मा न आ अ क्क पिं स क ल्यं व द्ध या गु क ल जा क र ल आ अ म द्रा म रु नं अ धि

सिद्धा

छानया दाउ. संपरिसक लं. सिद्धि या यगु वस्तु क. क ल्य पद ला सूअ. वऊअ प द्मअ. म ना
हर्षनमंग लया दं वा द थ थिगु म क आ ना व ना या डाः॥ ॥ थ न भि ष्य न धा य कं पाल
३॥ ॥ व ऊ म सु लं. महा म सु ल प्र वि षा हं. या ग म सु ल महा म सु ल द मि
का हं. गु ष म सु ल महा म
महा म सु ल स. जि पि द हा
स्य न. सा य धू न ॥ गु ष म सु
जि मि स मा हा ग्य न ना का ॥
विय म कु ॥ अं प्र कि गृ क ल. मि मं व त्स. महा व ल कि ॥ ॥ कि सो ला री ध क ॥
॥ व ऊ म सु ल. ॥ थ न भि ष्य न धा य कं पाल
महा म सु ल प्र वि षा हं. या ग म सु ल महा म सु ल द मि
सु ल दी कि का हं ॥ हा ४ हा ४ हा ४ ॥ मि ॥ व ऊ म सु ल
अ य धू ना ॥ क उ अं. या ग म सु ल. महा म सु ल ऊ य नि
ल या ग. क उ अं म हा म सु ल या गु दि का का य धू ना हा ३
॥ ॥ कि भि ष्य म सु ल प्र व ष वि वि ष ॥ ॥ थ न स्वा नः
॥ थ न लि गु नः

[illegible]

निष्पद्यन्निःसृक्तमरिषिचामानं नृपवजादिद्वीरिः ॥ निष्पद्यन्निःसृट्कसंकाहं निर्म
 लं ॥ ॥ कलहसि नृपकथं विषयं यन्मंगलसकलसत्त्वहृदि स्थितं सत्त्वोत्तमक
 म्पवनधर्मकलाधिपस्य ॥ निःहावदावजद्विकस्य मद्राखस्य कन्मज्ञलं रुवक्तुं
 यजसाक्षिषकं ॥ लश्रीध
 वृद्धाविवृद्धा मृजयपुन
 यवनस्तकम्यः ॥ रयाकसि
 नं लं रुवक्तुं ॥ निःहावदावजद्विकस्य मद्राखस्य कन्मज्ञलं रुवक्तुं
 यः ॥ निःहावदावजद्विकस्य मद्राखस्य कन्मज्ञलं रुवक्तुं

सिद्धा

थनलिषिययाधिनसयशराऊनधियकंनयवाच॥ ॥कमादेंऊदेंकाजाधिष्ठितैवऊं
कऊागाश्रायंसदहीऊनध्यानीकहानसत्वेकीरुमंदृष्टासयश्रुतत्यनिकनसकनगुः
हीकवाधिविरामृगनः
धनियनपंश्रुतिषकवि
सर्वकथागनाधियत्वेन
यामिसर्ववद्वानांश्रु
॥ १० ॥हृदिषापनिध्वश्रुतिषकवज्रवडध्वनडाधनाडाचागुःस्वर्गसध्यानाल्लोक
नैनमस्तानयादंकयागुःधधिश्रुतिषकऊनवियासमस्तकथागकयास्तकारुदनडत्यः

किं ऊर्लि अमः अरिषक काडा कृपनिस्तु ॥ ॐ किं उद कारिषक विधि ॥ ॥ थनलि सि
दू न कृ य उ पा य वा हा न स प्र हा सि न सं ॥ च कि आदि यं य म् डा न कि य क क र्थ य ना म ल वा
गा का पा गा च क म र व क र
म ह ल या ना पा रु म रु क
ध न आदि न हि य म ह ल
स कि पू जा द व पू जा क म न
ष क वि य द ष्टा स म य ल ही य ॥ थ न रु क रु का क म स श य पू जा या न क ॥ ॥ थ न थ ह्म क
या र व क न ॥ ॥ उ या ना क ल च क ना श नि ल व ना वि शू क ना रा स ना द र धा नि वि क या वि ला

सिद्धा ^{स का क} सूर्यमनुविधिं क वज्र ६

कमदितायीयुषधनायुगावृद्धहाननसाविलविकल्पास्यानदसदाहदागवागववि
वानक्षविनदितावानाहिकायागुवशा ॥ ७ ॥ वावजवानाहिकयुषागधिदुधहास्यवर्द्धनि
मोक्षचक्रयाकनपवक्षव
मध्यापागावसूहिकयार्कः ७
माउगावसूहिकानदयाक
दविष्ठाकवानाहिनक्राया
दिवर्षवृणापाकाकालनाकलासूकसवाक्ष्माकसूयापमा ॥ विद्यावृद्धकदम्बकदरुक्रियाच
क्रययोरुदनिस्तानयाललिगादगासूनेरुवावानाहिकाचक्रसि ॥ ॥ निर्मानचक्रनैनाः

धधदमशुव
वसुत ४

ससाग ४

ययमं ५ याक

विक्रयनं धनमा
रुनमपि धनं धनमा ३

दलपूर

भा हा हिय मजि ३

स्वान २ कवल

रि सूर्य मधुल वदं विष्णु कथार्थि मवज वा नाहि क का नादि वंज न आदि स्वन धय का वं अग्नी श्वं वं
चक्षु लि अग्नि थ हा संधा अमृ न स्वा गु न का संधि विष्णु क थ वज वा नाहि विधा य न या द न या स काः
थं वं का दि नू पा दि ला च ना दि
रुद रु व थ वज वा ना दि आ न
वा ना हि संधि प्र का ध या रं रु स
धा या अरु न व च न ला य म रं
ही का ना ना रु रं धू न्यं ॥ ही धा या या क न र्थ मा च क म जि व आ का ध स नू य ॥ वा ना ही ध रु की र्ति ना
॥ थ व वा ना हि संधि ला या ॥ ० ॥ थ न स म य ऊ ल च ना दि ॥ क मा य न वि स र्जन स्वा न म द्रा क र्ण प

मा ग द व मा रु ३

सिका

नाका थअ २ वलिसक संक्षय पं वधा ना हाय कप नि रुक रु स्वात का का यम रुडा ॥
थनलि मां सा रु कि सि ला रु कि य रु विधि थं था क ल प गु नू म गु ल आदि समय द गु लि रु क ष य
जा अग्नि स्तु पं मा म कि द
कालि रु व जो न व ॥ द ष व लि
॥ गी रु ॥ का ला यि ॥ थ रु धू
च सा लि न रु ॥ गु नू न रु ॥
नि रु य द दू ला लि मा वि ष रु वि ष रु नी म हा स रु व वि न च य रु ली नं स वी षो द य अ रु जा गु
मा यि नि रु कि य द प्रा फा यी ध रु रु या ना रा डा ग ड रु यं रु यं च स रु जा न दा व दा स रु ॥

थनदक्षयकृतयक॥यनिक्रमंसाजिग्रायक॥ ॥थनकोमाजीपूजा॥विष्वाधिवसनमस्तुः
लथिलंकरनस्तु॥गवयग्वलदस्यैयुक्तयैर्हृदकि॥क्षामवक्राःआक्षिप्विसर्जनसंगतयद
कृष्णपूजावादांसिसलाकू
दगुसमचकायकूमालिसि
सर्जनसहानयैयधानाहा
थनगुननृयकास्यंगकन
जगत्समनानथयदैसर्वतनानादिनाकृत्वासर्वविकल्पभादुकननंताकिनीहृन्कानादि
नायश्चक्रंयनिवरुंकिनगुह्यहानेद्वयभाककयस्याकस्यकृपागुजस्यमनसानृयंप्रक्षी

सिद्धा

सयसय॥ ॥ थन आसन सचासं खालं वलिविय थन थडा क न्या हा या हा अ विसर्ज न्म दाः
का भाय॥ गी क॥ ॥ खान वलिस कसं खी खाय क लक्ष्म य॥ ॥ थन गुन सय भर्म यनी
सन गुन या क धलिस द्यं स्व
॥ धू मा ग वि सुख गु द्य दान
फ ४॥ ॥ ० ॥
न स द्यं विय॥ द हा य रु क य क॥ थन गु ल च क॥ गी क मान
गा था॥ ॥ ॥ कि सिं वू ना रि थ क स र्वा दि का न वि धि स मा